ओ३म

महर्षि विश्वमित्र का धर्नुयाग

ईश्वर की सृष्टि के अद्भुत व्याख्याता पूज्यपाद गुरूदेव श्रृंगी मुनि कृष्णदत जी महाराज द्वारा विशेष योग समाधि मे,देवयान की आत्माओ को सम्बोधित प्रवचनो का संकलन

प्रकाशक :

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)

अन्तरजाल सम्पादक : श्री सुकेश त्यागी – अवैतनिक

अन्तरजाल विशेष सहयोग : डा0सतीश शर्मा (अमेरिका) – अवैतनिक

अन्तरजाल पुस्तक संस्करण : प्रथम प्रेषण

सृष्टि सम्वत् : 1,96,08,53,111

विक्रम सम्वत् : कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्टमी,2067

गुरुदेव का जीवन

14 सितम्बर 1942,उतर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के ,ग्राम खुर्रमपुर सलेमाबाद मे एक बालक का जन्म हुआ ।

बालक जन्म से ही एक विलक्षण से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी वह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा मे, कुछ अन्तराल लेटजाता या लिटा दिया जाता तो उसकी गर्दन दायें बायें हिलने लगती , कुछ मन्त्रोच्चारण और उसके बाद पुरातन संस्कृति पर आधारित 45 मिनट के लगभग एक दिव्य प्रवचन होता । बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ मे आवाज अस्पष्ट होती और जैसे आयु बढने लगी वेसे ही आवाज और विषय दानो स्पष्ट होने लगे । पर एक अपठित बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विशय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था । प्रवचन सुनकर जनमानस आश्चर्य करने लगा , इस बालक की एंसी दिव्य अवस्था और प्रवचनो की गूढता के विषय मे कोई भी कुछ कहने की स्थिति मे नही था ।

इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनो से ही हुआ । कि यह सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालो मे श्रृंगी ऋषि की उपाधि से विभूशित और सतयुग के काल मे आदि ब्रह्म के शाप के कारण इस युग मे जन्म का कारण बनी । गुरुदेव इस जन्म मे भले ही अपठित रहे,लेकिन शवासन की मुद्रा मे आते ही इनका पूर्वजन्मित ज्ञान,उदबुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष–स्थ आत्माओ का दिव्य उद्बोधन ,प्रवचन करते और शरीर की स्थिति यहॉ होने के कारण हम सबको भी इनकी दिव्य वाणी सुनाई देती । इन पंवचनो मे ईश्वरीय की सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है , ब्रह्माण्ड की विशालता , सृष्टि का उद्देष्य,विभिन्न कालो का आंखो देखा वर्णन भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का दर्शन क्या कुछ दिव्य न हीं है इन प्रवचनो मे ये किसी भी मनुष्य का,समाज का और राष्ट्र का मार्ग दर्शन करने का सामर्थ्य रखते है ।

20 वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्य और मार्गदर्शन करते रहे ।

दिल्ली के कुछ प्रबुद्ध महानुभवो ने प्रवचनो की इस निधि को शब्द ध्वनि लेखन उपकरण के द्वारा संग्रहित करके ,पुस्तक रूप मे प्रकाशित करने का निश्चय किया, जिसके लिए वैदिक अनुसन्धान समिति नामक संस्था का गठन किया । जिसके अर्न्तगत सन् 1962 से प्रवचनो को संग्रहति और प्रकाशन प्रारम्भ हुआ । इस दिव्यात्मा ने पूर्व निर्धारित 50 वर्ष के जीवन को भोगकर सन् 1992 मे महाप्रयाण किया ।

इस अन्तराल इनके 1500 प्रवचन, शब्द ध्वनि लेखित यन्त्र के द्वारा ग्रहण किये गये । जिनको धीरे–धीरे प्रकाशित किया जा रहा है।वैदिक जीवन और वैदिक संस्कृति का जो स्वरूप इनमे समाया हुआ है । उसके सम्वर्धन , संरक्षण और प्रसारण के लिए हर वैदिक धर्मी के सहयोग की अपेक्षा है । जिससे वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति से निहित यह महान ज्ञान जनमानस मे प्रसारित हो सके।

वैदिक अनुसन्धान समिति (रजि.)

क्र.सं.	प्रवचन शीर्षक	पृष्ठ संख्या

❖ महर्षि विश्वमित्र का धनुर्याग के तीन प्रवचन अथवा अध्याय उपलब्ध नही है । उनका कार्य प्रगति पर है । दूसरे प्रषेण मे उपलब्ध होंगे।

प्रथम अध्याय–ब्रह्माण्ड का प्रतिष्ठावाद
द्वितीय अध्याय–महर्षि वाजश्रवा का सर्ववेदस याग
तृतीय अध्याया–ब्रह्माण्ड की चर्चा

१ मृत्यु का स्वरूप–दिनांक–08–01–1988

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये है और जितना भी ये जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात् आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात् आ रहा है। जब हम किसी भी वेद मन्त्र के ऊपर प्रायः अन्वेषण करना प्रारम्भ करते है अथवा उसके ऊपर अनुसंधान, चिन्तन और मनन करने लगते है। मानो एक–एक वेद मन्त्र में उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान उसमें निहित रहता है।

अनन्तमयी परमात्मा

तो इसीलिए हमारा वेद का मन्त्रः प्रायः ये कहता रहता है कि उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनन्तता के ऊपर हम सदैव अपना विचार विनिमय में करते चले जाएँ। क्योंकि वे अनन्तमयी माने गये है। और वह मानो इस संसार के एक–एक कण–कण में ओत–प्रोत है। हमारा वेद का मन्त्रः मानो उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का वर्णन करता रहता है। क्योंकि वे परमपिता अनन्तः मानो विचित्रतम् कहलाते है। और उसका ज्ञान और विज्ञान भी मानो अनन्तमयी माना गया है।

आओ, मुनिवरो! देखो, आज हम जिन वेद मन्त्रों के ऊपर अपना विचार मनन और चिन्तन कर रहे थे। आज का हमारा वेद मन्त्र ये कह रहा था, कि इस संसार में भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का प्रायः वर्णन होता रहता है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक नाना ऋषि इस प्रकार के हुए, जिन्होंने वैदिक साहित्य के ऊपर अपना विचार विनिमय किया है और एक एक वेद मन्त्र के ऊपर ही नहीं भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों में परिणत रहे है जिनमें वेदों की प्रतिभा अथवा महानता का प्रायः वर्णन होता रहा है।

संसार रूपी यज्ञशाला

तो आज का हमारा वेद मन्त्रः नाना प्रकार के यागों के ऊपर, प्रायः अपना विचार विनिमय कर रहा था और वेद मन्त्र ये कह रहा है 'यागां भवितां ब्रह्मणे ब्रह्मे वृत्तं देवाः'' मानो देखो, परमपिता परमात्मा का जो ये ब्रह्माण्ड है ये एक प्रकार की यज्ञशाला के रुप में वर्णित किया गया है। मानो देखो, वह परमपिता परमात्मा इस संसार रुपी यज्ञशाला में निहित रहते है। और मानो देखो, उसी में वे रत रह करके इस ब्रह्माण्ड को क्रियाशील बना रहे है, क्रियात्मक बना रहे है जिससे ये अपने में क्रियाशील रहता है। जिस भी किसी लोक–लोकान्तरों में भ्रमण करने लगो मानो जिस परमाणु के ऊपर अनुसंधान प्रारम्भ किया जाए उसमें नाना प्रकार की गतियाँ दृष्टिपात् आती है। मानो एक विचित्र चित्रण प्रायः दृष्टिपात् आता रहता है।

मृत्युंजयी

तो हमें मानो उस परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञानमयी ये जो ब्रह्माण्ड है इसके ऊपर प्रायः हम अपने में अन्वेषण और अनुसंधान करते रहे। और विचारते रहें कि हम परमपिता परमात्मा और आनन्दमयी ये दोनों प्रकार का जो जगत् है इसमें आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों के ऊपर ऋषि, मुनि प्रायः टिप्पणियाँ करते रहते है, चिन्तन और मनन करते रहते है। क्योंकि नाना प्रकार के विचार विनिमय देने का अभिप्राय एक यही होता है कि हम अपने में मृत्युंजयी बन जाये। प्रत्येक मानव की आकांक्षा रहती है कि मैं मृत्यु को प्राप्त न होऊँ। मानो मैं मृत्युंजयी बन जाऊँ। संसार में आज तक जितना भी क्रियाकलाप होता रहा है। चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान है, चाहे मानो देखो, भिन्न–भिन्न प्रकार के अनुष्ठान है याग इत्यादि और साधना नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान प्रायः मानवीय मस्तिष्कों में निहित रहा है। भिन्न–भिन्न प्रकार की विद्यायें रही है। प्राण के ऊपर बड़ा आधिपत्य रहा है प्राणी का। बेटा! कहीं प्राण चिकित्सा हमारे यहाँ मानी गयी है, कहीं मानो देखो, प्राण से अपने जीवन का आत्मोन्न्तः मानो आत्मा का उत्थान करने का प्रयास होता रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, आत्मतत्व को जानने के लिए प्रायः मानो परम्परागतों से अपनी उड़ानें उड़ता रहा है और विचारता रहा है क्या मैं भिन्न–भिन्न प्रकार की विद्या का प्रायः अध्ययन करने वाला बनूँ। तो मेरे प्यारे! यह ऐसा क्यों? क्योंकि राजा के हृदय में भी यही आकांक्षा होती है कि मेरा राष्ट्र ऊँचा बन जाये। मेरे राष्ट्र में पवित्रता आ जाये। मानो देखो, मेरे राष्ट्र और प्रजा का जो क्रियाकलाप है वह प्रायः बड़ा विचित्र बना रहे। तो मेरे प्यारे! भिन्न–भिन्न प्रकार की विवेचनायें मानवीय मस्तिष्कों में प्रायः ऐसा उद्गार आता रहा है और उसके मध्यम में एक ही वाक् हमें दृष्टिपात् आता है कि संसार में प्रत्येक मानव मृत्युंजयी बनना चाहता है। मेरे प्यारे! राजा भी यही चाहता है कि मेरी प्रजा और मैं मानो मृत्युंजयी बन जाये अर्थात् मृत्यु न आ जायें।

मृत्यु

तो यहाँ बेटा! मृत्यु के भिन्न–भिन्न प्रकार के स्वरुप माने है वास्तव में आचार्यों ने जब इसके ऊपर अनुसंधान किया। तो मुनिवरो! देखो, नाना ऋषि मुनियों का एक समाज प्रायः एकत्रित होता रहा है और ये विचारा गया है कि शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु है या नहीं? तो देखो, इसके ऊपर ऋषि, मुनि बड़ा अनुसंधान करते रहे है।

मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में महाराजा अश्वपति के यहाँ विद्यालय में नाना ऋषि मुनि और देखो, ब्रह्मचारियों में गोष्ठियाँ अथवा उनका विचार विनिमय होता रहा है और ये विचारने के लिए वेदमन्त्र मानो साक्षी बन जाते है। क्या ये शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु है या मृत्यु कोई ओर वस्तु है? तो मुनिवरो! ऋषि मुनियों ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा।

तो मुनिवरो! वैशम्पायन ऋषि महाराज का तो ये मनोनीत विचार रहा है क्या ये मृत्यु केवल अव्रतम् शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं है। जो मानव अपने में अन्तरात्मा को उन्नत नहीं कर रहा है, आत्मा का उत्थान न करने वाला है। मानो वह सदैव इस संसार के अज्ञान में, अन्धकार में रत रहता है। वह मृत्यु को प्राप्त होता रहा है। परन्तु देखो, जहाँ नाना प्रकार के अनुष्ठानों का सम्बन्ध है वहाँ विचार आता रहता है कि ये सब मृत्युंजयी बनने के लिए क्रियाकलाप है। इसीलिए क्योंकि इनसे ज्ञान होता है, इनसे विवेक उत्पन्न हो जाता है। और वही विवेकमयी जो मानव का मानवीय जीवन है वह ज्ञान और विज्ञान की तरंगों में तरंगित रहने वाला ज्ञान और विज्ञान है वही मेरे प्यारे! देखो, हमें मृत्यु से पार ले जाता है। वह मृत्यु, अन्धकार में ले जाने वाला नहीं है।

प्रकाशमयी जीवन

तो इसीलिए प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक ज्ञान के ऊपर अन्वेषण करता रहा है। मानो देखो, वह अपने में यह चाहता है कि मैं ज्ञान और विज्ञान में रत हो जाऊँ। मेरे प्यारे! देखो, एक–एक अणु और परमाणु में वह ब्रह्माण्ड का दर्शन करने वाला बन जाता है। जब वह मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड में एक–एक अग्रतों में रत होने वाला जगत् जब दृष्टिपात् आता है तो मेरे प्यारे! एक अनुपमता दृष्टिपात् आने लगती है। एक प्रकाशमयी जीवन बन जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ हमारे यहाँ नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहा है क्योंकि उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि इस प्रकार के रहे। परन्तु जहाँ मैं ऋषि वैशम्पायन की चर्चायें और भी नाना ऋषि मुनियों की विवेचनायें प्रगट करते रहते है। तो मुनिवरो! देखो, यहाँ वैशम्पयान का विचार तो केवल इतना ही है कि हम मृत्युंजयी बनने के लिए सदैव अपने में महान वृत्तियों में रत होते रहे और प्रकाश को लाना और अन्धकार को त्यागना।

तो मेरे प्यारे! देखो, इतने में महर्षि अर्धभाग ने ये कहा कि जो नाना प्रकार की साधना करता रहता है और उसके हृदय में मानो ये रहता है कि मेरा शरीर और आत्मा दोनों मृत्युंजयी बन जायें। तो विचार आया कि वैदिक साहित्य में शरीर को मृत्युंजयी कहना भी कहीं तक मानो देखो, यथार्थता में

आता है। क्योंकि शरीर में जितने अव्यय रहते है अथवा जितनी भी ज्ञानेन्द्रियाँ अथवा कर्मेन्द्रियाँ है इनके जो विषय है मानो जब ये ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाते है तो शरीर का भान नहीं रहता। परन्तु वे अपने आत्मचेतना में ज्ञान और साधना में रत रहते हैं। 'शरीराणां ब्रह्मे' तो शरीर का समन्वय इतना नहीं रहता। परन्तु शरीर से ये सदैव अपने में अभ्युदय होता रहता है।

शरीर से आत्मोन्नति

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि अर्धभाग का यह मन्तव्य रहा कि शरीर में रहकर के हम आत्मोन्नति और साधना में रत रहते है। इसलिये शरीर को अज्ञान, अन्धकार से मुक्त करना चाहिये और प्रकाश में रत होना चाहिये। तो मेरे प्यारे! उस समय यह शरीर आत्मोन्नत होता है जब इसका भान न रहे अथवा देखो, मनस्तव और प्राणस्तव दोनों को एक सूत्र में ले आना। तो मुनिवरो! देखो, शरीर स्वतः अपने में देखो, शून्य बिन्दु को प्राप्त हो जाता है।

तो बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ आज मैं तुम्हें यह उच्चारण करने चला हूँ कि ऋषि मुनियों का विचार ये रहा है कि शरीर को त्यागना, शरीर से देखो, ज्ञान और विज्ञान का जो समन्वय है वह आत्मा से है और आत्मा का शरीर से है। परन्तु देखो, दोनों एक दूसरे के पूरक कहलाते है। तो इसीलिए हमारे यहाँ एक दूसरे में पूरकता आ जाती है तो वह 'समन्वयं ब्रहे' ये वाक् समाप्त हो जाता है। कि शरीर एक अज्ञानमय वृत्तियों में रत रहने वाला है। प्रायः ऐसा नहीं है परन्तु देखो, आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना न देता हुआ।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें एक वेद मन्त्र, जो ऋषि मुनियों की सभाओं में प्रायः उद्गीत रुपों में गाया जाता है और उसे वर्णन किया जाता है कि हम प्रायः 'ब्रह्मणं ब्रह्मे लोकां वाचन्नमं ब्रह्मे कृत लोकाः' मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों की सभाये एकत्रित होकर के अपना–अपना विचार व्यक्त करना ही मानो देखो, मानवीयतव माना गया है।

महर्षि रेवक के यहाँ जिज्ञासु ऋषियों का आगमन

आओ, मेरे प्यारे! मैंने इससे पूर्व काल में भी ये वाक् प्रकट किया है। आज भी मैं इस वाक् की पुनरावृत्तियाँ करने जा रहा हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, हमारे यहाँ महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज बड़े महान् तपस्वी थे। मुझे उनके जीवन का काल जब स्मरण आता है क्या बेटा! उन्होंने एक सौ पाँच वर्षों तक गाड़ी के नीचे प्रायः तपस्या करते रहे। वे आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान में सदैव रत रहते थे। तो बेटा! एक समय ऋषि मुनियों का एक समूह मानो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के द्वार पर आया जिसमें बेटा! देखो, चाक्राणी गार्गी, महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु, महर्षि विभाण्डक, महर्षि वैशम्पायन और महर्षि सोमकेतु ऋषि महाराज। तो मेरे पुत्रो! ये नाना ऋषिवर भ्रमण करते हुए गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के द्वार पर पहुँचे।

मृत्युंजयी किसे कहते हैं?

तो मुनिवरो! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ऋषि मुनियों को दृष्टिपात् करके अपने में हर्षध्वनि करने लगे और ऋषि ने कहा–ये मेरा कैसा अहोभाग्य है, जो आज नाना रुपों में देखो ब्रह्मचारी, ब्रह्मवर्चोसि और ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन हो रहा है। ये मेरा बड़ा सौभाग्य है। तो मुनिवरो! देखो, सब ऋषि मुनियों को उन्होंने स्थान दिया और कुछ कन्दमूल इत्यादियों का अतिथि रुप में पान कराया। ऋषि बड़े प्रसन्न हुए।

मेरे प्यारे! देखो, जब वे सब अपने–अपने आसनों पर विद्यमान हो गये तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा – हे ब्रह्मवेत्ताओं! ये मेरा आसन तुमने कैसे पवित्र किया? ये मेरा कैसा सौभाग्य जागरुक हो गया है। उस समय मुनिवरो! देखो, जब ऋषि ने ये कहा तो महर्षि प्रवाहण और शिलक दोनों उपस्थिति हुए और अपने आसन पर उपस्थित होकर बोले कि प्रभु! हम इसलिए आये है क्या हम सब ऋषि अपनी–अपनी कृतियों को लेकर एक आसन पर विद्यमान थे और सबसे प्रथम ये प्रश्न आया वेद मन्त्रों में, जब न्यौदा में से मन्त्र उच्चारण कर रहे थे, तो ये शब्द आया क्या मानो संसार में मृत्युंजयी किसे कहते है? ये प्रकाश मानो देखो, क्या है? जिस प्रकाश के लिए मानव सदैव लालायित रहता है। और वह अन्धकार क्या है? जिस अन्धकार से मानव दूरी चाहता है अपने को।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से जब ये प्रश्न किया गया। महर्षि प्रवाहण और शिलक दोनों ये प्रश्न करके बेटा! अपने आसन पर विद्यमान हो गये। गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने कहा कि तुम क्या जानना चाहते हो, यह मेरे हृदय में अब तक नहीं आ पाया है? तुम्हारा प्रश्न मुझे कुछ शास्त्रीय प्रतीत नहीं हो रहा है। तुमने जो प्रश्न किया है मानो देखो, यह प्रश्न तो तर्क संगत नहीं है यह हमारे यहाँ उग्रूत माना गया है। मेरे पुत्रो! देखो, वे महर्षि पुनः उपस्थित हुए और गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से नमः करते हुए बोले प्रभु! हम अपने आसनों पर विद्यमान थे और मृत्यु के ऊपर, प्रकाश और अन्धकार के ऊपर मानो विचार विनिमय हो रहा था। हम ये जानना चाहते है कि यह अन्धकार और प्रकाश क्या है?

अन्धकार और प्रकाश का अभिप्राय

तो मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने उत्तर में ये कहा कि जितना मैं जानता हूँ उतना उसका यथोचित उत्तर दे सकूँगा। यदि मैं नहीं जानता हूँ तो तुम्हें नमः कह करके, नमस्कार करके अपने आसन पर स्थिर हो जाऊँगा। मेरे प्यारे! देखो, ऋषियों का हृदय प्रायः उदार होता है, ऋषियों के हृदय में निरभिमानता होती है क्योंकि वे परमात्मा की उपासना करने वाले होते है। क्योंकि परमात्मा निरभिमान में है परमात्मा देखो, अन्धकार में नहीं प्रकाश में है। मानो देखो, वह शून्य में नहीं, क्रियाओं में रहने वाले है। वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी मानो देखो, हमारे हृदयों की गुथियों का स्पष्टीकरण करने वाले है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने नम्रता से ये कहा कि मेरे विचार में तो ये आता है जिस प्रकाश के लिए तुम सदैव तत्पर हो और जिस अन्धकार को तुम अपने से दूरी करना चाहते हो, प्रकाश को लाना चाहते हो। तो इस सम्बन्ध में मैंने तो बहुत से वक्तव्य दिये है। आज भी मैं उन वक्तव्यों को देने वाला हूँ। क्या मानो देखो, ये जो प्रकाश है, ये सर्वत्र प्रकाश जो हमें दृष्टिपात् आता है इस प्रकाश का मूलक मानो देखो, ये सूर्य प्रातःकालीन जब उदय होता है तो ये प्रकाश लेकर के आता है और ये प्रकाश का द्योतक कहलाया गया है। ये प्रकाश देने वाला है। मानो देखो, प्रातःकालीन प्राचीदिक् में जब उदय होता है तो अन्धकार को निगलता चला जाता है। अन्धकार को अपने में धारण करने लगता है। तो इसीलिये ये सूर्य प्रकाश का द्योतक है, प्रकाश का देने वाला है। नाना प्रकार की वनस्पतियाँ मानो इसी के संरक्षण में तपा करती है और इसी से ऊर्ज्वा लेकर के ये तेजोमयी बन जाती है। नाना प्रकार की औषोधियों के अपने गुण अपनी क्रिया अग्रित भिन्न–भिन्न कहलाती है।

राष्ट्रीयता का जन्म

तो मानो देखो, जब ये सूर्य उदय होता है तो ये प्रकाश देता है। और ये प्रकाश ऊर्ज्वा के सहित देता है। मानो देखो, प्रत्येक वनस्पतियाँ अपने में प्रकाश को पान करती हुई अपने में ओजों तेज से तेजोमयी बनती चली जाती है। और मानो सूर्य का प्रकाश, जब प्रकाश ऊर्ज्वा के सहित आता है तो पृथ्वी के गर्भ में जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पनप रहा है उसी के गर्भ में केवल सूर्य कहलाता है। जो नाना रूपों में रत रहने वाला है। देखो, सूर्य पृथ्वी को भिन्न रुपों से इसको तपाता रहता है। कहीं स्वर्ण, यलस्तम् मानो देखो, नाना प्रकार के खनिजों को उत्पन्न करता रहता है और नाना खादयानों को प्रदान करता रहता है। जिससे मानव का जीवन मानो उज्ज्वलता को प्राप्त होता है नाना प्रकार की धातु पिपाद को जानता हुआ मानो देखो, राष्ट्रीयता की एक तन्त्रमयी धारा एक बन जाती है। जिस धारा को जानकर के देखो, मानव इस द्रव्य का सुग्रूत रूप धारण करके ही मानो राष्ट्रीयता का जन्म होता है।

प्रकाश का द्योतक सूर्य

तो इसलिए मेरे विचार में तो ये आता है क्या ये सूर्य ही प्रकाश का द्योतक है ये प्रकाश मानो देखो, नाना पशुओं के गर्भ में, माता के गर्भ स्थल में जब शिशु विद्यमान होता है तो ये सूर्य ही तो प्रकाश को देने वाला है। ये सूर्य ही तो मानो चन्द्रमा को अपनी निधि त्याग करके अमृत भी देने वाला है। मानो देखो, वही निधि जब मानो देखो, आपोमयी ज्योति में प्रवेश हो जाती है, तो वही आपोमयी ज्योति मानो, प्रकाश का द्योतक बन जाता है। आसन और ओढ़न बनकर के ये प्रकाशमयी बन जाता है। अपने में अमृत का सिंचन करने लगता है। तो मानो देखो, ये सूर्य ही हमारे प्रकाश का द्योतक है। ये प्रकाश को देने वाला है।

'गौ' पशु का महत्व

मानो देखो, गौ नाम का पशु है उस पशु के रीढ़ के भाग में मानो अपनी स्वर्णमयी कान्ति का प्रसार करता है। और वह जब प्रसार करता है तो मानो देखो, उसके शरीर में जो नाना प्रकार के यन्त्रालय विद्यमान होते है उन यन्त्रालयों में स्वर्ण के परमाणु आदान–प्रदान होते रहते है। मानो देखो, गौ–घृत में, गौ–दुग्ध में जो पीत वर्ण होता है। मानो देखो, इसीलिए वह अग्नि में प्रणावृत्ति कहलाता है। तो मानो देखो, अमृतमय कहलाता है। इसीलिए यह सूर्य प्रकाश का द्योतक है। नाना प्रकार की कान्तियों के द्वारा, इस ब्रह्माण्ड को विज्ञान के वार्चैमय में तपाता रहता है। वैज्ञानिकों का ये कथन है यह सूर्य मानो ऐसी उर्ज्वा देता है इसकी उर्ज्वा मानो देखो, शनिमण्डल तक भ्रमण करती है। शनिमण्डल तक ऊर्ज्वा को प्राप्त होती रहती है और ध्रुवमण्डल में इसकी प्रतिभाषिता दृष्टिपात् की गई है। तो ऐसा बेटा! ऋषि मुनियों का प्रायः मन्तव्य रहा है ये सूर्य प्रकाश का द्योतक है। ये अमृत को देने वाला है। अन्धकार में न ले जाकर के प्रकाश में ले जाता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, वर्णन शैली बड़ी विचित्र ऋषि की रही। ऋषि ने एक वाक् और कहा कि यह नाना प्रकार की जो वनस्पतियाँ है, इनका परिपक्व होना, उग्र रुप लाना ये सब सूर्य की ऊर्ज्वा और उसमें जो भिन्न–भिन्न प्रकार की सत्ता विद्यमान होती है। तो मानो देखो, सूर्य को हमारे यहाँ अदिति रुप कहा गया है। मेरे पुत्रो! देखो, अदिति कहा जाता है।

अतिवृष्टि का अलंकार

एक समय बेटा एक आलंकारिक वाक् प्रगट किया गया। आचार्य सुत्रे ने मानो देखो, एक अलंकार देते हुए सूर्य के सन्दर्भ में कहा है कि मुनिवरो! देखो, एक समय अतिवृष्टि हो गई और एक समय अनावृष्टि हो गई। मानो देखो, अतिवृष्टि और अनावृष्टि समाज के लिए दोनों ही मानो हानिप्रद कहलाती। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऐसा कहा जाता है कि जब अतिवृष्टि हो गई, सर्वत्र विनाश को प्राप्त हो गया, जब ये अन्न नहीं रहा तो मुनिवरो! देखो, समाज अन्धकार में चला गया। देखो, अन्न से शून्य हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो, प्रजाओं का एक समाज एकत्रित हुआ और वह समाज मानो ये विचारने लगा कि अतिवृष्टि क्यों हुई है? इसके मूल में क्या है? मानो कोई न कोई तो हमारा कर्म इसके मूल में होगा। तो मुनिवरो! देखो, प्रजाओं ने अपना एक समाज एकत्रित करके और ये विचारा कि चलो, आज प्रजापति के द्वार पर चलते है।

मानो देखो, वे वहाँ से भ्रमण करते हुए सब प्रजा मुनिवरो! देखो, प्रजापति के द्वार पर पहुँची। प्रजापति ने कहा – हे प्रजाओं! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा हे प्रभु! अतिवृष्टि हो गई है। ये हमारा समाज विनाश को प्राप्त हो गया है। अन्न इत्यादि नहीं रहा है। मानो देखो, अन्धकार में चले गये है।

तो मुनिवरो! देखो, प्रजापति ने कहा हे प्रजाओं! ये वृष्टि कहाँ से हुई है? उन्होंने कहा कि ये वृष्टि मानो मेघ मण्डलों से हुई है। मेघ मण्डलों ने ये वृष्टि की है। तो प्रजापति ने बेटा! देखो, मेघ को एकत्रित किया और मेघों को निमन्त्रण देकर के कहा – हे मेघां ब्रह्मे! तुमने ये वृष्टि क्यों की है? वत्रासुर से कहा कि तुमने ये वृष्टि क्यों कराई? बिना समय के इतनी वृष्टि क्यों की है? मुनिवरो! देखो, उन्होंने कहा – हे भगवन! इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। हमसे तो मानो देखो, आदित्य ने कहा था।

अब मुनिवरो! देखो, आदित्य को निमन्त्रण दिया। आदित्य नाम सूर्य को कहा गया है जो बेटा! हम उच्चारण कर रहे थे। आदित्य को निमन्त्रण देकर के प्रजापति ने कहा – हे आदित्य, हे सूर्य, हे प्रकाश के द्योतक! हम ये जानना चाहते है कि ये बिना समय के ये अतिवृष्टि क्यों हुई है? तुम्हारी किरणों के द्वारा, वही तुम्हारी किरणें मानो देखो, वत्रासुर में जाकर उनका मिलान हुआ है। तो प्रभु! आपने ये बिना समय के वृष्टि क्यों कराई?

मुनिवरो! देखो, सूर्य ने कहा आदित्य रूप ने कहा कि प्रभु! इसमें मेरा तो कोई दोष नहीं है। मेरे से तो मानो देखो, ये जो ''प्रकाशं ब्रह्मे'' मेरा जो तेज है वह उसमें पहुँचा है। 'आदित्यां ब्रह्मे' आदित्य ने कहा 'सूर्याणि वृद्धे' मानो देखो, उन्होंने कहा कि शचि मेरे द्वार पहुँचे। .... मानो देखो, उन्होंने शचि से कहा – हे शचि! ये तुमने बिना समय के मानो सूर्य से इस प्रकार का तेजोमयी तेज क्यों लिया, अतिवृष्टि क्यों हुई? उन्होंने कहा – हे प्रभु! इसमें मेरा तो कोई दोष नहीं है। मेरे से तो इन्द्रदेव ने कहा था।

अब प्रजापति ने बेटा! इन्द्रदेव को निमन्त्रित किया। और महाराजा इन्द्र से कहा – हे इन्द्र! ये तुमने बिना समय के वृष्टि क्यों कराई? और क्यों शचियों से ये कहा। तो उन्होंने कहा – हे प्रभु! इसमें तो मेरा कोई दोष नहीं है। मेरे से तो मानो देखो, इस पृथ्वी ने कहा था।

अब मुनिवरो! देखो, पृथ्वी से प्रजापति ने कहा – हे पृथ्वी दिव्यासे! ये तुमने बिना समय के ऐसी इच्छा क्यों की? उन्होंने कहा 'क्रणं ब्रह्मे कृत्तम्' हे पृथ्वी! तुमने बिना समय के यह वृष्टि क्यों कराई है? ''प्रजापति ब्रह्मणे'' मानो देखो, पृथ्वी ने कहा – इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। मेरे से तो मानो ''अव्रतं प्रजां ब्रह्मणे वराताः'' ये जो प्रजा है जब मेरे ऊपर पापाचार करती है, पाप कर्म करती है। तो मानो देखो, मैं पापों में सन जाती हूँ। जब 'अतिपापं ब्रहे' जब मैं उसमें लब्ध–लब्ध हो जाती हूँ, तो मेरी इच्छा स्नान करने की होती है। तो मैंने स्नान करने के लिए आदित्य से कहा, आदित्य ने मेघा से कहा, मेघा ने शचि से कहा। मानो आदित्य नाम सूर्य का है। मेघ नाम मेघ मण्डलों का है मानो देखो, शचि नाम विद्युत का और इन्द्र नाम वायु का है। हे प्रभु! मेरा एक तारतम्य बन जाता है, ये मेरे सहायक बन जाते है। ये मेघों से वृष्टि हो जाती है। और मैं उस जल में, आपोमयी में स्नान कर लेती हूं और ये प्रजा जो पापाचार करती है अपने पाप और पुण्य कर्मों का पफल भोग लेती है।

तो मेरे प्यारे! मानो देखो, जब ये वाक् उन्होंने उच्चारण किया ''ब्रह्मणं ब्रहे'' ये तो बेटा! एक आलंकारिक वाक्य है। वेद का वाक् कहता है 'इन्द्रो श्चप्रवाह कृतं लोकां आदित्यां ब्रह्मे' तो मुनिवरो! देखो, वेद का वाक् कहता है कि आदित्य प्रकाश का द्योतक है। गाड़ीवान रेवक मुनि ने कहा कि ये प्रकाश को देने वाला है। मानो देखो, कहाँ–कहाँ तक इसका तारतम्य बना रहता है। आदित्य को मानो देखो, मेरे प्यारे! विचार क्या मानो देखो, ये सूर्य प्रकाश में पहुँचाने वाला है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इन वाक्यों को उद्‌गीत रुप में गाया, तो मुनिवरो! महर्षि वैशम्पायन बोले कि हे प्रभु! ये जो आप वाक् उच्चारण कर रहे है यह तो हम न्यौदा में अध्ययन करते रहे हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे इन वाक्यों का वर्णन कराते रहे हैं। मातायें जब मानो देखो, शिक्षायें देना प्रारम्भ करती है तो माता इस प्रकार की शिक्षायें प्रायः हमें देती रही है। हम ये जानना चाहते है जब मानो देखो, ये सूर्य का प्रकाश शान्तता को प्राप्त हो जाता है। तो प्रकाश का द्योतक कौन है? कौन प्रकाश को देने वाला है?

प्रकाशक चन्द्रमा

तो उस समय बेटा! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज बोले कि मेरा अध्ययन ये रहा है कि जब सूर्य प्रकाश देना समाप्त कर देता है तो उस समय ये चन्द्रमा प्रकाश देने लगता है। चन्द्रमा अमृतमयी बनकर के ये प्रकाश का द्योतक है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि विवेचना करने लगे कि यही तो मानो देखो, रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। जब मानो देखो, रात्रि छा जाती है। मुनिवरो! देखो, रात्रि के छा जाने पर, अन्धकार छा जाता है। हमारे वैदिक साहित्य में मानो देखो, चन्द्रमा को गौतम के रुप में माना है। जो गौ का स्वामी है। गौ नाम कान्तियों को कहा गया है। मानो देखो, जो गौ का स्वामी है। स्वामित्व करने वाला वह मेरे पुत्रो! देखो, वह गौतम कहलाता है। और गौतम की पत्नी का नाम मेरे पुत्रों! देखो, अहिल्या कहा गया है।

अहिल्या

'अहिल्यां ब्रह्मे वृत्तं' वेद का वाक् आता है, बेटा! अहिल्या नाम देखो, रात्रि का है। वैदिक साहित्य में जब अहिल्या के शब्दों की विवेचना प्रारम्भ करते है तो अहिल्या नाम, जहाँ रात्रि का है वहाँ अहिल्या नाम बेटा! पृथ्वी का है। जहाँ अहिल्या नाम पृथ्वी का है वहीं वैज्ञानिकों के मध्य में बेटा! अहिल्या नामक यन्त्र का निर्माण भी होता रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, अहिल्या नाम हमारे यहाँ रात्रि को कहते है। गौतम नाम चन्द्रमा का है। जब मेरे पुत्रो! देखो, चन्द्रमा का उदय होता है। तो ये अन्धकार अहिल्या को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। और ये मानो देखो, प्रकाशमान, कान्तिवान बन जाता है और उस समय कान्तिवान बनकर के मेरे पुत्रो! देखो, कान्तिमयी रात्रि बनकर के बेटा! अमृत को बिखेरने लगता है। क्योंकि चन्द्रमा अमृत को देने वाला है।

गर्भस्थ शिशु पर चन्द्रमा का प्रभाव

माता के गर्भ स्थल में बेटा! जब हम जैसे शिशु पनपते रहते है। तो माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी का सम्बन्ध मानो एक 'अहिल्या कृतिका', एक नाड़ी होती है उससे इसका समन्वय होता है। और उन्हीं नाड़ियों का समन्वय पुरातत् नाड़ी से और पुरातत् नाड़ी का समन्वय पंचम नाड़ी से होता है और पंचम नाड़ियों का सम्बन्ध माता की लोरियों से होता है और लोरियों से पुनः पंचम नाड़ी ऋणिका नाड़ी बनकर के माता की नाभि से उसका समन्वय रहता है और हम जैसे प्यारे पुत्र जब माता के गर्भ स्थल में होते है तो मानो देखो, उस नाड़ी से हमारा समन्वय होता है।

तो बेटा! वह चन्द्रमा अमृत को देने वाला है। वाह रे, मेरे प्यारे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब तूने हम जैसे मानव शरीर की रचना की, माता के शरीर की रचना की। तो बेटा! कितने विज्ञान में पूर्ण है वह। कैसा विज्ञान है? अमृत नाड़ियों के द्वारा जा रहा है, नाड़ी का सम्बन्ध बालक की नाभि से, माता की लोरियों से, पंचम नाड़ियों से, पुरातत नाम की नाड़ियों का समन्वय मेरे प्यारे! माता की रसना के निचले विभाग में, चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है उसका समन्वय रसना से और रसना का समन्वय बेटा! रसों से और रसों का समन्वय बेटा! चन्द्रमा से होता है। वाह रे, मेरे प्यारे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। आज मैं तेरे विज्ञान की महिमा का गान गाने नहीं आया हूँ।

विचार केवल यह कि वेद हमें क्या देता है। वेद कैसा अनुपम ज्ञान देता है, बेटा! मेरे पुत्रो! देखो, मैं उच्चारण कर रहा था, वैदिक साहित्य में अहिल्या नाम मुनिवरो! देखो, रात्रि का और गौतम नाम हमारे यहाँ बेटा! चन्द्रमा को माना है। मानो देखो, इन्द्र नाम बेटा! सूर्य का है 'अमृतं ब्रह्मे अमृतां देवाः' मेरे प्यारे! चन्द्रमा अमृत को देने वाला है, अमृत का समन्वय मानो देखो, समुद्रों से होता है। रात्रि अहिल्या में अमृत को प्रदान करता है। और गौतम के द्वारा रात्रि मेरे पुत्रो! देखो, छली जाती है, अहिल्या छली जाती है। बेटा! देखो, इन्द्र नाम हमारे यहाँ सूर्य को कहा गया है। नाना प्रकार की भगों वाला है भग नाम किरणों को कहा गया है। नाना प्रकार की किरणों से संसार को आच्छादित कर देता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, विचार आता रहता है अहिल्या नाम मुनिवरो! देखो, जहाँ रात्रि का है वहाँ पृथ्वी का नाम भी अहिल्या है। पृथ्वी का नाम अहिल्या है, कौन–सी पृथ्वी का नाम अहिल्या है? जिस पृथ्वी से अन्न उत्पन्न किया जाता हो और मुनिवरो! देखो, जिस पृथ्वी ''अन्नाद यूतम्'' अन्न उत्पन्न किया जाता हो और वह वज्र के तुल्य मानो देखो, उसी प्रकार हो ''रम रम्णेह''।

बेटा! मुझे स्मरण है मुझे वह काल भी स्मरण आता रहता है जब राम और लक्ष्मण ने अहिल्या नामक बेटा! यन्त्रों का निर्माण किया था, दण्डक वनों में। मुनिवरो! देखो, महर्षि विश्वामित्र की संरक्षणता में। देखो, विज्ञान के यन्त्रों को वृत्त होता रहा है। परन्तु देखो, राम जहाँ विज्ञान में परायण थे वहाँ उनके यहाँ बेटा! देखो, वह अपने में मानो पृथ्वी के परमाणुओं को जानते थे।

अहिल्या का स्वरूप

बेटा! जब राम वन को जा रहे थे। वन को जाते समय मुनिवरो! वह 'वनं ब्रह्मे वृत्तं' देखो, जब वन को जा रहे थे विश्वामित्र सहित है और देखो, वह दण्डक वनों से अपने विद्यालय से जहाँ धनुर्याग किया करते थे, धनुर्विद्यालय में जो नाना प्रकार की धनुर्विद्यायें, परमाणु विद्याओं का अध्ययन करते थे। जब वे गमन करते हुए जा रहे थे तो जो भूमि वज्र के तुल्य थी उसका नाम अहिल्या कहा जाता है। उसमें मुनिवरो! अन्न उत्पन्न किया जाता है। राम ने ये विचारा कि ये भूमि तो बड़ी पवित्र है। मुनिवरो! देखो, कृषकों से कहा – हे कृषकों! इसमें अन्न उत्पन्न करो, मानो यह भूमि तो बड़ी पवित्र है पावन है। मुनिवरो! देखो, राम ने अहिल्या रुपी भूमि का बेटा! देखो, कल्याण कराया। मानो उसमें अन्न इत्यादि उत्पन्न होने लगे राष्ट्र की प्रतिभा का जन्म हो गया। तो मेरे पुत्रो! देखो, आज मैं विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ। केवल विचार क्या कि चन्द्रमा प्रकाश का द्योतक है। वह अहिल्या को अपने गर्भ में धारण कर लेता है, अन्धकार का प्रकाश में परिवर्तन कर देता है और प्रकाश अमृत को देने वाला है, वही अमृत मुनिवरो! देखो, जब भूमि की नाना प्रकार की वनस्पतियाँ उसे अपने में सिंचन करती है तो मानो देखो, वह भव्यता को प्राप्त हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा है ये चन्द्रमा जब मानो देखो, ये सूर्य नहीं होता तो ये प्रकाश का द्योतक है, प्रकाश को देने वाला है, ये धीमा प्रकाश देता है। मानो इसी के प्रकाश में अपनी क्रियाओं में रत हो जाता है, प्रकाशमान बन जाता है। तो मुनिवरो! देखो, इसी का समन्वय मानो समुद्रों से होता है, समुद्रों से जलों को अपनी कान्तियों में सिंचन कर लेता है और वही अमृत के रुप में अमृतमयी बनकर के सब का प्रसार किया जाता है।

तो विचार क्या वेद के ऋषि ने वर्णन करते हुए कहा – हे ब्रह्मणो! मानो देखो, ये जो चन्द्रमा है ये प्रकाशमयी है, ये प्रकाश को देने वाला है और ये प्रकाशमयी कहलाता है। मानो ये प्रकाश का द्योतक है अमृत को देने वाला है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है। आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार ये देने के लिए आया हूँ क्या मुनिवरो! देखो, एक दूसरे में प्रकाश प्रकाशमान हो रहा है अन्धकार मानो देखो, प्रकाश में ही परिवर्तित हो जाता है। आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ मानो बेटा! विशेष चर्चा न करता हुआ केवल ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देवत्तव को जानते हुए एक–एक वेद मन्त्र के ऊपर अन्वेषण करते हुए अपने में बेटा! विचार विनिमय करते चले जाए और विचार धारा को लेकर के अपने में चिन्तन मनन करते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें।

तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ आगे की शेष चर्चा तो मैं कल ही प्रगट करुँ ये तो ज्ञान और विज्ञान का वन है मानो देखो, प्रकाश की चर्चा तो कल उच्चारण करुँगा। आज का विचार ये क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और वेद मन्त्रों के ऊपर अध्ययन करते हुए, कि वेद मन्त्र हमें क्या कह रहा है।

तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज चन्द्रमा पर आकर के शान्त हो गये और ये कहा कि इससे आगे की चर्चा हम कल प्रगट करेंगे। बेटा! आज का विचार कि गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के जो विचार है, चिन्तन करने की जो उनकी शैली है, विचित्र, जो वाक् उच्चारण करने का उनका जो उद्गार है, वह बड़ा विचित्र रहा है। ये चर्चायें मुनिवरो! देखो, हम कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए। ———— **शेष अनुपब्ध दिनांक–08–01–1988–जयदेव पार्क,**

२ महर्षि विश्वमित्र का धनुर्याग–दिनांक–20–01–1988

जीते रहो,

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रें का गुण–गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रे का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद–वाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं क्योकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात् आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्मांड के मूल मे प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात् आ रहा हैं। हमारे यहाँ इस संसार को दो प्रकार की प्रतिभा में प्रायः निहित किया है। एक जड़वत् है तो एक चैतन्यवत् कहलाया गया है।

महर्षि विश्वमित्र का धर्नुयाग

जड़ एवं चैतन्य

हमारे यहाँ जड उस वस्तु को कहते है जिसमे ज्ञान और प्रयत्न नहीं होता। परन्तु जहाँ ज्ञान प्रयत्न और गति यह तीनों विद्यमान रहते है तो वह ज्ञान और प्रयत्न के रूप में विद्यमान रहता है। तो उसका नाम चैतन्यवत् कहा जाता है। तो आज जब हम चेतना के स्वरूप में प्रवेश करते है और चेतना में रत होते है तो वे परमपिता परमात्मा मानो उसमें निहित रहते है और जब जड़वत में प्रवेश करते है तो मानो उस जड़वत में भी परमपिता परमात्मा निहित रहते है। तो इसलिए उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसकी महानता का प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में वर्णन होता रहता है।

तो आओ, मुनिवरो ! देखो, आज का हमारा वेद मन्त्रः जहाँ जड़ और चैतन्य की विवेचना करता है अथवा परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन कर रहा है क्योंकि किसी भी वेद मन्त्र के उपर जब अनुसन्धान अथवा अन्वेषण करना प्रारम्भ करते है, तो मानो वह परमपिता परमात्मा की महती उसमे निहित रहती है। एक–एक वेद मन्त्र में सर्वत्र ब्रह्मांड की प्रतिश का वर्णन होता रहता है। मानो उसके ज्ञान और विज्ञान की महिमा एक–एक मूल में विद्यमान रहती है।

वसुन्धरा

तो आओ, मेरे पुत्रे ! आज का हमारा वेद मन्त्र जहाँ जड़ और चेतना की विवेचना कर रहा वहाँ आज के हमारे वेद के पठन–पाठन में ''वसुन्धरं ब्रह्मणं ब्रहें प्रत्याहम्'' मानो देखो, उस माता वसुन्धरा का भी वर्णन होता रहता है। जिस वसुन्धरा के गर्इस्थल में यह सर्वत्र मानव जड़ और चैतन्य सब उसी के गर्इ में निहित रहते है। तो मेरे पुत्रे! देखो, परमपिता परमात्मा के रूप में, सर्वत्र वसुन्धरा के रूप में विधमान रहते है। जहाँ माता का नाम ''पितरं ब्रह्मे प्रणस्सुताम्'' जहाँ परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु अथवा वसुन्धरा रूप में वर्णन किया गया है ''मां ममत्रम्'' वहाँ माता का नाम भी विष्णु अथवा वसुन्धरा के रूप में वर्णन किया गया है। पृथ्वी माता भी वसुन्धरा के रूप मे वर्णित रहती है, परन्तु जहाँ बेटा ! वसुन्धरा का वर्णन आता है वहीं आज के वैदिक साहित्य में, वेद के पठन–पाठन में और भी नाना प्रकार की प्रतिशओ का वर्णन आ रहा था।

मृत्युञजयी

आओ, मेरे प्यारे ! हमारे यहाँ प्रायः मानव ज्ञान और विज्ञान की प्रायः उड़ाने उड़ता रहा है। आज के हमारे वैदिक साहित्य में, वैदिक मन्त्रें में उस महान देव के ज्ञान और विज्ञान को कितना नितान्त माना गया हैं। आज का हमारा वाक् यह कहता है कि जहाँ हम माता वसुन्धरा की याचना कर रहे हैं वहाँ हम देखो, ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने भी उड़ते चले जाएँ। क्योकि हमारा वेद का मन्त्र कहता है, ''यागां ब्रह्मणं ब्रहें ब्रहन्यं विज्ञानं व्रष्नं ब्रीहि व्रतम्'' मेरे प्यारे ! देखो, वह परमपिता परमात्मा ज्ञान विज्ञान और आध्यात्मिकता के सर्वत्र स्वरूप में विद्यमान रहता है, तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गान गाते हुए, जहाँ हम यह विचारते रहते है कि हमारे यहाँ नाना ऋषिवर अपनी–अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके नाना प्रकार की विवेचना करते रहे है, विचारते रहे है कि ''मृत्युंजय ब्रह्में व्रताः'' वेद का मन्त्र कहता है कि संसार में जितने भी क्रियाकलाप है, चाहे वह अनुष्ठान के रुप में हैं, याग के रूप में हैं, वे सब मृत्यु के रूप में कहलाए जाते है। जितना भी मानव संसार में क्रियाकलाप कर रहा है, उसके गर्भ में केवल एक ही वाक् रहता है कि मैं मृत्युंजयी बन जाऊँ मानो मेरी मृत्यु न होनी चाहिए। प्रत्येक मानव इस आभा में लगा हुआ है कि मैं मृत्युंजयी बन जाऊँ।

मृत्यु का स्वरूप

मेरी प्यारी माता व्याकुल हो रही है परन्तु जब वह व्याकुल हो रही है तो एक दार्षनिक कहता है कि हे माता ! तू व्याकुल क्यो हो रही है? माता कहती है कि मेरा पुत्र नहीं रहा, मानो देखो, मैं अपने पुत्र के विरह में व्याकुल हो रही हूँ। तब दार्षनिक कहता है – हे माता ! यह शरीर तेरा पुत्र है या इस शरीर में जो आत्मा है वह तेरा पुत्र है? तो जहाँ विभक्त क्रिया का प्रष्न आता है तो माता उस समय मौन हो जाती है, क्योंकि वह यदि आत्मा को अपना पुत्र कहती है तो आत्मा को तो वह जानती नही। परन्तु यदि शरीर को अपना पुत्र कहती है तो शरीर शव रुप में ज्यों का त्यों निहित रहता है। तो मेरे प्यारे! इसमें विचित्र आभाएँ उत्पन्न होती है। हमारे यहाँ मृत्युंजयी बनने के लिए प्रत्येक मानव लालायित रहता है। और यह विचारता रहता है कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए मैं मृत्यंजयी बन जाऊँ। मानो देखो, मेरा शब्द विज्ञान भी मृत्यु को न प्राप्त हो।

तो मुनिवरो! देखो, इस प्रकार हमारे वैदिक साहित्य में बहुत–सी लोकोक्तियाँ आती है, विचार आता रहता है कि हम मृत्युंजयी बनने के लिए सदैव तत्पर रहते है और हमारे मनों की यह इच्छा रहती है कि हमारी मृत्यु नहीं होनी चाहिए संसार में। क्योकि प्रत्येक याग इत्यादियों में, अनुष्ठानों में, साधना में सदैव रत रहता है और यें विचारता रहता है कि मैं अपनी अन्तरात्मा को जानने के लिए सदैव तत्पर रहूँ और मानो शैतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनो विज्ञानवेत्ता बनकर के मैं मृत्यंजयी बन जाऊँ। ऐसी प्रायः कल्पना रहती है कि मैं मृत्युंजयी बन जाऊँ। तो बेटा! विचार आता रहता है कि मृत्यु के लिए मानो कितना प्रयास करता रहा है।

मृत्यु विजय की जिज्ञासा

आओ, बेटा! मैं तुम्हे उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, ये वाक् मैने तुम्हे कई काल में प्रगट किए है। मेरे पुत्रे! देखो, एक समय काग भुषुण्डी अपनी स्थली पर विद्यमान होकर अपने में कुछ वेदों का अध्ययन कर रहे थे, मन्त्रें के अध्ययन में लगे हुए थे। उसमें ये आ रहा था मृत्युंजयं श्वितां ब्रह्में बृहिः वृतं देवा वारा वस्तुतम्, वेद का ऋषि यह विचार रहा था, चिन्तन और मनन कर रहा था कि मेरी मृत्यु नहीं आनी चाहिए। ऐसा कौन–सा मुझे उपाय, कौन–सा मुझे विचार विनिमय करना है। जिससे मृत्युंजय बन जाऊँ। तो बेटा! देखो, महर्षि काग भुषुण्डी जी जब अपने में यह मनन कर रहे थे तो सांय काल का समय हो गया। सांयकाल को अपने आसन का त्याग करके महर्षि लोमश मुनि के द्वार पर पहुँचे और महर्षि लोमष मुनि से बोले कि प्रभु ! मेरे हृदय की एक आकांक्षा जागृत हो रही है कि मैं मृत्युंजय बनना चाहता हूँ। मैं मृत्यु को विजय करना चाहता हूँ तो ऐसा कौन–सा क्रियाकलाप है जिससे मेरी मृत्यु न आए। तो मेरे पुत्रे! देखो, लोमश मुनि बोले कि तुम मृत्युंजय बनने के लिए एक अनुष्ठान करो।

साधना सिद्धि का उपाय

तो मुनिवरो! देखो, महर्षि काग भुषुण्डी जी ने बारह वर्ष का अनुष्ठान किया और बारह वर्ष के अनुष्ठान में वह बेटा! प्रायः अपने आसन पर एक याग करते थे। क्योकि हमारे यहाँ परम्परागतों से यह माना गया है कि जिस भी आसन को तुम्हें ऊँचा बनाना है, उसके वायु मंडल को पवित्र बनाना है यदि साधना में जाना चाहते हो। एक मानव अपनी साधना में परिणत होना चाहता है, साधना में रत होना चाहता है, प्राण और अपान को दोनो का समावेश करना चाहता है, तो मुनिवरो! देखो, उसे अपने मानवीय चिन्तन से, याग इत्यादियों से इस वायु मण्डल को पवित्र बनाना है। वेदज्ञ ध्वनि के साथ में देवता की उपासना करनी है। तो मेरे पुत्रे! देखो, जब इस प्रकार का अपने वायुमण्डल को बना लेता है तो उसके पष्चात् उसकी साधना सिद्ध हो जाती है।

तो मुनिवरो! महर्षि काग भुषुण्डी जी ने बारह वर्ष का अनुष्ठान किया। अनुष्ठान का अभिप्राय यह है कि वायुमंडल को पवित्र बनाकर अपने को उतिष्ठित करना है। अपने को मानो ऊर्ध्वा में ले जाना है। अपनी वैदिक, शुद्ध और पवित्र शवना से मनन और चिन्तन करना है। मेरे पुत्रे! वेद मन्त्रें को, साकल्य को परमाणु रूप में दृष्टिपात् कर सके और उसके ऊपर शब्द विद्यमान हो करके मानो उसकी पवित्रता से वह आसन पवित्र हो जाए। तो मेरे पुत्रे! महर्षि काग भुषुण्डी जी ने इसी प्रकार का अपना एक अनुष्ठान प्रारम्भ किया। उन्हें बहुत समय हो गया अनुष्ठान करते हुए।

क्रोध के परमाणुओं का कुप्रभाव

एक समय श्वेतकेतु मुनि महाराज अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियो को शिक्षा देते थे और जब ब्रह्मचारियो को शिक्षा देते रहे तो बेटा ! श्वेतकेतु मुनि महाराजा अपने में अध्ययन करा रहे थे। तो मुनिवरो! देखो, एक अध्ययन कर्ता ब्रह्मचारी को उनका वाक् स्मरण न हुआ। तो स्मरण न होने से उन्होंने दण्ड देना प्रारम्भ किया। मानो देखो, क्रोधाग्नि कुछ जागरूक हो गयी। उसके पष्चात् उनके हृदयों में वह आकांक्षा बनी रही, द्वेषाग्नि और क्रोधाग्नि दोनों

जागरूक रही। जागरूक होने के पष्चात् मुनिवरो! देखो, वह अगले दिवस में प्रातः कालीन श्रमण करते हुए दण्डक वनों में पहुचें। जहाँ महर्षि कागभुषुण्डी जी प्रातःकालीन याग कर रहे थे।

तो मेरे पुत्रे! देखो, व्रेतकेतु मुनि महाराज भी उनके आश्रम में जाकर के स्वाहा उच्चारण करने लगे। जब स्वाहा उच्चारण करने लगे तो मुनिवरो ! देखो, उनका वाक् हृदय की जो शवना मानो जो अन्तःकरण में, हृदय में जो विद्यमान थी मेरे पुत्रे! देखो, वह क्रोद्याग्नि की वासनाएँ, द्वेषाग्नि की वासना दण्डित करने की वासनाओं की तरंगे मुनिवरो! देखो, अन्तरिक्ष में ओत्–प्रोत होने लगी। जब वह स्वाहा के साथ में वह जाने लगी तो मुनिवरो! देखो महर्षि कागभुषुण्डी जी, जो वैदिक मर्म को जानने वाले थे तो देखो, उनके हृदय में उसका चित्रण होने लगा। वह अशुद्ध वायुमण्डल जो अशुद्धयाम् बन रहा था मानो देखो, अमंगलम् उनके स्मरण शक्तियों में जागरूक होने लगा।

अनुष्ठान से वायुमण्डल की पवित्रता

तो मुनिवरो! देखो, कागभुषुण्डी जी ने अपना याग समाप्त कर दिया और याग समाप्त करने के पष्चात् कहा हे ऋषिवर! मैं अपने वायुमण्डल को अनुष्ठान के द्वारा आहूत, हूत के द्वारा स्वाहा और वेद मन्त्रें की तरंगों के द्वारा पवित्र बनाना चाहता हूँ। हे ऋषिवर! तू इस वायुमण्डल को अपवित्र बना रहा है। मेरे वायुमण्डल को तू मानो देखो, मेरा सखा नही बनने दे रहा है। मेरे पुत्रे ! देखो, व्रेतकेतु ने यह वाक् स्वीकार कर लिया और उन्होनें कहा धन्य है, प्रभु! वास्तव में मेरे अन्तर्हृदय में वह शवना जागरूक हो गयी है। मेरे अन्तर्हृदय की जो शवना है, मानो देखो, उसका चित्रण भी अवष्य हो रहा है। तो हे प्रभु! मैं मानो देखो, इस वाक् को स्वीकार करता हूँ। मेरे पुत्रे! देखो, कागभुषुण्डी जी ने कहा तो भगवन्! ऐसा नही होना चाहिए था। एक तारतम्य मानो समाप्त हो जाता है। जब यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता है तो मानो, देखो उसका तारतम्य समाप्त हो जाता है जब उसकी प्रवृति में चंचलता या अभिमानता या अस्वति ब्रह्मणे मानो अशुद्धियां आ जाती है तो इस प्रकार मेरे तारतम्य को तुम अशुद्ध बना रहे हो।

तो मेरे पुत्रे! देखो, वह मौन हो गये। कागभुषुण्ड जी ने अपने में ब्रह्मणं देखो, एक वाक् कहा कि प्रभु! एक समय मैं अपनी माता के आंगन में विद्यमान था। तो मेरी माता यह कहा करती थी कि हे बाल्य! हे कागां ब्रह्मणं ब्रहे व्रतम्, हे ब्रह्मचरिष्यामि, हे ब्रह्मचारी ! तुझे ब्रह्मचारी बनना है। तुझे देवताओं की सभा में सुशोभनीय होना है। तो देवताओं की सभा में जाने योग्य माता मुझे शिक्षा प्रदान करती रही। तो मानो मेरे हृदय में एक उज्ज्वलता की धारा का जन्म हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय ऋषि कहता है ''सम्भूति ब्रह्मणं लोका अस्सुतं लोकाम्''

वायुमण्डल की पवित्रता से हृदय की पवित्रता

मेरे प्यारे! देखो व्रेतकेतु ऋषि इस वाक् को स्वीकार कर अपने विद्यालय में चले गये और कागभुषुण्डी जी ने पुनः से अपने अनुष्ठान में वह चिन्तन प्रारम्भ कर दिया। तो मेरे पुत्रे! विचार विनिमय क्या हमारे यहाँ वैदिक साहित्य यह कहता है कि हमें परमात्मा के रचाए हुए इस ज्ञान और विज्ञानमयी जो जगत् है, उसको बड़ी मर्मज्ञता से स्वीकार करना है। जिससें हमारा हृदय हमेषा पवित्र हो जाए और वायुमण्डल पवित्र हो जाए तो हमारा हृदय मानो देखो महानता में परिणत हो जाएगा।

परमात्मा की आभा की प्राप्ति

तो आओ मेरे प्यारे मैं विशेश विवेचना न देता हुआ यह वाक् मैने तुम्हें इसलिए उच्चारण किया कि संसार में जितना भी क्रियाकलाप है उसमें मानव यह चाहता है कि मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। कागभुषुण्डी जी के मन में यह इच्छा रही कि मेरी मृत्यु न हो। मै मृत्युंजयी बन जाऊँ। मानो देखो, मृत्युंजयी कौन होता है? जो अज्ञान को समाप्त कर देता है और ज्ञानाग्नि में स्नान करने लगता है। ज्ञानाग्नि को अपने में धारण कर लेता है। मेरे पुत्रे ! देखो, वही मानव संसार में, ''अप्रतम–ब्रह्मा'' परमात्मा की आभा को प्राप्त कर लेता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेश विवेचना तो तुम्हें देने नही आया हूँ। केवल परिचय देने आया हूँ और वह परिचय क्या है कि हम मुनिवरो! देखो मृत्युंजयी बन जाएँ।

ऋषि मुनियों की भव्य चर्चाएँ

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बेटा! देखो, ऋषि मुनियों का जीवन सदैव एक महानता में रत रहा है मैनें तुम्हें कई कालों में वे चर्चाएँ की है। मेरे पुत्रे! जब हम उन चर्चाओं में घनिष्ठ, गम्भीर मुद्रा में परिणत हो जाते है तो प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषि–मुनियों के स्थानों पर कैसी भव्य चर्चाएँ होती रहती थी, कैसा देखो, वेद मन्त्रों का मिलान, वेद मन्त्रो की ध्वनि के साथ में उनके जीवन की चर्चा में कितनी पवित्रता रही है। मैं उस आसन पर ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा! देखो, मृत्यु के सम्बन्ध में अज्ञान के सम्बन्ध में प्रायः बेटा! विचार विनिमय होता रहता है। तो आओ, मुनिवरो! देखो, आज मैं तुम्हें महर्षि वशिश्ठ मुनि महाराज के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रे! देखो, माता अरुन्धती, महर्षि वशिश्ठ मुनि महाराज और महर्षि विश्वामित्र अपने आसन पर विद्यमान थे। मानो देखो, प्रातःकाल का समय था, देखो, विद्यालय में जो प्रातःकालीन याग होता था जिसमें ब्रह्मचारी प्रातःकालीन अपने आसनो पर विद्यमान हो करके भिन्न–भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ते रहते थे और आचार्य भी अपनी स्थलियों में भिन्न–भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ते रहते थे। तो मुनिवरो! देखो, उस उड़ान में वह तत्पर रहे।

विद्यालयों की पवित्रता

तो मेरे प्यारे ! देखो, महर्षि विश्वामित्र से वशिश्ठ मुनि महाराज ने कहा 'हे विश्वामित्र ! मेरी ऐसी इच्छा रहती है कि विद्यालय पवित्र बनें और विद्यालय तब पवित्र बनते है जब विद्यालयों में भिन्न–भिन्न प्रकार के यागो का चयन होने लगता है। और जब तक याग नही होते, तो ये विद्यालय मानो पवित्रता को प्राप्त नही होते। माता अरून्धती के समीप पहूँचे तो अरून्धती ने भी यही कहा प्रभु! ''यागां ब्रह्मणं वृणश्चलन् कृतानि'' क्योकि ब्रह्मचारी ही याग करता है! जो ब्रह्मचारी नहीं है, उसे याग का अधिकार नहीं होता है। उन्होने–कहा ''कि ब्रह्मचारी कौन होता है, देवी''! आज जो तुम ब्रह्मचर्य के इतने उद्बुद्ध विचार दे रही हो। तो माता अरून्धती ने कहा कि ब्रह्मचारी वह है जो मानो अपनी मानसिक साधना में लगा हुआ है। मानो देखो, वह साधना क्या है ? जो मानो देखो, प्राण के साथ में मन को कटिबद्ध करके एक एक ष्वास को ब्रह्मसूत्र में पिरोने वाला होता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। आज मैं ब्रह्मचर्य की विवेचना, प्रभु आप तो महापुरूष है सब जानते है। आप विज्ञानवेत्ता भी है, आध्यात्मिक एवं शैतिक विज्ञान दोनो को जानने वाले है।

जागरूक

तो मेरे पुत्रे! देखो, जब इस प्रकार उन्होने अपनी वार्ता प्रगट की कि ''ब्रह्मचरिष्यामि गतं ब्रह्मलोकाम्'' तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा हे देवी! 'अप्रतम्' देखो, ब्रह्मचारी को याग करने का अधिकार है। याग कौन करता है ? जो यागां ब्रह्मणं जो अपने जीवन में जागरूक रहता, है जो जागता रहता है। जागरूक किसे कहते है ? जागरूक उसे कहते है जो प्रत्येक ज्ञानेन्द्रियों के विषयों को हृदय में अवधान करता है जो हृदयग्राही बन करके दृष्टिपात् करता है और मानो देखो, वह ब्रह्मचारी अपने प्रत्येक ष्वास को ब्रह्मसूत्र मे पिरोने वाला है। वह याज्ञिक कहलाता है, उसे याग का अधिकार होता है।

याग के प्रकार

तो मेरे पुत्रे ! देखो, माता अरुन्धती ब्रह्मचारियों के मध्य में और देखो, महर्षि वशिश्ठ और विश्वामित्र इनकी यह चर्चा हो रही थी, विचार विनिमय हो रहा था। तो मेरे पुत्रे! देखो, उस समय महर्षि विश्वामित्र ने यह कहा कि प्रभु ! याग कितने प्रकार के होते है ? उन्होने कहा ''बहुत प्रकार के होते है'' यागों में एक देखो, धनुर्याग होता है, अग्निष्टोम याग होता है, वाजपेयी याग होता है और मानो देखो, अष्वमेघ, अजामेध भिन्न–भिन्न प्रकार के और भी नाना याग होते है। मेरे पुत्रे ! देखो, याग की चर्चा करते हुए उन्होने अपने में बड़ा विचारा ''ब्रह्मणे लोकाम्'' वे अपने में मानो चिन्तन की आभा में रत हो गये और देखो, चिन्तन करने लगे कि हमें याग करना है।

राष्ट्र कल्याण के लिए धनुर्याग

महर्षि विश्वमित्र का धर्नुयाग

तो मुनिवरो! देखो, याग में जब परिणत होने लगे तो मानो ऐसा मुझे स्मरण आता रहता है बेटा ! कि महाराज विश्वामित्र को वशिशठ ने यह कहा कि "तुम एक धनुर्याग करो तुमने अपने जीवन में बहुत धनुर्याग किये है, इसलिए तुम धनुर्याग करो।" मेरे प्यारे! देखो, उन्होनें उनके वाक्यो को स्वीकार कर लिया। उन्होनें कहा कि राजा के राष्ट्र में, समाज में जब तक धनुर्याग नही होगा तो राष्ट्र कल्याण के मार्ग पर नही जा सकेगा। क्योकि राष्ट्र तब ऊँचा बनता है जबकि राजा के राष्ट्र में बुद्धिजीवी प्राणी याग करते हुए वे धनुर्याग में परिणत हो जाते हैं। और धनुर्यागी जो राष्ट्र होता है वह महान पवित्र बन जाता है। मेरे प्यारे! राजा उसके अनुसार अपने क्रियाकलापो मे परिणत हो जाता है।

महर्षि विश्वामित्र का अयोध्या गमन

तो मुनिवरो! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने यह स्वीकार कर लिया और स्वीकार करने के पष्चात् मानो देखो, सायंकाल हो गया अगला जब दिवस आया तो उन्होंने वशिशठ की और माता अरुन्धती की आज्ञा पा करके कहा कि मुझे धनुर्याग करना है। मैंने धनुर्याग को दण्डक वनों में प्रारम्भ तो किया हुआ है, परन्तु मैं राजकुमारो के द्वारा उसे पवित्र और महान बनाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रे! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने आसन से गमन किया और श्रमण करते हुए अयोध्या में उनका प्रवेश हुआ। जब अयोध्या में प्रवेश हुआ, तो अयोध्यावासियों ने ये विचारा की आज तो महर्षि का आगमन हो रहा है और न प्रतीत ऋषि का आगमन बिना सूचना के क्यो हो रहा है? यह तो ब्रह्मवेत्ता उपाधि वाले ऋषि है।

महर्षि विश्वामित्र द्वारा राजकुमारों की याचना

तो मुनिवरो ! देखो, वह श्रमण करते हुए राजा दषरथ की स्थली पर पहुँचे। राजा दषरथ ने आसन को त्याग दिया और आसन को त्याग करके उन्होने कहा—आईये, श्गवन ! आसन पर विराजिए। देखो, आसन पर जब विद्यमान हो गए तो राजा ने कहा "कहिए श्गवन्! यह मेरा कैसा अहोभाग्य जागरूक हुआ, जो बिना समय के तुम्हारा आगमन हुआ है। उन्होने कहा महाराज! मै दण्डक वनो में, एक धनुर्याग कर रहा हूँ मुझे राजकुमारों को प्रदान कीजिए। मैं राजकुमारों के द्वारा याग को सम्पन्न कराना चाहता हूँ। राजा ने कहा—प्रभु! यह बाल्य तो किषोर है। श्गवन् ! आप मुझे आज्ञा दीजिए। क्योंकि मै राजा हूँ और मेरा यह कर्तव्य है कि मै महर्षि की आज्ञा का पालन करूं और वह महर्षि जो चाहते है, मै उसी प्रकार उनकी प्रतिभा में मानो देखो, वृतियो में रत करना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, महाराजा विश्वामित्र बोले कि नही, राजन्! मुझे राजकिशोर चाहिए, मुझे राजकुमार चाहिए। जिससे मैं अपने याग को सम्पन्न करुँ। मेरे प्यारे! देखो, राजा अपने में उच्चारण कर रहे थे, कि श्गवन्! यह बाल्य किषोर है मानो देखो, मैं आपके याग को पूर्ण कराऊँगा।

अयोध्या की न्याय व्यवस्था

मेरे पुत्रे! देखो, यह चर्चाएँ हो रही थी कि इतने में राजलक्ष्मियाँ आ पहुँची। हमारे यहाँ अयोध्या में यह नियम बना हुआ था कि पुरूषों के न्यायालयों में देखो, मनुष्यों का, पुरूषों का न्याय राजा करते रहते थे और देवियों का न्याय, न्यायालयों में राजलक्ष्मी करती रहती थी।

तो मेरे पुत्रे! देखो, जब माता कौशल्या इत्यादि ने श्रवण किया कि आज तो, ऋषि विश्वामित्र का आगमन हो रहा है। और वह जहाँ राजर्षि थे वहीं वे ब्रह्म की उपाधि को भी प्राप्त कर गये है। तो मुनिवरो ! देखो, वह राजलक्ष्मियाँ अपनी—अपनी स्थलियों को त्याग करके राजसभा में मानो देखो, जहाँ विश्वामित्र राजस्थली पर विद्यमान थे वहाँ पहुँची। मेरे पुत्रे ! देखो, राजलक्ष्मियों ने उनके चरणों की वन्दना करने के पष्चात् कहा 'कहो, श्गवन्! आज आपने हमारे राष्ट्र अयोध्या को कैसे पवित्र किया है? बिना सूचना के आप का आगमन हुआ है। मानो हम इसके कारण को जानना चाहते है ?

उन्होने कहा "हे दिव्यासे! मै एक याग कर रहा हूँ, दण्डक वनो में। मेरा संकल्प है, कि मैं धनुर्याग कराऊँ और उस धनुर्याग की सम्पन्नता के लिए मुझे राजकुमार चाहिए। उन्होने कहा "प्रियतम" उन्होने राजा से कहा—प्रभु ! आप इन्हे राजकुमारों को प्रदान कर दीजिए। मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा देवी! मैं याग की रक्षा कर सकूँगा, ये किशोर है। माता कौषल्या ने कहा "हे श्गवन्! हे राजन्! यदि हमारे गर्भ से उत्पन्न होने वाला राजकुमार ऋषि की सेवा न कर सका तो हमारा गर्भाशय दूषित हो जायेगा। हे प्रभु! आप ये क्या उच्चारण कर रहे है, आप राजकुमारों को प्रदान कीजिए और धनुर्याग को सम्पन्न होने दीजिए।

मेरे प्यारे! देखो, राजा ने कहा—ब्रह्मणं ब्रहे "जैसी इच्छा हो" तो मुनिवरो ! देखो, उन राजलक्ष्मियों ने तीनो राजकुमारो को सर्वत्र मानो देखो, उन्हें प्रदान कर दिए। जाओ, भगवन! देखो, याग को सम्पन्न कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, राम और लक्ष्मण दोनो को लेकर गमन किया। भरत जी ने कहा—"प्रभु ! मै भी आपके आश्रम में शिक्षा पाना चाहता हूँ।" उन्होने कहा 'बहुत प्रिय' परन्तु हम गमन करते है, आपका आगमन भी होगा।

तो मेरे पुत्रे! देखो, उन्होंने राम और लक्ष्मण दोनों को लेकर गमन किया। वे भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, "ब्रह्मणं ब्रह्मं कृतं व्रताः" मेरे प्यारे! देखो, वह जो नाना असुर प्रवृति वाले प्राणी थे उनको दण्ड देते हुए, मानो देखो, वह श्रमण करते हुए, वे दण्डक वनों में जा पहुँचे।

महर्षि विश्वामित्र का विद्यालय

दण्डक वनों में बेटा! एक सौ पाँच ब्रह्मचारी उनके विद्यालय में अध्ययन करते थे। मेरे प्यारे ! देखो, समय समय पर नाना ऋषि मुनियों का आगमन होता रहता और वे धनुर्याग के सम्बन्ध में भिन्न—भिन्न प्रकार के क्रियाकलाप भी वर्णन करते रहते। तो मुनिवरो ! देखो, कुछ समय में श्रत और शत्रुध्न का भी विद्यालय में प्रवेश हो गया और विद्यालय में प्रवेश हो गया तो बेटा, सर्वत्र मानो शिक्षा अध्ययन करने लगे।

महर्षि भारद्वाज का विद्यालय में आगमन

धनुर्याग क्या है ? बेटा ! अस्त्रों—शस्त्रों की विद्या का अध्ययन करना, अणु और परमाणुओं को जानना, वैदिक साहित्य जो कुछ कहता है, वेद मन्त्र जो भी कह रहा है नाना अणु और परमाणु को वे प्रायः दृष्टिपात् करते रहते। तो बेटा ! देखो, जब वह अध्ययन कर रहे थे तो अध्ययन काल में ही मुनिवरो! देखो, एक समय उस विद्यालय में महर्षि भारद्वाज मुनि अपने ब्रह्मचारियों के सहित बेटा! ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी और मुनिवरो! ब्रह्मचारी यज्ञदत, ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु और महर्षि पणपेतु इत्यादि मुनियों के साथ ऋषिवर ने बेटा! देखो, जहा दण्डक वन में धनुर्याग हो रहा था, वहा उनका आगमन हुआ। आगमन होने के पश्चात् मुनिवरो! ऋषि ने उनका स्वागत किया। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा – प्रभु! यह तो हमारा सौभाग्य है क्योकि आपका जो जीवन है वह सर्वत्र यागों में परिणत रहा है। हे प्रभु! आप धनुर्याग करते है। यह हमारा सौभाग्य है। मेरे प्यारे! देखो, आओ, विराजो। वह विराजमान हो गये। चर्चाएँ होने लगी।

मेरे पुत्रे! जब इनके यहाँ प्रातःकालीन याग हुआ, धनुर्याग से पूर्व देवपूजा हुई तो देवपूजा होने के पष्चात् मुनिवरो ! वह ऋषिवर अपने आसन पर विद्यमान हो गये और महर्षि विश्वामित्र ने प्रार्थना की महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज! आप धनुर्याग के सम्बन्ध में और देवपूजा के सम्बन्ध में अपना कुछ विचार व्यक्त करे।

महर्षि भारद्वाज का उद्बोधन

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज उपस्थित हुए और भारद्वाज मुनि ने कहा " हे ब्रह्मचारियो ! हे ब्रह्मवर्चोसि मानो देखो, आज यह मेरा बड़ा सौभाग्य है जो मै तुम्हारे विद्यालय में विराज रहा हूँ। मानो देखो, इस विद्यालय को दृष्टिपात् करके मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा है। क्योकि विद्यालय में धनुर्याग हो रहा हैं। ब्रह्मयाग भी होता है और इसमें मानो देखो, देवपूजा भी होती है। आज मेरा बड़ा सौभाग्य है, प्रातःकाल से मै विद्यालय को निहार रहा हूँ, परन्तु मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न है। आज मेरे हृदय की बड़ी प्रबल इच्छा है, मानो इसलिए मै तुम्हे विचार देने आया हूँ। जो भी कुछ मैने उपलब्धि की है। हमारे यहाँ यह दो ब्रह्मचारी है—ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी कवन्धी ये अपने में अनुसन्धान कर रहे है। अपनी विज्ञानशाला में विद्यमान हो

करके यह शब्द विज्ञान के ऊपर विचार रहे है ये मानो देखो, एक–एक परमाणु के ऊपर ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का प्रायः दर्षन कर रहे है। हे ब्रह्मचारियो ! मेरी इच्छा ऐसी है कि तुम भी इसी प्रकार एक–एक वेद मन्त्र में से देखो, धनुर्विद्या को जानने का प्रयास करो।

धनुर्याग का स्वरुप

धनुर्विद्या कहते किसे है ? धनुः कहते है जो अस्त्रो–शस्त्रों की विद्या है। मानो देखो, एक परमाणु को ले करके परमाणु में ब्रह्माण्ड का दर्षन किया जाता है। उसी परमाणु में मानो देखो, उस राष्ट्र की प्रतिभा और उसका जो उद्‌गार है वह उसमे प्रायः दृष्टिपात् आता रहता है। तो हे ब्रह्मचारियों! मेरी इच्छा यह है कि तुम्हारे यहाँ नाना प्रकार के यन्त्रें का निर्माण होना चाहिए। यन्त्रें में जैसे अहिल्या कृतिभा यन्त्र है। मेरे पुत्रे! देखो, एक यन्त्र में समावेश करना जैसे साधक प्राण को अपान में और अपान को समान में समान को व्यान में और व्यान को मुनिवरो! देखो, वह उदान में समावेश कर देता है तो उसकी साधना में बेटा! देखो, प्रभु की प्रतिभा दृष्टिपात् आने लगती है। तो मेरे प्यारे ! इसी प्रकार व्यानों का मिलान करना भारद्वाज जानते थे। क्या मानो देखो, एक परमाणु को अणु में, एक अणु को परमाणु में, परमाणु को देखो, तरंगों में और तरंगों में गति करा करके बेटा! देखो, वह गतिवान बना करके यन्त्रो का निर्माण करते रहते थे।

तो मेरे प्यारे ! आज मैं तुम्हे विशेश चर्चा न देता हुआ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। केवल तुम्हे परिचय देने के लिए आता हूँ। और वह परिचय क्या है मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ नाना प्रकार के यागों में परम्परागतों से ही बेटा! संलग्न रहा है। वैदिक मन्त्रें के द्वारा, वैदिक साहित्य को ले करके बेटा! वह नाना प्रकार के विज्ञान की उपलब्धियो में सदैव रत रहता है। आज मैं मुनिवरो! देखो, विशेष चर्चा न देता हुआ केवल विचार ये कि हम अपने प्रभु की महिमा और महानता के ऊपर विचार–विनिमय करें। विज्ञान, उसके बिखरे हुए अणु और परमाणुओं को अपने में चुनौती प्रदान करता रहता है। उन्हीं को जान करके साकार रूप देता रहता है। तो मेरे पुत्रे! देखो, विचार क्या चल रहा है, विचार यह चल रहा है कि धनुर्याग में देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का बड़ा सहयोग रहता था। उनके यहाँ बहुत–सी विद्याओं को अध्ययन करना बेटा! यह मानवीयतव कहलाता है।

अन्धकार से प्रकाश की ओर

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा है कि हम प्रभु की महिमा का गुण–गान गाते हुए ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उडते हुए बेटा! इस संसार सागर से पार हो जाए क्योकि प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा बनी रहती है कि मै मानो अपने में मृत्युंजयी बन जाऊँ। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी भी विद्यालय में कहते है कि मृत्यु को विजय करने वाला ब्रह्मचारी कहलाता है। ब्रह्मवर्चोसि कहलाता है वह ब्रह्मचरिष्यामि बन जाता है। मेरे पुत्रे! देखो, ब्रह्मचारी चाहता है कि मैं मृत्युंजयी बन जाऊँ ब्रह्मचारी उसे कहते है जो अन्धकार से प्रकाश में चला जाता है। अन्धकार को मानो देखो, अज्ञान को त्याग करके नाना रूढ़िवाद को त्याग करके वह प्रकाश में रत हो जाता है। वही तो ब्रह्मचरिष्यामि बनता है। मेरे प्यारे! देखो, जो प्रभु को एक–एक कण–कण में दृष्टिपात् करने वाला ब्रह्मचारी कहलाता है।

अज्ञान

आओ, मुनिवरो! विचार विनिमय क्या देखो, प्रत्येक मानव यह चाहता है कि मेरी मृत्यु न हो जाए। नाना प्रकार के अनुष्ठान, याग इत्यादि जितने भी क्रियाकलाप है उनके गर्भ में केवल यही है कि मेरी मृत्यु न हो जाए। बेटा ! शरीर को त्यागने का नाम मृत्यु नहीं कहते। मुनिवरो! देखो, मृत्यु उसे कहते है जो अज्ञान में लगा रहता है। जो प्रकाश का त्याग करके अंघकार में चला जाता है। अंधकार किसे कहते है? अज्ञान को। अज्ञान किसे कहते है? मानो देखो, जो ज्ञान की प्रतिभा को न जान करके और ज्ञान को अज्ञान में स्वीकार कर लेता है। ज्ञान को मानो, अज्ञान में रत हो करके रहता है, वही अज्ञान कहलाता है।

ज्ञान

मुनिवरो! देखो, ज्ञान किसे कहते है? ज्ञान कहते है जहाँ परमपिता परमात्मा को सर्वत्रता में दृष्टिपात् किया जाता है। मुनिवरो ! मानव दृष्टिपात् कर रहा है वहा परमात्मा को, उसकी महिमा को, उसके विज्ञान को निहार रहा है। मेरे पुत्रे ! देखो, उसका नाम ज्ञान है। क्योकि ज्ञान में जब मानव प्रभु के राष्ट्र में अपने को स्वीकार कर लेता है तो मेरे पुत्रे! देखो, प्रभु के राष्ट्र में बेटा, न तो रात्रि होती है, न आलस्य होता है, न प्रमाद होता है। और जहाँ रात्रि, आलस्य और प्रमाद नहीं होता वहाँ बेटा! अंधकार नहीं हुआ करता है और जहाँ अंधकार नहीं होता, वहाँ सदैव प्रकाश ही रहता है।

हृदय रुपी यज्ञशाला

तो आओ, मेरे पुत्रे! विचार क्या चल रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की सृष्टि में विद्यमान है, हमें उन क्रियाकलापों में सदैव रत रहना चाहिए, जिन क्रियाओ के करने से हम मृत्युंजयी बन जाए। शब्द विज्ञान को ऊँचा बनाए। मानो देखो, ज्योति को ऊँचा बनाए और मुनिवरो! देखो, प्राण सुगन्ध को ऊँचा बनाएँ और मुनिवरो! देखो, ''रसो स्वादनां ब्रह्मे प्रीति वर्णसुतां ब्रह्मा'' इन सर्वत्र को एक रस बना करके हृदय रूपी यज्ञशाला में जो ब्रह्मचरिष्यामि बन करके मेरे पुत्रे! देखो, उस साकल्य का याग करता है वह बेटा! योगेश्वर कहलाता है।

तो मेरे प्यारे! मैं विशेश चर्चा न देता हुआ, विचार यह चल रहा है कि मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार के अनुष्ठानों के गर्भ में, याग इत्यादियो के गर्भ में यही है कि हम मृत्युंजयी बन जाए, हमारी मृत्यु न आ जाए। प्रभु के जड़वत् और चैतन्यवत् की जहाँ चर्चा आती है। यह परमपिता परमात्मा का अनूठा जगत् है, अनूठा उसका विज्ञान है। विज्ञान की चर्चाएँ, धनुर्याग की चर्चाएँ तो मुनिवरो! कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् अब यह समाप्त होने जा रहा है।

आनन्द की प्राप्ति

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम माता वसुन्धरा की याचना करते चले जाए, माता वसुन्धरा की गोद में बेटा ! आनन्द प्राप्त होता है। परमात्मा चाहे माता के रुप में हो, चाहे पृथ्वी के रूप में हो यह सब वसुन्धरत्व कहलाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, हम मृत्यु से पार हो जाए यह आज का हमारा वाक् है। कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! मैं धनुर्याग का जो दीक्षान्त उपदेश होता है ब्रह्मचारियो का, आचार्यों का और ब्रह्मवेत्ताओं का, वैज्ञानिकों का उसकी चर्चाएँ मै कल प्रगट करुँगा। आज का विचार अब समाप्त अब वेदो का पठन पाठन होगा।

आज के विचारो का अभिप्राय ये कि जितना भी यह जड़ और चैतव्यवत् में जगत् दृष्टिपात् आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्मांड के मूल में वे परमपिता परमात्मा विद्यमान है। प्रत्येक वेद मन्त्र बेटा! हमें ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ा रहा है। उसी उड़ान में हम सदैव रत रहते है। यह आज का वाक् अब समाप्त अब वेदों का पठन–पाठन होगा। समय मिलेगा तो बेटा हम शेष चर्चाएँ कल मुनिवरो! देखो, दीक्षान्त के उपदेशों की चर्चाएँ, विद्यालयों के क्रियाकलापों की चर्चाएँ, धनुर्याग किसे कहते है? यह चर्चाएँ कल होगी आज का वाक् समाप्त अब वेदो का पठन–पाठन होगा। **20–1–1988 ग्रा. सुवाहेड़ी बिजनौर**

३ माता अरुन्धती का दीक्षान्त उपदेश–दिनांक–21–01–1988

जीते रहो,

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस पवित्र वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद–वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुण गान किया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्त है, और वे पुरोहित है और पराविद्या में सदैव रत रहने वाले है। मानो वे परमपिता परमात्मा विष्णु है, जो कल्याणकारी है, हमारा रक्षक है और पालन करने वाला है। वे परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी स्वरूप है मानो विज्ञान उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है, और याग उसका आयतन माना गया है। मानो वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी, आभा में सदैव रत रहने वाले है। आज का हमारा वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महती का

वर्णन कर रहा है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी मानों सर्वत्रता में निहित रहने वाले हैं। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक उस महामना देव की महिमा के सम्बन्ध में, भिन्न–भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ी जाती हैं मानो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का जो स्रोत है वह प्रायः प्रत्येक प्राणी के अन्तर्हृदय में गमन करता रहता है। और वह उसी में रहता है। तो इसलिए परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके गुणों का गुणगान गाते हुए हम अपने देव की महिमा का गुणगान अपने आन्तरिक जगत् में मानों उसकी प्रतिभा का दर्शन करते रहे।

विष्णु स्वरूप

आज का हमारा वेद मन्त्र ये कह रहा है ''यागां'' नाना प्रकार के यागों का चयन अथवा उसका चलन और उससे जो ज्ञान और विज्ञान है, प्रायः उसका वर्णन आ रहा था। जहाँ वेद का मन्त्र हमें यागां रुद्र भागम् मानों, देखो याग की प्रतिभा का वर्णन कर रहा है। हमारा वेद मन्त्रः मानों वह जो अनूठा आध्यात्मिक विज्ञान है जिस आध्यात्मिक विज्ञान में मानव परम्परागतों से उसके ऊपर अन्वेशण, अनुसन्धान प्रायः करता रहा है। जहाँ आध्यात्मिक वाद का वर्णन है वहीं आज के वैदिक साहित्य में, वेद के मन्त्रों में मेरे पुत्रों! उस परमपिता परमात्मा को विष्णु के रूप में वर्णन किया जा रहा था। क्योंकि परमपिता परमात्मा का नाम विष्णु है जो हमारा कल्याण करने वाला है, रक्षक है। हमारे वैदिक साहित्य में बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, उन पर्यायवाची शब्दों में विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है। विष्णु नाम आत्मा का है, जहाँ आत्मा का नाम विष्णु है, वहाँ माता का नाम भी विष्णु कहा जाता है, परन्तु जहाँ माता का नाम विष्णु कहा जाता है, वहीं राजा और सूर्य इत्यादि को भी विष्णु के नाम से वर्णन किया जाता है।

परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्रः ये कह रहा है कि हे विश्णु! तू कल्याणकर्त्ता है, तू ध्रुव है, मानो जो ध्रुवा में गमन करने वाला हो वही तो पालनकर्त्ता है। माता को विष्णु कहते हैं माता सतोगुण है, पालना करने वाली है। तो वही विष्णु रजोगुण है वही तमोगुण है, वही सतोगुण माना गया है परन्तु देखो, भिन्न भिन्न रूपों में देखो, एक में षासन है एक में पालन है, तो एक में उत्पत्ति का मूल विद्यमान रहता है। तो मेरे पुत्रों विचार आता रहता है कि वे परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञानमयी एक अनन्तमयी ज्ञान वृत्तियों में रत रहने वाला, विष्णु शब्द है। बेटा! आत्मातत्त्व और आत्मचिन्तन वादियों के लिए बड़ा विशेषज्ञ माना गया है।

याग

परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्रः मानों देखो, याग के सम्बन्ध में कुछ विवेचना कर रहा था जहाँ नाना प्रकार के विषय, नाना प्रकार की विवेचनाएँ, प्रत्येक वेद मन्त्रों में बेटा! उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन तो होता ही रहता है। परन्तु आज के हमारे वेद के पठन–पाठन में भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का चयन भी आ रहा था हमारे यहाँ जैसे अश्वमेघ याग है, अजामेघ याग है, वेदीयाग है, रुद्र याग है, विष्णु याग है, ब्रह्म याग है, वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है और भी भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा है। जैसे पुत्रेष्टी याग है, जैसे आज हम बेटा! देखो धनुर्याग के सम्बन्ध में प्रायः विवेचना करते रहते हैं।

मृत्युंजयी

तो आओ मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेद मन्त्र, वेद का वाक् हमे क्या प्रेरित कर रहा है, क्या प्रेरणा दे रहा है, क्योंकि ये जो मानव है ये प्रेरणा का स्रोत है, ये प्रेरणा को पाकर के ही अपना विकास करता रहता है। अपने में महानता और अपनी अन्तरात्मामयी ज्योति को जागरुक करता रहता है। ये परम्परागतों से बेटा! सार्वभौम एक विचार है, जिस विचार के ऊपर हम सदैव अपने में रत होते रहें हैं। तो विचार आ रहा था बेटा! हमारे वैदिक साहित्य में ''भ्रू व्रन्तं ब्रह्मे व्रताः लोकां मृत्युः'' मेरे प्यारे! देखो प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा बनी रहती है, कि मैं मृत्यु को न प्राप्त हो जाऊँ, वही हमारा मौलिक रूप में एक मृत्यु का विषय बना हुआ है। प्रत्येक मानव के अन्तर्हृदय में बेटा! यह आकांक्षा लगी रहती है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। ब्रह्मचारी अपने विद्यालय में अध्ययन करता है अध्ययन करता हुआ वह मानों अपनी भिन्न–भिन्न क्रियाओं में रत होता रहता है। कहीं मानो देखो, योग में परिणत हो जाता है, कहीं साधना के क्षेत्र में, आचार्य की आज्ञा पाकर के साधना में रत हो जाता है, कहीं मेरे प्यारे! और भी भिन्न–भिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में वह मानव अपने में रत हो जाता है। परन्तु उसके मन में जो प्रबल इच्छा है वह यही बनी रहती है कि मैं मृत्युंजयी बन जाऊँ। मेरी मृत्यु न आ जाए।

मेरे प्यारे! देखो, इस सम्बन्ध में बहुत–सा विचार आता रहता है। हमारे यहाँ ऋषि मुनि एक स्थलियों पर विद्यमान होकर के इसके ऊपर प्रायः विचार विनिमय करते रहे हैं। और विचारते रहे हैं कि मृत्यु के सम्बन्ध में चिन्तन किया जाए, मनन किया जाए। प्रत्येक मानव अपने में मानो विचारता है कि मैं मृत्युंजय बन जाऊँ, मैं अग्निस्वरूप हो जाऊँ मानो देखो, मैं अन्धकार में न रह सकूँ।

समाज का कल्याण

ऐसा विचार जब आता रहता है, तो बेटा! आओ, आज मैं तुम्हें उसी विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ, जिस विद्यालय में नाना ऋषिवर विद्यमान हो कर के अपनी पंक्तियों में विद्यमान होकर के अपना अपना उपदेश प्रारम्भ करते रहे हैं अपना–अपना निर्णय देते रहे हैं, क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों की एक बड़ी विचित्र देन रही है। वे यह विचारते रहे हैं, आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय करने का उन्होंने प्रयास किया और ये विचारा कि विज्ञान का जब दुरुपयोग हो जाएगा तो राष्ट्र और समाज अन्धकार में चला जाएगा और यदि मानो इसका सदुपयोग होगा, दोनों का–ज्ञान और विज्ञान, भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान का समन्वय होना दोनों के ऊपर अध्ययन करना और दोनों की क्रियात्मकता में लाना ही मुनिवरों! देखो, वह विज्ञान का सदुपयोग होता है। उससे राष्ट्र और समाज दोनों का कल्याण है।

महर्षि विश्वामित्र का धनुर्याग

तो मेरे प्यारे! देखो, उस विचार को ले कर के हमारे यहाँ त्रेता के काल में बेटा! देखो, दण्डक वनों में महर्षि विश्वामित्र एक धनुर्याग में लगे हुए थे। मेरे पुत्रों! देखो, धनुर्याग के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न प्रकार का विचार विनिमय होता रहा है। हमारे यहाँ जितनी भी गोष्ठियाँ होती रही हैं, जितने भी मानो विचारक रहे हैं उस सर्वत्रता का नाम एक याग रूप माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, जब हमारे यहाँ किसी भी प्रकार का अषोभनीय भी विचार विनिमय होता रहा है तो देवत्व प्राणियों में बेटा! उसका खण्डन किया है, मानो देखो, उसका मण्डन नहीं किया गया। क्योंकि जहाँ समाज की हानि और राष्ट्र का जहाँ देखो, प्रभुत्व में किसी प्रकार का अन्धकार आ जाए उस क्रिया कलाप को देखो, मुनिवरों! खण्डन में लाने का आचार्यों ने, राष्ट्रवेत्ताओं ने प्रयत्न किया है, कि इसका खण्डन होना चाहिए।

ऋषियों का समाज

तो मेरे प्यारे! मैं उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा अश्वमेघ मानों उसके रूप में देखो, धनुर्याग का वर्णन होता रहा है। हमारे वैदिक साहित्य में धनुर्याग का बड़ा वर्णन आया है। उस धनुर्याग में बेटा! देखो, भिन्न–भिन्न प्रकार के गायन के सम्बन्ध में भी चर्चा आई है। परन्तु आज का विचार ये कि धनुर्याग मेरे पुत्रों! देखो, महाराज विश्वामित्र के यहाँ धनुर्याग होता रहा है। वह धनुर्याग में नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों की विद्याओं का प्रायः मानो अध्यापन और उनका अध्ययन कराने का क्रियात्मक प्रायः कर्तव्य रहा है। उसमें रत होते रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, एक वर्ष के पष्चात् उनका दीक्षान्त उपदेश होता है। तो मुनिवरों! उन्होंने ऋषि मुनियों को निमन्त्रित किया। महर्षि लोमष, कागभुषुण्डी, माता अरुन्धधी, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि भारद्वाज, महर्षि रेनकेतु मेरे पुत्रों! देखो, दद्दड़ गोत्र में जन्म लेने वाले सोमकेतु ऋषि महाराज और ब्रह्मचारी व्रेतकेतु और महर्षि प्रवाहण और महर्षि षिलक, महर्षि दालभ्य और मुनिवरों महर्षि वेशम्पायन और भी नाना, ऋषि मुनियों का बेटा! समाज एकत्रित हुआ। विद्यालय में जब एक पंक्ति लग गई और ब्रह्मचारी अपना अपना आभाकृतम्

मानो देखो, एक सभापति का निर्वाचन होता है हमारे यहाँ जो निर्वाचन प्रणाली है वह परम्परागतों से ही बड़ी विचित्र मानी गई है। ये मानो, ऋषि मुनियों के काल से ही अपने में मानो देखो, निर्वाचन करते रहे हैं और निर्वाचन प्रणाली में मेरे पुत्रों! देखो, राष्ट्र का भी निर्वाचन और ऋषि मुनियों का भी निर्वाचन होता रहा है। मुझे स्मरण आता रहता है कि इन्द्र का भी निर्वाचन होता रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, याग के माध्यम से इनकी सर्वत्र एक निर्वाचन प्रणाली बड़ी विचित्र मानी गई है।

दीक्षान्त उद्बोधन

तो आज बेटा! मैं उस क्षेत्र में, निर्वाचन प्रणाली में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ विचार केवल यह देने के लिए आया हूँ मेरे पुत्रों! देखो, एक पंक्ति बुद्धिमान समाज की, जिसमें ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मवर्चोसि और मुनिवरों देखो, ब्रह्मचरिश्यामि एक पंक्ति में विद्यमान हो गए, धनुर्यागी भी विद्यमान है। मेरे पुत्रों! देखो जब वहाँ विचार विनिमय होने लगा, तो देखो, सभा का प्रारम्भ हुआ। जब प्रारम्भ होने लगा, तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने मेरे पुत्रों! देखो, माता अरुन्धति से यह प्रार्थना की, हे दिव्यासे! तुम बाल ब्रह्मचारियों को, अपने उद्‌गार प्रगट करो, तुम्हारे उद्‌गारों से ही देखो, इसका षुभारम्भ होगा।

तो मुनिवरों! देखो, ''मां ब्रहे'' माता अरुन्धती उपस्थित हुई और माता अरुन्धती ने अपना उपदेश देना आरम्भ किया–हे ब्रह्मचरिश्यामि! हे ब्रह्मचारियों!! तुम मानो सब मृत्यु की विजय में लगे हुए हो, मुझे यह ध्यान हो गया है। मेरा यह मानो अनुभव है कि तुम्हारा जो विचार है, तुम्हारा जो क्रियाकलाप है वह मानो देखो, अन्धकार से दूरी होने का है, और प्रकाश में जाने का है। हे ब्रह्मचारी! अप्रतम् मानो देखो, तुम्हारा ये जो विद्यालय है, यह महान पवित्र और पावन भूमि में है। जिस भूमि पर देखो, महर्षि विश्वामित्र जैसे तपस्वी और अस्त्रों–शस्त्रों को जानने वाले तुम्हारे विद्यालय में विद्यमान है, और वह तुम्हें शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। मानो देखो, यह तुम्हारा सौभाग्य है, हम सभी का यह सौभाग्य है। मानो देखो, इस आभा में लगे हुए हैं, कि हमारा विद्यालय मानो देखो पवित्रता की वेदी पर होना चाहिए।

वेद मर्मज्ञ विष्णु

माता अरुन्धती ने कहा कि तुम्हें यह प्रतीत है कि तुम्हें विष्णु बनना है, और विष्णु वह कहलाता है, जो वेद के मर्म को जानता है, जो वेदज्ञ कहलाता है, जो आत्मा को जानने वाला है वह, वह विष्णु कहलाता है। जहाँ तुम्हारा यह विद्यालय मानो, जहाँ यह धनुर्याग हो रहा है, और धनुर्याग में तुम्हारी जो उड़ान है यह भी मुझे प्रतीत है। देखो, लोक–लोकान्तरों तक तुम्हारी उड़ान है; तुम्हारे यहाँ महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज जैसे विद्यमान है। भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार के विद्यालयों में शिक्षाएँ और यज्ञशालाओं में मानो देखो, उनका क्रियाकलाप रहा है। और इनके यहाँ नाना प्रकार का विज्ञान अपने में पनपता रहा है। तुम्हारा विज्ञान भी इसी प्रकार पनपना चाहिए, क्योंकि, इस पृथ्वी से ले कर के मानो लोक–लोकान्तरों तक तुम्हारी उड़ानें होनी चाहिए।

मण्डलों का प्रभाव

मुझे स्मरण है कि मानो देखो, जैसे बृहस्पति, मंडल है, वशिष्ठ मंडल है दोनों मण्डलों की छाया जब माता के गर्भस्थल में प्रवेश हो जाती है तो मानों देखो, वहाँ अन्तरात्मा को एक विशेष प्रकार का अमृत प्रदान किया जाता है। और वही अमृतमयी बन कर के देखो, तुम्हारा जीवन शुद्ध हो जाता है। हे ब्रह्मचारियों! हमारा यह जो मानवीय शरीर है, जिस शरीर में तुम विद्यमान हो इसमें देखो, तीन प्रकार का हमारा यह आत्मा का शरीर माना गया है। यह विष्णु रूपी आत्मा का तीन प्रकार का शरीर है, एक स्थूल है, एक सूक्ष्म और मानो देखो एक कारण शरीर कहलाया गया है, ये कारण शरीर और सूक्ष्म शरीर अपने में मानो देखो तत्त्वावृत्तियों में रत रहने वाला है। परन्तु इसी प्रकार देखो, जब हम स्थूल में साधना करते हैं और साधना में भी परमाणुओं को जानने लगते हैं, परमाणुओं को ज्ञान करके क्योंकि परमाणुवाद अपने में बड़ा विचित्र है। जहाँ माताएँ देखो अपने में अध्ययन करने वाली रही है, माताओं ने अध्ययन किया, एक परमाणुवाद पर तो देखो, अपनी अन्तरात्मा में, अपने गर्भ में एक शिशु पनप रहा है, मानो देखो, अन्तर्मुखी होकर के प्रायः उसको दृष्टिपात करती रही है। और माता उसे अपने गर्भस्थल में शिक्षा देना प्रारम्भ कर देती है। ''ब्रह्मवर्चोसि ब्रह्मणा!'' मानो यह तो तुम्हें प्रतीत है कि माताओं को हमें कितना सुयोग्य, माताओं को कितना आदरसूचक बनाना है। क्योंकि माता हमारी मातृवत् कहलाती है। यह वृत्तियों को बना देती है। मानो देखो, हमें उस माता को पूजन करना है।

निर्माण प्रक्रिया

हमारी तीन प्रकार की माता होती है एक माता जो जन्म देने वाली है, द्वितीय माता का नाम पृथ्वी है, और तृतीय माता का नाम चेतना है; जो कि परमपिता परमात्मा के स्वरूप में माना जाता है। परन्तु देखो, जब ये विचारा जाता है कि जननी माता के गर्भस्थल में जब, शिशु विद्यमान होता है तो हे ब्रह्मचारियों! देखो माता के गर्भस्थल में शिशु पनप रहा है। मानो देखो, माता को ज्ञान नहीं है कैसे पनप रहा है, परन्तु देखो, माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। वह चन्द्रमा से अमृत को ग्रहण करती रहती है और उसी नाड़ी का समन्वय माता की पुरातत् नाम की नाड़ी से होता है। और पुरातत् नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से होता है। वह रस मानो देखो, लोरियों में परिपक्व बनता है। वहाँ से पंचम नाड़ी बन करके, मेरे पुत्रों! देखो, माता की नाभि से बालक की नाभि का समन्वय हो जाता है। माता की नाभि से शिशु की नाभि का समन्वय रहता है। अमृत जा रहा है, अमृत प्रदान किया जा रहा है।

जननी माता

तो मेरे प्यारे! देखो, मेरी भोली माता इस ज्ञान और विज्ञान से वंचित रहती है। विचार आता है, कि परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान मुनिवरों! कितना अनूठा माना गया है। हे मेरे प्यारे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है, मानो देखो, अमृत जा रहा है, मेरी भोली माता को ज्ञान नहीं हो रहा है। कहीं बुद्धि का निर्माण हो रहा है, कहीं मानो देखो, मनस् तत्त्व अपनी आभा में गति कर रहा है, प्राण और आत्मा की सहायता ले कर के, मेरे पुत्रों! देखो, कितनी भव्यता में परिणत रहता है। मुनिवरों! देखो, अपने में देवत्व ही रक्षा करने वाले हैं। मेरे प्यारे! चन्द्रमा अमृत देता है, सूर्य उष्ण बना रहा है। मानो वह प्रकाश दे रहा है, अग्नि उष्ण बना रही है, और वायु प्राण दे रहा है और अन्तरिक्ष अवकाश दे रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, वह प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है, कितना महान है आज हमें उसकी महानता पर विचार विनिमय करना चाहिए। उसके ज्ञान और विज्ञान पर विचार करना चाहिए। माता अरुन्धती ने कहा–हे ब्रह्मचारियों! उस माता को हमें आदर का सूचक बनाना है जिस माता के गर्भस्थल में हमारे शरीर में नस नाड़ियों का निर्माण होता है। मानो देखो, आज्ञा चक्र और सूचना केन्द्रों का जहाँ निर्माण होता है।

पृथ्वी माता

मेरे प्यारे! द्वितीय माता कौन है? वह पृथ्वी है। जब इस जननी माता के गर्भ से हम पृथक् हो जाते है, तो देखो, उससे पृथक् होते ही माता वसुन्धरा, पृथ्वी की गोद में आ जाते हैं। वह मानो देखो, पृथ्वी की गोद आंगनमयी ''प्रणं ब्रह्मे'' इस माता वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! क्या पदार्थ नहीं है, मेरे पुत्रों! देखो, पृथ्वी के गर्भ में कहीं स्वर्ण का निर्माण हो रहा है, कहीं स्वर्ण के परमाणुओं को आदान प्रदान हो रहा है, कहीं रत्नों का निर्माण हो रहा है। नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ पनप रहा है, कहीं जल को शक्शिाली बनाया जा रहा है। बेटा! वही जल सूर्य की किरणों से पनपता रहता है। माता के गर्भस्थल में वहीं जल मुनिवरों! वाहनों के क्रियाकलापों में परिणत हो जाता है। और वाहन अपने में गतिवान बन जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, इस पृथ्वी माता को वसुन्धरा के रूप में ही नहीं, वैदिक साहित्य में इसको बेटा! अहिल्या के रूप में माना है। यह अहिल्या कहलाती है। मुनिवरो! देखो, ज्ञान और विज्ञान की आभा में अहिल्या नामक नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया गया। अहिल्या मानो देखो, वह पृथ्वी है, जिसके गर्भ में अन्न उत्पन्न किया जाता है, अन्नाद को लिया जाता है। और वह उबड़ भूमि बराबर कृति पर, देखो, इसी प्रकार भूमि में अन्न उत्पन्न किया

जाता है। तो मेरे प्यारे! अहिल्या कृतिभा यन्त्रों का निर्माण देखो, उद्दालक गोत्र में, शिकामकेतु के यहाँ हुआ। उसी विज्ञान की उपलब्धि भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ कदली वनों में हुई। देखो, नाना ऋषियों ने इस प्रकार की उड़ाने उड़ी हैं।

आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान हमारे यहाँ साक्षी रहा है तो मुनिवरों! देखो, वैदिक साहित्य के अध्ययन करने से यह प्रतीत होता है, कि ज्ञान और विज्ञान अपनी स्थलियों में कितनी ऊँची उड़ाने भरता रहा है। तो मेरे प्यारे! जब माता जननी के गर्भ से शिशु, बेटा! पृथ्वी के गर्भ में आते हैं तो ये पृथ्वी वसुन्धरा, ममत्व को धारण करती हुई, नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करती रहती है। और वही खनिज पदार्थ मानो देखो, हम अपने में ''वृतम् देखो विज्ञान के, ज्ञान के क्षेत्र में क्रियात्मकता में प्रवेश हो जाते हैं।

चेतना

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार यह क्या कह रहा है कि जब यह मानव साधना करता हुआ, प्रभु के ज्ञान और विज्ञान को जानता हुआ अग्रणीय बनता है, तो बेटा! यह पृथ्वी माता के आंगन को त्याग करके यह मानो चेतनामयी प्रभु के आंगन में प्रवेश कर जाता है। और वह प्रभु कैसा है? बेटा! जो सर्वत्र विद्यमान है, जो मानों जड़ और चेतन दोनों में रत रहने वाला है, उसी के गर्भ में बेटा! ये आंगन मानो यह चेतनामयी, आनन्द में प्रवेश हो जाता है, आनन्दवत् को प्राप्त हो जाता है।

तो विचार आता है, बेटा! वह प्रभु भी वसुन्धरा के रूप में परिणत किया गया है। तो मुनिवरो! वेद की विदुषी माता अरुन्धती ने कहा – हे ब्रह्मचारियों! हम सब यहाँ विद्यमान है और धनुर्याग के सम्बन्ध में जो मेरा उपदेश है वह यह कि हमें माता का पूजन करना है, प्रभु को साक्षी बनाना है। आज जिस विज्ञान में तुम लगे हुए हो; परमाणुवाद में, अणुवाद में और एक–एक परमाणु का दूसरे परमाणु से मिलान कर रहे हो जिससे नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों का निर्माण हो रहा है, यह बहुत प्रियतम है। मेरे उपदेश का अभिप्राय यह है–कि तुम प्रभु को अपने से दूर न कर जाओ। जिस भी काल में विज्ञान के वांगमय में मानव का प्रवेश होता रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, जिस भी काल में प्रभु को अपने से दूरी कर दिया है धर्म और मानवता को मानव ने त्याग करके देखो, विज्ञान में रत हो गया है तो उसी काल में विज्ञान का दुरुपयोग हुआ है और मानव, अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत हो गया है।

तीन प्रकार के शरीर

मानो देखो, मेरा उपदेश केवल ये है कि तुम मातृवत् मानो चेतनावत् देखो, किसी भी माता को अपने से दूरी मत करो। हमारे यहाँ ममत्व को धारण करने वाली जननी माता है, पृथ्वी है और चेतनामयी है। देखो, तीनों के रूप में हम रत रहते हैं। इसी प्रकार हमारे तीन प्रकार के शरीर कहलाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, माता के गर्भ में जो निर्माण होता है, वह स्थूल शरीर कहलाता है। और पंचमहाभूतों की वासना का एक शरीर कहलाता है जिसको हमारे यहाँ सूक्ष्म कहा जाता है, यह सूक्ष्म शरीर है। जिससे मानो देखो, मन, बुद्धि, चित्त मेरे पुत्रों! मन, बुद्धि, चित्त अपने में रत होते हुए, पंच तन्मात्राओं का स्वरूप धारण करके और प्राणों में रत होता हुआ, वह सूक्ष्मतम् कहलाता है। एक देखो, कारण शरीर है। मेरे प्यारे! जो प्रभु से अपना तारतम्य मिलाना चाहता है। ज्ञान और प्रयत्न उसके प्रमुख रूप से रहते हैं, देखो, उसकी आभा में रत रहते हैं।

तो विचार आता रहता है कि माता अरुन्धती ने कहा – ''हे ब्रह्मचारियों! तुम इस विद्यालय में विद्यमान हो, और तुम्हारे आचार्य ने देखो, महर्षि विश्वामित्र ने तपस्या करते–करते अपने में मानों राजा से राजर्षि हुए हैं और राजर्षि से तपस्या करते हुए यह मानों देखो ब्रह्मवेत्ता बन गए। इसी प्रकार तुम्हें भी ब्रह्मवेत्ता बनना है और ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए तुम्हें भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों को समन्वय रूप में वर्णित करना है।

मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने एक उदाहरण देते हुए कहा कि मैने एक समय अध्ययन किया है कि महर्षि मार्कण्डेय मुनि महाराज का देखो, चन्द्रमा और पृथ्वी के मध्य में एक आश्रम विद्यमान था। वहाँ देखो, विज्ञान की आभा वाले परमाणुओं का समूह विराजमान हो करके यन्त्र स्थित हो जाता था। एक समय महाराज षिव और पार्वती भी मानो उस स्थली पर पहुँचे हैं। तो विचार आता रहता है कि इसी प्रकार आध्यात्मिकवादी जो पुरुष है, बेटा! वे स्थूल शरीर सूक्ष्म षरीर, कारण शरीर को जान करके मेरे पुत्रों! देखो, अन्तरिक्ष में विषुद्ध रूप में होकर के देखो विचरण किया करते हैं।

विभिन्न वायु

मेरे पुत्रों! देखो, वायुमण्डल में एक प्रकार की वायु ही नहीं है अनन्य प्रकार की वायु भी इस ब्रह्माण्ड को गति दे रही हैं। अनन्य प्रकार की अग्नियाँ इसे गति दे रही हैं। बेटा! देखो, यह नाना प्रकार की आभा वाला ब्रह्माण्ड है। जिसके ऊपर हमें विचार विनिमय करना है। एक वायु वह है, जो बेटा सूर्य मण्डल में गमन करती है। एक वायु वह है जो मृचिका नामक वायु है, एक कृतिभान वायु है, जो मेरे पुत्रों! देखो शानि और सूर्य मण्डल के मध्य में गति करती रहती है। आज मैं तुम्हें विज्ञान के क्षेत्र में नहीं ले जाना चाहता हूँ। केवल तुम्हें यह उच्चारण करने के लिए आया हूँ कि यह विचारों का बड़ा विशाल एक वन है, जो विचारों का एक समूह कहलाता है।

परन्तु विचार केवल यह कि मुनिवरों! देखो, माता अरुन्धती ने अपना उपदेश उच्चारण करते हुए कहा – हे ब्रह्मचारियों! यह तुम्हारे आचार्यजन देखो, जैसे तीनों रूपों में राजा, साधक और मानो ब्रह्मवेत्ता बन करके ब्रह्म की उड़ाने उड़ते हैं, उसी प्रकार नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों से तुम्हारी प्रायः गति होनी चाहिए और विज्ञान तुम्हारा साक्षी होना चाहिए।

क्योंकि मुझे वह काल, मैंने वह साहित्य अध्ययन किया है जब देवर्षि नारद मुनि के यहाँ देखो, ब्रह्मचारी प्रहलाद अध्ययन करते थे तो मानो उन्होंने एक ''ध्रुवव्रतम्'' नाम के यन्त्र का निर्माण किया था। जिस यन्त्र में विद्यमान होकर के वह सूर्य की परिक्रमा करते रहते थे। मानों देखो, ध्रुव मण्डल की भी उन्होंने प्रायः परिक्रमा की है।

महर्षि तत्त्व मुनि का विद्यालय

देखो, आज मैं तुम्हें उसी आंगन में ले जाना चाहती हूँ, कि एक समय मैं, ब्रह्मचारीजन, मेरे पूज्य वशिष्ठ मुनि महाराज भ्रमण करते हुए देखो, कजली वनों में पहुँचे, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ, जो यहाँ विद्यमान है। इनका विज्ञान बड़ा विचित्र है, इनके यहाँ विज्ञान की उड़ान को दृष्टिपात करके हम महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के विद्यालय में पहुँचे। महर्षि तत्त्वमुनि महाराज देखो, दद्दड़ गोत्र में उनका जन्म हुआ है और वह दो सौ, चौरासी वर्ष के अखण्ड तपश्चर में लाने वाले, जब उनके समीप पहुँचे तो उन्होंने कहा कि–आओ, भगवन! और उन्होंने अपने विद्यालय का निरीक्षण कराया।

जब विद्यालय को दृष्टिपात कराने लगे तो उनके विद्यालय में एक विज्ञानशाला थी जिस विज्ञानशाला में नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे, उन्होंने उस समय एक उपग्रह में उन्होंने ''अप्रतं ब्रह्मे'' देखो, अपना यन्त्र, अन्तरिक्ष में त्यागा। और जब अन्तरिक्ष में उड़ाने उड़ने लगे तो, उसमें श्वेता शुन्धि और व्रेतकेतु ब्रह्मचारी दोनों ने विद्यमान होकर के उड़ान उड़ी हैं और उड़ान उड़ते ही सबसे प्रथम देखो, वह चन्द्रमा में पहुँचा। चन्द्रमा से उड़ान उड़ी तो वह बुद्ध में चला गया, और बुद्ध से उड़ान उड़ी तो वह शुक्र में चला गया, और शुक्र से उड़ान उड़ी तो मानों देखो, वह मंगल मण्डल में चला गया और मंगल मण्डल से उड़ान उड़ी, तो कृतिका मण्डल में चला गया, और कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी, तो रोहिणीकेतु मण्डल में चला गया और रोहिणी केतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो वह मानों देखो, अरुन्धती मण्डल में, अरुन्धती मण्डल से उड़ाने उड़ी तो वशिष्ठ मण्डल में चला गया, और वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी, तो विश्वाकृतिका मण्डल में चला गया, जब कृतिका मण्डल में यान पहुँचा तो उसने जब वहाँ से उड़ान उड़ी तो व्रेतकेतु मण्डल और व्रेतकेतु मण्डल से जब वह स्वाति और मूल नक्षत्रों में चला गया तो मानों देखो, वहाँ उसकी गति भिन्न हो गई।

तो परिणाम क्या? मैंने यह दृष्टिपात किया कि बहत्तर लोकों का भ्रमण करके वह यान मानों देखो, पुनः महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के विद्यालय में प्रवेश कर गया।

तो इस प्रकार का विज्ञान देखो प्रायः, हमारे यहाँ दृष्टिपात होता रहा है कि जिसको हम धनुर्याग की संज्ञा प्रदान करते रहते हैं। हे ब्रह्मचारियों! देखों, मुझे कुछ विशेष उपदेश तो तुम्हें देना नहीं है, केवल यह कि भौतिक विज्ञान में तुम्हारी गति हो, तुम्हे यन्त्र सूर्य मण्डल में जाने वाले हो। परन्तु देखो,

तुम्हारा आध्यात्मिकवाद भी, आत्मिक चिन्तन भी इतना विचित्र रहना चाहिए जिससे मानो तुम्हारी गति ऊर्ध्वा हो जाए, तुम्हारा जीवन सार्थक बन करके अपने जीवन में महानता की ज्योति में प्रवेश कर जाओ। क्योंकि कोई भी आध्यात्मिकवेत्ता हो जब भी वह मानों देखो, आत्मिक विज्ञान में जाने का प्रयास करता है, आत्मा के मार्ग को जाना चाहता है तो वह भौतिकवाद के मार्ग से होकर के जाता है। जितना भी मानों देखो, सूर्य से लेकर के और शब्द विज्ञान तक यह सब भौतिकवाद कहलाता है। और इस भौतिकवाद के मार्ग से होकर के जाने वाला मेरे पुत्रों! देखो, आध्यात्मिकवाद में जाकर के परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! जब तक वह शब्द विज्ञान की, शब्द की विकृतियों को नहीं जान सकता, तब तक वह आग्नेय काण्ड को नहीं जान सकता अथवा अग्नि क्या—क्या कर सकती है यह नहीं जान सकता।

महर्षि शिकामकेतु का विद्यालय

मुनिवरों देखो, जब महर्षि शिकामकेतु उद्दालक का विद्यालय स्मरण आता है तो वहाँ बेटा! याग हो रहा है, स्वाहा उच्चारण किया जा रहा है, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के शब्द द्यौ लोक में जा रहा है, वह द्यौ लोक में प्रवेश कर रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, वह उनका क्रियाकलाप, उनके शब्द, शब्दों के साथ में चित्र वह, अन्तरिक्ष में गति कर रहे हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, उद्दालक गोत्र में शिकामकेतु के यहाँ बेटा! अपने पचासवें महापिता के यन्त्रों में चित्र का दर्शन होता रहा है। आज बेटा मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल तुम्हें यह उच्चारण करने के लिए चला हूँ, मुनिवरों! देखो हमारे यहाँ भिन्न—भिन्न प्रकार के यागों में एक धनुर्याग है और धनुर्याग में बेटा! दीक्षान्त उपदेश देती हुई, माता अरुन्धती ने बेटा! आध्यात्मिक सरग गान के रूप में अपने उद्गार प्रगट किए। और उन्होंने कहा — ब्रह्मचारियों! देखो, भौतिक विज्ञान तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है, परन्तु आत्मा को जानना भी देखो, परमसिद्ध अधिकार कहलाता है। तुम दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञानवेत्ता बन करके अपने में महान बनते चले जाओ। मेरा उच्चारण करने का अभिप्राय केवल यह है कि हम सबसे प्रथम परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को विचारे, माता के गर्भ में निहारते चले जाए, पृथ्वी के विज्ञान में चले जाएं, पृथ्वी के गर्भ में जो नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थ तप रहे हैं और तपायमान है उसी के गर्भ में सर्वत्र मानों देखो, जगत् क्रिया कर रहा है। मेरे पुत्रों! वहीं परमपिता परमात्मा के आंगन में प्रवेश हो जाओ, जहाँ देखो चेतना देकर के मुनिवरो! संसार को चेतनित बना करके, जड़वत् और पिण्ड जो आकार में दृष्टिपात आ रहा है वह उस परमपिता परमात्मा की अनुभूत अनुवृत्तियाँ कहलाई जाती हैं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता रहता है मैं विषेश विवेचना न देता हुआ आज का उपदेश क्या कह रहा है, माता अरुन्धती ने अपने उद्गार देकर के कहा — ''कि ब्रह्मचारियों! मेरा उपदेश यही है कि तुम ब्रह्मचरिष्यामि बनो, ब्रह्मवर्चोसि बनो, देवत्व बन कर के देवताओं की सभाओं में तुम सुशोभनीय हो जाओ; मानो यह मेरा अन्तिम वाक् है कि—तुम्हारा ज्ञान और विज्ञान पनपता रहे। तुम्हारा क्रियात्मक जीवन हो, क्योंकि क्रियात्मक जीवन ही संसार में महान कहलाता है।

तपस्वी उपदेशक

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ माता अरुन्धती इतना उपदेश देकर के और यह उद्गीत गाने लगी — हे ब्रह्मव्रताः! तुम्हारा यह धनुर्याग उत्तम बने क्योंकि धनुर्याग का अभिप्राय यह है कि राजा के राष्ट्र में देखो, विद्यालय पवित्र हो, और उन विद्यालयों में अस्त्रों—शस्त्रों की विद्या का अनुग्रहित कराया जाए अध्ययन कराया जाए, आध्यात्मिकवाद के मार्ग को दिया जाए। मेरे प्यारे! देखा, उसी से, विद्यालय ऊँचा बनेगा, उसी से राष्ट्र ऊँचा बनेगा और राष्ट्र में प्रतिभा का जन्म होगा। जिससे देखो राष्ट्र अपनी वृत्तियों में रत हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, जब भी ब्रह्मचारियों का दीक्षान्त उपदेश हुआ है तो वहाँ राजा की आवश्यकता नहीं हुई है क्योंकि राजा उनको दीक्षान्त उपदेश नहीं दे सकता। दीक्षान्त उपदेश उनका आचार्य देगा, बुद्धिमान देगा जो तपस्वी प्राणी है, वही तो उपदेश दे सकते हैं। जिससे राजा का निर्माण भी वहीं से प्रारम्भ होता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब राजा दीक्षान्त उपदेश देता है, वह दीक्षा नहीं दे सकता, राजा तो उसका उपसंहार भी नहीं कर पाता। मेरे प्यारे! देखो, राजाओं की पंक्ति भिन्न है। मैं इसकी चर्चा फिर करुँगा। यह विषय बड़ा विचित्र बन गया है। समय आता रहेगा, यह विषय ऋषि मुनियों के उपदेश राष्ट्रीय उपदेश भी इसमें आते रहेंगे।

वेद की वास्तविक पूजा

आज का विचार तो केवल यह कि माता अरुन्धती ने अपने दीक्षान्त उपदेश की, बेटा! एक भूमिका बनाई है और वह भूमिका यही है देखो, ब्रह्मचारियों को उपदेश दिया गया कि मातृवत् बन करके देखो, कितनी प्रकार की माता हैं उन माताओं का पूजन करो। पूजन का अभिप्राय ये है कि उनका सदुपयोग किया जाए, उनके उद्गारों को अपने में क्रियात्मक जीवन बनाना चाहिए, उनका पूजन करना चाहिए। मुनिवरों! देखो आज हम वेद की पूजा करना चाहते हैं। वेद की पूजा का अभिप्राय है जो उसमें मन्त्र हैं, उसमें ज्ञान है उस ज्ञान को अपने मन में मनन करते हुए उसको साकार रूप देने का नाम यह वेद की वास्तविक पूजा कहलाई जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, जब हम अपनी कृतियों में रत रहते हैं, जीवन को ऊँचा बनाने में सदैव, साधक बन करके परमात्मा से मिलान चाहते हैं। तो वह हमारी पवित्र माता है।

मेरे पुत्रों! देखो, आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए आज बेटा! मैंने यह भूमिका बनाई है कल मानों देखो समय मिलेगा तो कल महर्षि भारद्वाज का अपना उपदेश विचारों में विचारक उपदेश है जो मानों देखो, ब्रह्मचारियों को दिया जाता है। वास्तव में विद्यालय में इसी प्रकार का उद्गार जब दिया जाता है, तो समाज में एक महानता का जन्म होता है। उस महानता को लेकर के राष्ट्र अपनी आभा में रत हो जाता है। यह है बेटा! आज के वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए उसको माता वसुन्धरा के रूप में स्वीकार करते हुए और ममत्व को अपने में धारण करते हुए परमपिता परमात्मा की महती के ऊपर चिन्तन और मनन करते चले जाए। यह है बेटा! आज का वाक् मानों देखो, विश्णु, आत्मा रूपी जो विष्णु है वह, हमारा कल्याण करने वाली है माता का नाम भी विष्णु है बेटा! विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द है...... शेष अनुपलब्ध **21.01.1988,सुवाहेडी, बिजनौर**

४ सृष्टि का प्रारम्भिक कर्म—दिनांक—22—01—1988

जीते रहो,

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद—वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद—वाणी में उस महामना, मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महिमा का हम गुणगान गाते चले जा रहे थे। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है जो परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गए हैं मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। वे परमात्मा इस संसार रूपी यज्ञशाला में मानो निहित हैं।

आज का हमारा वेद मन्त्र कुछ याग के सम्बन्ध में हमें प्रेरणा दे रहा है क्योंकि संसार का जितना भी प्राणी मात्र है विशेषकर मानव मानो वह प्रेरणा से प्रेरित हो रहा है, कहीं से प्रेरणा आती है, कहीं वह मानो इस प्रेरणा को उद्बुद्ध कर रहा है अथवा उसका प्रसारण कर रहा है। तो हमें विचारना है कि हम उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान, विज्ञान और उसका संसाररूपी यह जो यज्ञशाला, ब्रह्माण्ड है मानो उसमें सर्वत्र प्राणी प्रेरित हो रहा है और प्रेरित होकर उसी की आभा में आभायित हो रहा है और अपने में यह अनुभव कर रहा है कि मैं परमपिता परमात्मा की आभा में विद्यमान हूँ, जो हमारा पुरोहित है, जो पराविद्या को प्रदान करने वाला है। मानो देखो, याग उसका आयतन, उसमें वह निहित रहने वाला है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनुकम्पा और उसका ज्ञान और विज्ञान अपने में संग्रहित करते रहें। ऐसा मानो हमारा वैदिक विचार मानवीयत्व के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

संसार रूपी यज्ञशाला

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा दे रहा है। कहीं याग की प्रेरणा है, तो कहीं याग के माध्यम से वैज्ञानिक तथ्यों में रत होने के लिए प्रेरित कर रहा है, कहीं यज्ञशाला में विद्यमान होकर के परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का जो यह ब्रह्माण्ड मानो यज्ञशाला के रूप में हमें दृष्टिपात् आ रहा है तो कोई इसमें होता बना हुआ, कोई उदगाता बना हुआ है। मानो कोई यजमान बन करके याग कर रहा है। वे परमपिता परमात्मा ब्रह्म बन कर के इस संसार रूपी यज्ञशाला का संचालन कर रहे हैं। वह मेरा देव कितना अनुपम मानो बह्मवर्चोसि माना गया है। इसीलिए प्रत्येक मानव को भी ब्रह्मवर्चोसि बनना चाहिए, परमपिता परमात्मा निरभिमानी, है तो मानव को भी निरभिमानी बनना चाहिए।

मेरे पुत्रों! परमपिता परमात्मा इस संसार रूपी यज्ञशाला का संचालन कर रहे हैं। इसीलिए मानव को भी अपनी शरीर रूपी यज्ञशाला का संचालन करना चाहिए। मेरे प्यारे! जब गम्भीर मुद्रा में साधक अपने में गम्भीरत्व में रत हो जाता है, तो मेरे पुत्रो! इस मानव शरीर को जानना बहुत अनिवार्य है, इसमें कितनी नस नाड़ियाँ हैं और मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का कहाँ कहाँ समन्वय रहता है। जब तक यह अपने को ज्ञापित नहीं बना लेता, तब तक अपने शरीर रूपी यज्ञशाला का निर्वाह नहीं कर सकता, इसका संचालन नहीं कर सकता। तो मुनिवरो! देखो, यह शरीर, परमपिता परमात्मा ने इस ब्रह्माण्ड को जो लोक लोकान्तरों की बेटा! एक माला बनी हुई है और उस माला को वह धारण कर रहा है। मेरे पुत्रों! एक दूसरा एक दूसरे को प्रेरित कर रहा है जैसे मानो यह सूर्य प्रकाश दे रहा है, सूर्य का ही प्रकाश मानो देखो, चन्द्रमा में तत्पर होता हुआ वह मानो प्रकाश देता है, तो यह अमृत देता है। क्योंकि वह दे रहा है इसीलिए यह प्रकाश में ही तत्पर रहता है। तो मेरे पुत्रों! जब हम परमपिता परमात्मा की इस संसार रूपी यज्ञशाला में प्रवेश करते हैं तो मानो देखो, अग्नि उसका अध्वर्यु बन रहा है, उद्‌गाता बन रहा है, उद्‌गान गा रहा है। तो कहीं प्राणस्वरूप बन कर के और अवकाश लेकर के अन्तरिक्ष अपने में गति कर रहा है। मेरे पुत्रो! कैसा अनुपम मेरे प्यारे, प्रभु का यह ब्रह्माण्ड है? कैसी अनुपम यह यज्ञशाला है, जिसकी नाभि ही पृथ्वी है। बेटा! देखो, जब हम यह विचारने लगते हैं, तो एक–एक वेद मन्त्र के ऊपर अन्वेषण करना आरम्भ कर देते हैं, तो बड़ी विचित्रता आने लगती है, एक आनन्द का अनुभव होने लगता है। हम अपने में स्वीकार करें कि परमात्मा के संसार रूपी यज्ञशाला में सब विद्यमान है।

व्यष्टि से समष्टि

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या कह रहा है आज का वेद मन्त्र हमें बहुत ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ा रहा है और हमें प्रेरित कर रहा है, प्रेरणा दे रहा है। हे मानव! तू अपने शरीर रूपी यज्ञशाला में याग कर और ऐसा याग कर मानो इस शरीर को जानने का प्रयास कर जैसे मानो देखो, व्यष्टि से समष्टि में जाना, फ़िर मानो देखो, यज्ञ के स्वरूप को जान लेना है। बेटा! जब तक हम व्यष्टि से समष्टि में नहीं जा पाते, तो मेरे पुत्रों! देखो, हम इस यज्ञ के स्वरूप को कदापि नहीं जान पाते। परमपिता परमात्मा, जो याज्ञिक है जो मानो इस यज्ञशाला में वास कर रहा है वह उसका आयतन है, गृह है मानो उसमें वह वास कर रहा है, सर्वज्ञता में निहित रहने वाला है। तो बेटा! विचार विनिमय क्या, आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा था, वह प्रेरणा दे रहा था और वह प्रेरणा यह है कि हे मानव! तू अपनी मानवीय उड़ान को विचित्रतम उड़ता रहे। मानो देखो, यहाँ का प्राणी मात्र, याग के याज्ञिक पुरुष अपने में कहाँ चले गए हैं?

याग से पूर्वजों के दर्शन

बेटा! एक काल मुझे स्मरण आता रहता है। देखो, यहाँ याग के माध्यम से अपने पूर्वजों के चित्रों को, शब्दों को जानने का ऋषियों ने प्रयास किया है। उद्दालक गोत्र में तो बहुत से ऋषि हुए हैं इस प्रकार के, परन्तु देखो, उद्दालक गोत्र में ऋषियों ने राष्ट्र को भी ऊर्ध्वा में प्रेरणा दी और कहीं कहीं यह स्वीकार किया कि राष्ट्र अपने में कोई नहीं होता। मानो देखो, राष्ट्र का निर्वाचन तो इसीलिए हुआ करता है क्योंकि यदि मानव कर्तव्यविहीन हो जाए, कर्तव्य से दूरी चला जाए तो उस समय मानव को कर्तव्यवाद में लाने के लिए, एक कर्तव्यवादी राष्ट्र की आवश्यकता होती है। मुनिवरों! देखो, यदि राजा कर्तव्यवादी नहीं होता है तो समाज को वह कर्तव्यवाद में कदापि नहीं ला सकता।

ऊर्ध्वागामी

तो विचार आता रहता है मैं, आज याग के सम्बन्ध में बेटा! कोई विचार नहीं देना चाहता हूँ क्योंकि दार्शनिक और मानवीयत्व के विचारों में मानो देखो, राष्ट्र को अपने में कृत करना यह अपने में कोई महानता नहीं कहलाती। विचार यह कि हमारा जो मानवीय दर्शन है, मानवत्व है वह इतना ऊर्ध्वा में विचारक, मानवीयत्व में होना चाहिए कि जिससे हम इस संसार की परिधि से संकुचिता से ऊर्ध्वा में गमन कर सकें और ऊर्ध्वा में गमन करने वाले बेटा! योगेश्वर कहलाते है क्योंकि वह अपने में सदैव पंचीकरण करते रहते है। और पंचीकरण क्या है? पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को, उनके विषयों को जान करके, उनका साकल्य बना करके वह ज्ञानरूपी यज्ञशाला में जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है, हृदयरूपी यज्ञशाला में जो ज्ञान की अग्नि प्रदीप्त हो रही है उनको बेटा! उसमें दग्ध करना है, उन्हें देखो, हूत करना है, आहुति देना है। आहुति का अभिप्राय यह है कि अपनी अशुद्ध प्रवृत्तियों को त्यागना और अपनी प्रकाशमयी प्रवृत्तियों को, अग्रणीय बना करके और परमपिता परमात्मा की प्रतिभा अथवा उसके प्रकाश के मार्ग पर, हमें अपने को तत्पर करना है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ। बेटा! हम तो केवल परिचय देने के लिए चले आते हैं और वह परिचय क्या है, हमें वेद क्या कहता है? हमें वेद का मन्त्र कहता है बेटा! कि इसमें ज्ञान, विज्ञान और यौगिकता मानो निहित रहती हैं, उसमें भिन्न–भिन्न प्रकार के याग देखो, परिणत रहते हैं। ''यागं ब्रह्मे'' मुनिवरों! देखो, हमें याज्ञिक बनना है और इस संसार रूपी यज्ञशाला को जाने बिना हम याज्ञिक नहीं बन पाते। क्योंकि याज्ञिक हम उस काल में बनेंगे जब हम परमपिता परमात्मा की भव्य जो यज्ञशाला है जिसमें बेटा! देखो, पंच होता बने हुए हैं, जिसमें परमपिता परमात्मा स्वयं ब्रह्मा हैं और आत्मा देखो, यहाँ यजमान बन करके इस संसार रूपी यज्ञशाला का संचालन कर रहा है। वाह रे, मेरे प्रभु! तू कितना, ऊर्ध्वा में है मानो देखो, यह तेरा सृष्टि का जो कर्म है, यज्ञशाला का जो कर्म है वह कैसा विचित्र चल रहा है? तू कैसा अनुपम है? कैसा महान है? मानो अन्तर्हृदय में ऐसी प्रतिभा जागरुक हो जाए जिसमें बेटा! हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा को निहारते रहें, उसी के आँगन में हम सदैव तत्पर हो जाएँ।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह वेद का मन्त्र आज हमें प्रेरणा दे रहा है, प्रेरित कर रहा है, उद्‌गीत गाने वाला गाता रहता है। एक वेद मन्त्र गाता है तो उसका उद्‌गान मानो अपने हृदय में समाहित कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक आभा में उद्‌गीत गाया जा रहा है। रात्रि का काल है, रात्रि के काल में जब साधक अपनी प्राणमयी ध्वनि को रात्रि के गर्भ में प्रवेश कर देता है, उसी आसन पर शयन करता है, उसी को अपने में धारण करता है। मेरे पुत्रो! देखो, परमपिता परमात्मा की प्राणमयी विचित्र जो ध्वनियाँ हो रही हैं, उस ध्वनि को मानो वेद ध्वनि को जब वह शांत मुद्रा में मुद्रित होता है तो परमात्मा के रचाए हुए ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का अपने में अवस्थित होकर के वह ध्यानावस्थित हो जाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज का विचार केवल यह कि हमें अपने को गम्भीर मुद्रा में ले जाना चाहिए और गम्भीर मुद्रा में मुद्रित होकर के परमपिता परमात्मा के सृष्टि कर्म और देखो, उसकी यज्ञशाला में विराजमान होकर के जो स्वाहा हो रहा है, उस स्वाहा हो अपने हृदय में, अपनी अन्तरात्मा में मानो समन्वय करते हुए अपने में ध्यानावस्थित हो जाना चाहिए।

दण्डक वनों में धनुर्याग

आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार, वेद का मन्त्र यह कहता है, परन्तु देखो, आज मैं तुम्हें पुनः ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बुद्धिमान् प्रातःकालीन याग में, अपने में याज्ञिक बन करके बेटा! यागां ब्रह्मे व्रतं देवाः ''मेरे पुत्रो! देखो, मुझे वह काल पुनः से स्मरण आ रहा है जिस काल में बेटा! देखो, यहाँ दण्डक वनों में याग होते रहे हैं, दण्डक वनों में जहाँ बेटा! प्रातःकालीन देव पूजा होती है वहीं ब्रह्मयाग होता है। बेटा! ब्रह्म का चिन्तन और देव याग दोनों ही अपने में बड़े प्रियतम माने गए हैं और दोनों अपने में, अनूठे हैं, विचारक हैं।

तो मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान है, आचार्यजन एक पंक्ति में विद्यमान हैं, आगन्तुक अतिथि एक पंक्ति में विद्यमान है, बेटा! देखो, अपनी–अपनी प्रतिभा को लिए अपने में, प्रकाशित हो रहे हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, कल इससे पूर्व काल में हम बेटा यह वर्णन कर रहे थे कि माता अरुन्धती

ने अपने सूक्ष्म से विचार दिए मानो, उन्होंने अपने आध्यात्मिक और भौतिकवाद के विभिन्न विचार दिए क्योंकि दोनों का एक दूसरे में समन्वय होता रहा है संसार में अध्यात्मवाद और भौतिक विज्ञान जब दोनों अपनी स्थलियों में विचित्र होते हैं तो राष्ट्र और समाज में एक महानता की प्रतिभा का जन्म होता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में कहा था कि राष्ट्रवाद जो होता है वह कर्तव्यवाद के लिए होता है। यदि वह कर्तव्यवाद नहीं ला सकता समाज में, तो वह राष्ट्र नहीं कहलाता। देखो, कर्तव्यवाद में भी विज्ञान होना चाहिए तो वह विज्ञान अपनी–अपनी स्थलियों पर अपने समय पर बड़ा एक रूप धारण करता रहा है।

सार्थक विज्ञान का स्रोत

बेटा! मैंने तुम्हें भारद्वाज मुनि की चर्चाएँ की हैं। भारद्वाज मुनि के आश्रम में बेटा! एक यज्ञशाला का निर्माण हुआ। हमारे यहाँ चौबीस कोणों की यज्ञशाला का निर्माण महर्षि भारद्वाज के यहाँ कजली वनों में हुआ था। मेरे पुत्रो! देखो, इसमें उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया था और उस यन्त्र की यह विशेषता थी कि जैसे यजमान, होतागण, ब्रह्मा इत्यादि जैसे स्वाहा उच्चारण करते थे तो मुनिवरों! देखो, उनके यन्त्र में स्वाहा के साथ जो चित्र अग्नि की धाराओं में विद्यमान होकर के अन्तरिक्ष में गमन करते हुए, द्यौ लोक को जाते हुए दृष्टिपात् आते थे। वह यन्त्र मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज के विद्यालय में था। मुनिवरो! देखो, उस विद्यालय में ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी, रोहिणीकेतु, यज्ञदत्त, ब्रह्मचारिणी शबरी उसमें पनपेतु मुनि महाराज विद्यमान रहते थे। वे सदैव अपने में अनुसन्धान, अन्वेषण करते रहते थे। तो यह विज्ञान की बड़ी विचित्र उपलब्धियाँ हैं। क्योंकि विज्ञान का जब भी प्रारम्भ हुआ तो याग के माध्यम से हुआ है और याग के माध्यम से जिस विज्ञान का प्रादुर्भाव होता है, वह विज्ञान अपने में सार्थक कहलाता है, वह विज्ञान अपने में महानता की ज्योति वाला होता है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ एक यज्ञशाला थी। उस यज्ञशाला में जब भी याग होता तो यन्त्रों में उसके चित्र दृष्टिपात् आते रहते थे। भारद्वाज मुनि का जो वंशलज था, वह बड़ा विचित्र माना गया है। क्योंकि भारद्वाज जो वंश है वह अपने में बड़ा महानता वाला और विज्ञान में रत होता रहा है। जैसे बेटा! उद्दालक गोत्र में विज्ञानवेत्ता हुए, भारद्वाज गोत्र में भी विज्ञानवेत्ता और ब्रह्मवेत्ता होते रहे हैं विशेषकर जो ब्रह्मवेत्ता होते हैं वे ब्रह्मवेत्ता के साथ आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता भी हुए हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, प्रातःकालीन जब मानो देखो महर्षि विश्वामित्र के आश्रम में, दण्डक वनों में याग का प्रारम्भ हुआ तो याग के प्रारम्भ के समय में, वहाँ नाना ऋषिवर जैसे महर्षि भारद्वाज, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि कागभुषुण्ड जी, महर्षि लोमेश, महर्षि वृत्तिका, प्रवाहण, शिलभ, दालभ्य और महर्षि वैशम्पायन इत्यादि मुनि बेटा! देखो, विद्यमान थे। ये सब ब्रह्मवेत्ता थे, कुछ ब्रह्मवर्चोसि थे, कुछ मानो विज्ञान की विचित्र उड़ाने उड़ते रहते थे।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब उनकी प्रातःकालीन देवपूजा समाप्त हुई, क्योंकि याग को हम देवपूजा भी कहते हैं, तो बेटा! देखो, जैसे देवपूजा समाप्त हुई तो वहाँ विचार भी आने लगे, उपदेश मन्जरियाँ प्रारम्भ होने लगीं और देखो, वहाँ महर्षि भारद्वाज का यन्त्र भी विद्यमान था, जिसमें बेटा! देखो, ब्रह्मचारी मधुर स्वर में स्वाहा उच्चारण करते तो उनके चित्र, उनके शब्द अग्नि की धाराओं पर विद्यमान होकर के बेटा! वह शब्द द्यौ लोक में जाते हुए ब्रह्मचारियों को दृष्टिपात् आते रहे है। तो महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें यह दृष्टिपात् आ रहा है कि तुम्हारे चित्र और यज्ञशाला का रथ बनकर के द्यौ लोक को जा रहा है। जितने आकार का यज्ञशाला बना हुआ होता है, जितने आकार में यज्ञ के होतागण, अध्वर्यु, उद्गाता यजमान, ब्रह्मा आदि विद्यमान हैं, उतने आकार का रथ बनकर के शब्दों की धारा में, अग्नि की तरंगों में विद्यमान होकर के बेटा! द्यौ लोक को प्राप्त होता रहा है।

स्वाहा

तो विचार आता रहता है मेरे पुत्रो! ''यागां ब्रह्मे'' देखो उनका याग अपने में कितना सम्पन्न है, कितना अनुसन्धान उन्होंने किया। तो इसलिए हमारे यहाँ प्रायः परम्परागतों से बेटा! सृष्टि के प्रारम्भ का जो ऊर्ध्वा कर्म है, वह याग है और याग अपने में देखो, पूर्णत्व कहलाया जाता है। तो इसीलिए हमारे यहाँ प्रत्येक शब्द में स्वाहा होना चाहिए। स्वाहा का अर्थ है, जिसमें त्याग प्रवृत्ति होती है, जिसमें त्याग भावना होती है, जिसमें हृदय की त्रुटियों को त्यागने की प्रवृत्तियाँ होती हैं उसका नाम स्वाहा कहलाता है।

दक्षिणा का स्वरूप

तो बेटा! जब यज्ञ सम्पन्न हुआ तो भारद्वाज मुनि जो उस यज्ञ के ब्रह्मा थे, उन्होंने उन ब्रह्मचारियों से कहा हे ब्रह्मचारियों! अब तुम मुझे दक्षिणा प्रदान करो। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, 'प्रभु! दक्षिणा तो हम अवश्य ही देना चाहेंगे, क्योंकि बिना दक्षिणा के याग सम्पन्न नहीं होता है, इसलिए दक्षिणा बहुत अनिवार्य है। तो मेरे प्यारे! देखो यजमान से पुरोहित 'यज्ञं दक्षं ब्रहे'' कहता है कि तू मुझे दक्षिणा प्रदान कर।

तो दक्षिणा का अभिप्राय क्या है? बेटा! यजमान, होतागण मानों अपनी त्रुटियों का त्याग करके दक्षिणा प्रदान करते हैं तो अपनी त्रुटियों को देना, अच्छाईयों को ग्रहण करना यह प्रायः एक महान दक्षिणा कहलाती है। मेरे पुत्रो! द्रव्य तो प्रायः उदर की पूर्ति के लिए दिया जाता है परन्तु दक्षिणा का अभिप्राय बेटा! हृदय से उसका समन्वय रहता है और वह जो हृदय मानो श्रद्धा है वह श्रद्धा मुनिवरो! देखो, ज्ञान और विज्ञान से ओत–प्रोत रहती है। तो विचार आता रहता है मेरे पुत्रों, देखो, हमें त्रुटियों को त्यागना, अभिमान को त्यागना है। देखो, परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना है तो अपने अभिमान को त्यागना होगा क्योंकि परमपिता परमात्मा निरभिमानी है। मेरे पुत्रो! याग कर्म भी निरभिमानी कहलाया जाता है। मेरे पुत्रों देखो, इसीलिए त्रुटियों को त्यागना स्वाहा कहना और स्वाहा का अभिप्राय यह है कि हम अपनी त्रुटियों को त्याग रहे हैं और अच्छाईयों को, महानता को ग्रहण कर रहे हैं। ''पुरोहितं ब्रह्मे ब्रह्मा कृतं लोकाम्'' हे ब्रह्मण! हम आपको दक्षिणा समर्पित करना चाहते हैं आप स्वीकार कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में स्वीकार करते हैं और ब्रह्मा उसे ज्ञान रूपी अग्नि से दग्ध कर देता है, उसे अपनी आभा में ग्रहण कर लेता है और उसे उपदेश देकर के उसे सात्विक बना देता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं देना चाहता हूँ विचार केवल यह कि मुनिवरो! देखो, ''यागां ब्राह्मणं ब्रहे'' हमारे यहाँ याग का जो कर्म है वह बड़ा विचित्र है। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज को सब ब्रह्मचारियों ने दक्षिणा दी और दक्षिणा देकर यह संकल्प किया कि अब हम ब्रह्मवर्चोसि बनेंगे हम मानो ब्रह्मचरिष्यामि बनेंगे। ब्रह्मचारी का अभिप्राय क्या कि प्रत्येक श्वास को हम ब्रह्मसूत्र में पिरोने वाले बनेंगे। क्योंकि ब्रह्मवर्चोसि वही कहलाता है मुनिवरो! देखो, ब्रह्मचारी का प्रत्येक श्वास, प्रत्येक आभा प्राणतत्व, मनस्तत्त्व जब तक ब्रह्मसूत्र में नहीं पिरोयी जाती तब तक उसकी साधना परिपक्व नहीं हुआ करती।

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, विचार केवल यह कि जो हमारा वैदिक साहित्य कहता है, वेद का मन्त्र कहता है कि ''ब्रहे कृतम्'' मानो देखो, हमें अपने में अनुसन्धान करना, वेद का अनुसन्धान करना है।

तो मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार के याज्ञिक कार्यों को सम्पन्न करते हुए उन्होंने दक्षिणा दी और दक्षिणा स्वरूप में उन्होंने ज्ञान और विज्ञान की जो प्रतिभा थी उसे अपने हृदय में धारण करने का संकल्प लिया। तो ब्रह्मचारी बेटा! देखो, प्रातःकालीन अपने में याज्ञिक बनना और धनुर्याग का अध्ययन करना। मुनिवरों देखो, धनुर्याग उसी को कहते हैं जहाँ एक–एक परमाणु का दूसरे परमाणु में मिलान किया जाता है, उससे यन्त्रों का निर्माण किया जाता है और यन्त्रों का निर्माण करने वाला बेटा! लोक लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगता है।

धनुर्याग

तो आओ, मेरे पुत्रों! विचार क्या मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा था कि नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण होने का नाम ही ''व्रतं ब्रहे'' उसी को धनुर्याग कहते हैं। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का चयन आता रहा है उसमें भिन्न–भिन्न कर्मकाण्ड हैं और कर्मकाण्ड की प्रणालियों में जब मानव प्रेरित होता है अथवा अनुसन्धान करता है तो वह पारमार्थिक बन जाता है। देखो, अपने में अपनेपन का दर्शन करता हुआ अपनेपन को ही प्रभु को समर्पित कर देता है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे।

महर्षि विश्वमित्र का धर्नुयाग

महर्षि महानन्द जीः—ओ३म् यशो शन्नो इत्याहं गायन्त्वा मनः,

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी अभी बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ रहे थे। क्योंकि इनके विचारों की उड़ाने बड़ी विचित्र रहती है। बहुत समय हो गया वाक् श्रवण करते हुए, हम अपने में इन विचारों को धारण करते रहते हैं। अभी हमारा यह जो वाक् है यह हमारी आकाशवाणी बन करके "अन्तं ब्रह्मे" एक याग को हम दृष्टिपात् कर रहे हैं मेरा अन्तरात्मा यदैव यजमान के साथ रहता है क्योंकि यह जो वर्तमान का काल चल रहा है वह वाममार्ग का काल है। जहाँ द्रव्य की लोलुपता और सुरा और सुन्दरी के लिए मानों राष्ट्र से लेकर के प्रजा तक अपने में निहित हो रही है।

महाराजा सगर का आहार

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी—अभी कुछ राष्ट्र की चर्चा देना चाहते थे परन्तु राष्ट्र अपने में कोई विचित्र तो दृष्टिपात् आ नहीं रहा है। जिन्होंने राम के राष्ट्र अथवा अश्वपति के राष्ट्र को दृष्टिपात् किया हो, राजा सगर के राष्ट्र को दृष्टिपात् किया हो, जिनके यहाँ राष्ट्र का आहार और व्यवहार विचित्र रहा है। महाराजा सगर के यहाँ जो राष्ट्रीय आहार था, वह बड़ा विचित्र रहा है। प्रातःकालीन याग के पश्चात् उनका विशुद्ध आहार होता था और वह भी अपने में जो स्वयं कला कौशल एवं कृषि उद्गम करने के पश्चात् जो द्रव्य आता था उसको प्रायः ग्रहण किया जाता। क्योंकि राष्ट्र की बुद्धि, राष्ट्र के अपने दैनिक क्रियाकलाप बड़े विचित्र होने चाहिए।

वाममार्गी वर्तमान काल

पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने कई काल में वर्णन कराया कि यह जो वर्तमान का काल है, यह ऐसा विचित्र काल है, जिसे मैं वाम मार्ग का काल कहता हूँ। एक मानव ईश्वरवादी है, वह याग का खण्डन कर रहा है। एक मानव सम्प्रदायवादी बन रहा है और अपने को ईश्वरवादी भी कहता है। परन्तु एक दूसरे के रक्त का पिपासी बन रहा है। जब मैं यह दृष्टिपात् करता हूँ तो पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय देता रहता हूँ। प्रभु! यह समाज, यह वायुमण्डल इस प्रकार का है। परन्तु देखो, एक मानव, एक राष्ट्र जहाँ उसे रक्षा करनी है वहाँ वह भक्षक हो रहा है। जब मैं यह विचारता हूँ कि यह नाना प्रकार के विचार ईश्वरवादी और निरीश्वरवादी, यह समाज कैसे ऊँचा बन सकता है? तो देखो, यह वाममार्ग है। वाममार्ग क्या है? जो राजा को प्रातःकाल पान करना चाहिए उसे वह नहीं कर रहा है। सुरा और सुन्दरी में लगा हुआ, दूसरों के द्रव्यों की लोलुपता में लगा हुआ है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते हैं कि महाराज अश्वपति के राष्ट्र में, भगवान् राम के काल में भी प्रायः ऐसा होता रहा है, रावण के काल में भी प्रायः ऐसा होता रहा है कि राजा स्वयं कृषि का उद्गम करके उस अन्न को पान करते, बेटा! पान करते तो बुद्धि विचित्र हो जाती। कहीं बुद्धि उसके पश्चात् भी द्रव्य को पाने की लोलुपता में परिणत भी होती रही है परन्तु उसके पश्चात् भी उनका आहार और व्यवहार विशुद्ध रहा है। जब मैं आधुनिक काल के राष्ट्र को दृष्टिपात् करता हूँ तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव की एक ही घोषणा है, एक ही विचार है कि जब ऐसे राजा का राष्ट्र में निर्वाचन होता है तो वह कर्तव्यवाद कहाँ से ला सकता है।

महाभारत काल के पश्चात

तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता हूँ, हे प्रभु! यह कैसा समाज बन गया है। मानो देखो, महाभारत काल के पश्चात् रुढ़िवाद पनपा है और वह रूढ़िवाद एक दूसरे के रक्त का पिपासी बना हुआ है, आज जब मैं यह विचारता हूँ कि विज्ञान का कितना दुरुपयोग है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी—अभी विज्ञान की चर्चा कर रहे थे और विज्ञान की ऐसी मार्मिक चर्चा कर रहे थे कि विज्ञान अपने में कितना अनूठा रहा है। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया न होने से उसका दुरुपयोग और विज्ञान का दुरुपयोग होने से इस समाज में मानव एक दूसरे के रक्त का पिपासी अथवा वाममार्ग में परिणत हो रहा है। मानो देखो, जब मैं यह विचारता रहता हूँ कि हे मानव! हे राष्ट्र! तेरे राष्ट्र में विज्ञान का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए, जहाँ मेरी करने वाले पुत्रियों के चरित्र हनन चित्रों का चित्रण होता है और उनको छात्र, छात्राएँ सब ग्रहण करते हैं तो उनका ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है। और ब्रह्मचर्य के दूषित हो जाने पर देखो, कर्तव्यवाद न रह करके अधिकार की पुकार हो जाती है और जहाँ अधिकार ही अधिकार रह जाता है, कर्तव्यवाद नहीं रहता वहाँ राजा के राष्ट्र में देखो, अग्नि प्रदीप्त हुआ करती है। मैंने यह वाक् बहुत पूर्वकाल में, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने भी कहा और यह वाक् भारद्वाज की विज्ञानशाला में भी घोषणा हुई। आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ विचार केवल यह कि आधुनिक काल का राजा प्रातःकालीन नाना प्राणियों के रसों को, अग्नि में तपाकर के पान करता है तो वह राष्ट्र को कैसे ऊर्ध्वा बना सकता है? विचार आता रहता है जिसका आहार ही अशुद्ध है तो वह विशुद्धता में समाज को कैसे ला सकता है? परन्तु देखो, आज राष्ट्र यह चाहता है कि मेरे राष्ट्र में रक्तभरी क्रांति न हो, परन्तु यह भी चाहता है कि मेरे राष्ट्र में नाना धर्म हो, तो **अरे, भोले प्राणी! धर्म तो एक ही होता है, नाना धर्म नहीं हुआ करते हैं। जब राजा के राष्ट्र में यह घोषणा होने लगती है कि नाना धर्म होते हैं तो उस राजा के राष्ट्र में धर्म लुप्त हो जाता है।** मानो देखो, जैसे धर्म तो एक ही है। नेत्रों से दृष्टिपात करना ही मानव का धर्म है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में मुझे वर्णन कराया और धर्म की विवेचना देते हुए कहा कि नेत्रों का धर्म दृष्टिपात् करना है, कु—दृष्टिपात् करना उसका धर्म नहीं है। कु—दृष्टि जब आएगी तब ही पापाचार ह्रदय में बलवती हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है उस विषय का नाम ही धर्म कहा जाता है। यह भी रूढ़िवाद बन गया है जो राष्ट्र को विनाश के मार्ग पर ले जा रहा है। मानो एक दूसरा मानव नष्ट होने जा रहा है। देखो, यह राष्ट्र का कैसा आरोपण कहलाता है। मैं इसको वाममार्ग इसलिए कहता हूँ क्योंकि जहाँ अच्छाईयों का खण्डन और दुरिता का मण्डन होता है वहीं वाममार्ग कहलाता है।

जब मैं यह विचारता हूँ कि राष्ट्र तो एक ही विचारधारा देता है कि **हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है, तो तेरे राष्ट्र में रुढ़ि नहीं होनी चाहिए और जब तक रूढ़ि रहेगी और तू यह चाहे, कि सुखी हो जाऊँ तो यह असम्भव है।** मानो देखो, पूजा शांति युक्त हो जाए तो यह भी असम्भव है। राजा का कर्तव्य है कि भिन्न—भिन्न रूढ़िवादियों के आचार्यों को एकत्रित करना और एकत्रित करके देखो, उनमें शास्त्रार्थ होना चाहिए और मानो देखो, जो ज्ञान, विज्ञान और मानवता के स्थिर हो जाने में, राष्ट्र को अपनाने में कोई दोषारोपण नहीं है। यज्ञ अपना लेना चाहिए और वहीं देखो विशुद्ध एक राष्ट्र का निर्माण हो तो मानो देखो, मानव शांतियुक्त हो सकता है। तो आज का विचार मैं विशेष नहीं दूँगा, केवल अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मैं वर्णन कराता रहता हूँ और अवगत कराता रहता हूँ कि प्रभु! यह समाज ऐसा है। तो मानों मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मेरा अन्तर्हृदय यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे **गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे, देव पूजा होती रहे, मानो देखो, बुद्धिमानों की प्रतिभा तेरे गृह में संचालित रहनी चाहिए, अभिमान को त्याग करके तेरे ह्रदय में निरभिमानता में परिणत हो जाए।** मेरी सदैव यही कमाना रहती है, मेरा अर्न्तह्रदय सदैव यजमान के साथ रहता है। मानों देखो उसमें, "व्रतं ब्रह्मा व्रतं देवाः"। अब मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ विचार केवल यह कि मानों देखो, आधुनिक जो जगत् है वह कैसा है? यह मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को समय—समय पर अवगत कराता रहता हूँ। आज का विचार केवल यह कि हम अपने प्रभु की महिमा और याग जैसे ऊर्ध्वा में कर्म करते रहें क्योंकि यह कर्म सृष्टि के आरम्भ से चला आ रहा है और ब्रह्माण्ड के मध्य का क्रियाकलाप यह याग माना गया है। जिसे देवपूजा, यज्ञ का सदुपयोग, शब्द का द्यौ लोक में जाना। अभी—अभी ये सब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव प्रगट करा रहे थे। आज का वाक्, अब यह समाप्त, अब वेदों का पठन पाठन, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः— मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अभी—अभी अपने बहुत सुन्दर विचार दिए हैं, एकता के सूत्र में लाने के लिए इनका भव्य विचार था। आज का यह वाक् अब समाप्त हो गया है आज का वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की अराधाना करते हुए वैदिकता को विचारते हुए और ज्ञान और विज्ञान की विचित्र उड़ाने उड़ते हुए हम इस संसार सागर से पार हो जाएँ और परमात्मा के राष्ट्र में हम सभी विरक्त रहें ऐसा हमारा वाक्य अब समाप्त हो गया है। समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे। अब वेदों का पाठ होगा। **दिनांक—22—01—1988—ग्रा0 सुवाहेड़ी बिजनौर**

५ तपस्विता—दिनांक—27—01—1988

जीते रहो,

महर्षि विश्वमित्र का धर्नुयाग

देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद–वाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये है और जितना भी यह जड़ जगत् अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात् आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्मांड के मूल में प्रायः वह मेरा देव, परमपिता परमात्मा दृष्टिपात् आ रहा है। मानो उसमें वह रत हो रहा है। जिसके ऊपर सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक मानव अनुसंधान करता रहा है, और अन्वेषण कर रहा है। कहीं मानव ज्ञान, विज्ञान की प्रतिभा में रत हो जाता है, कहीं मानव आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है और नाना प्रकार के अनुष्ठानों में लगा हुआ है और विचारता रहता है कि परमपिता परमात्मा, जड़वत् और चैतन्यवत् दोनों में निहित हो रहा है। आज मैं उस परमपिता परमात्मा को अपने अन्तर्हृदय में, या प्रत्यक्षवाद में ले करके जानने के लिए तत्पर रहूँ। ऐसा मानव परम्परागतों से अपना विचार विनिमय कर रहा है। मानो देखो, जब मानव अपने में विचित्र–विचित्र उड़ानें उड़ने लगता है और विचारने लगता है कि मैं आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों प्रकार के विज्ञान में रत होना चाहता हूँ और उस विज्ञान की नाना प्रकार की आभा में रत हो करके उसका मन्तव्य एक ही रहता है, कि मैं अपने में महान और विचित्र बनता चला जाऊँ।

विष्णु

तो आज के हमारे वैदिक साहित्य, वेद मंत्रों में बड़े उद्‌गम विचार आ रहे थे कहीं माता वसुन्धरा का वर्णन आ रहा था, तो कहीं विष्णु की चर्चा आ रही थी। हमारे वैदिक साहित्य में विष्णु नाम केवल रक्षक को कहा गया है। जो रक्षा करने वाला है, वही विष्णु कहलाता है। मानो उसी विष्णु की नाना प्रकार की विवेचनाएँ होती रही है। जैसे विष्णु नाम माता को कहा गया है। सबसे प्रथम तो विष्णु नाम उस परमपिता परमात्मा का है, जो सर्वत्र मानो विष्णु कहलाता है, क्योंकि वह रक्षा करने वाला है। कहीं माता का नाम विष्णु है, तो कहीं विष्णु नाम आत्मा का है। कहीं देखो, राजा का नाम विष्णु है, तो कहीं सूर्य का नाम भी विष्णु है। तो यहाँ बेटा! भिन्न–भिन्न प्रकार के पर्यायवाची शब्द एक ही स्वरूप में हमारे यहाँ माने गये है। परन्तु मूल एक ही है। जो वह रक्षा करने वाला है, जो पालन कर रहा है। मानो जैसे परमपिता परमपिता हमारा पालन कर रहा है और वह विष्णु बन करके नाना प्रकार की ऊर्जा दे करके और नाना प्रकार की वृत्तिमयी तत्त्वों में अपनी मानो देखो, महिमा का जो संचार हो रहा है जो उसका विज्ञान और उसकी अंतर्वृत्तियाँ उसमें निहित रहती है। परन्तु देखो, वही तो रक्षा करने वाला है।

वास्तविक रक्षक

आज मैं जब अपनी माता से यह कहता हूँ कि हे माता! रक्षा कौन कर रहा है? तो देखो, माता कहती है कि रक्षा हम कर रहे है। जब राजा से कहते है –कि रक्षा कौन कर रहा है? राजा कहता है कि मैं रक्षक बना हुआ हूँ। परन्तु जब यह प्रसंग आता है कि माता के गर्भ स्थल में जो शिशु है, उस शिशु की रक्षा कौन कर रहा है? मेरे प्यारे! देखो, राजा भी निरुत्तर हो जाता है, माता भी निरुत्तर हो जाती है। क्योंकि माता को यह ज्ञान नहीं है कि रक्षा कौन कर रहा है और रक्षा हो रही है। तो मुनिवरो! देखो, जब यह विचार आता है कि ''यद् द्रण्डं ब्रह्मा वाचा'' उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान कितना अनुपम है, कितनी उसकी ज्ञान और विज्ञानमयी धारा है, जिसके ऊपर बेटा! ऋषि–मुनि अपने में अनुसंधान करते रहते है, अथवा विचारते रहते है। तो मुनिवरो! देखो, जब मैं माता के समीप जाता हूँ तो माता निरुत्तर हो जाती है। परन्तु उसके ऊपर जब हम विचारते हैं और गम्भीरता से वैदिक साहित्य में प्रवेश होते है और वैदिकवाद को ले करके जब उसके ऊपर अन्वेषण अथवा अनुसंधान प्रारम्भ करते है, तो मुनिवरो! देखो, मानव अपने में मौन हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते है तो मानो देखो, माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है उस बिन्दु में भी एक शिशु है जहाँ शिशु का प्रवेश हुआ तो मेरे पुत्रो! देखो, सर्वत्र देवता उसकी रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते है। मेरे प्यारे! देखो, ये चन्द्रमा अमृत देने लगता है और सूर्य प्रकाश देने लगता है और अग्नि उष्ण बनाने लगती है, पृथ्वी गुरूत्व देना प्रारम्भ कर देती है और आपोमयी ज्योति बन करके आसन और ओढ़न बन जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, वायु प्राण देता है और मुनिवरो! देखो, यह अंतरिक्ष अवकाश देना प्रारम्भ कर देता है।

तो मुनिवरो! देखो, माता की अमृतमयी धारा को जानने के लिए जब हम विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश करते हैं, तो विचार आता है कि परमपिता परमात्मा का विज्ञान कितना अनुपम है। मेरे पुत्रो! देखो, अमृत कैसे जा रहा है? माता की रसना के निचले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है वह चन्द्रमा से अमृत को लेती रहती है उसी नाड़ी का सम्बन्ध माता की पुरातत् नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत् नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से होता है और लोरियों में पंचम नाड़ी बन करके चलती है जिसका माता की नाभि से बालक की नाभि तक समन्वय होता है।

परमात्मा की सूक्ष्म धारा

तो मेरे प्यारे! उस प्रभु का विज्ञान कितना अनूठा है, कितना महान है। तो इसलिए उस परमपिता परमात्मा को रक्षक कहा जाता है, वह रक्षा कर रहा है। कितने सूक्ष्म मूल में रक्षा कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, शिशु पनप रहा है, अमृत को पान कर रहा है, प्रकाश को पान कर रहा है और प्राणों को अपने में संचार कर अपनी सब प्रवृत्तियों में अव्रत कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, अवकाश अंतरिक्ष से आ रहा है, ''विचरणं ब्रह्मे कृतं ब्रह्मा वाचा'' मेरे पुत्रों! वह विचरण कर रहा है अपने में मानो देखो, आपोमयी ज्योति बन करके वह ओढ़न है, आसन है, पाँसे है। मानो देखो, उसी में वह रत रह रहा है। उसे आपोमयी ज्योति कहते है। और पृथ्वी गुरूत्व देने के लिए तत्पर रहती है। तो मुनिवरो! वह मेरा प्यारा प्रभु, कितना विज्ञानवेत्ता है। आज हम उस प्रभु के विज्ञान के ऊपर विचार विनिमय करते है तो विज्ञान अपने में शांत हो जाता है। मानव का विज्ञान तो यह है कि मानव अपने बिखरे हुए परमात्मा के वैज्ञानिक तथ्यों को अपने में एकत्रित करके उनको साकार रूप देता रहता है। परन्तु सूक्ष्म धारा तो उस परमपिता परमात्मा की ही विद्यमान रहती है।

तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं, केवल यह कि माता रक्षा नहीं कर रही है, क्योंकि वह परमपिता परमात्मा रक्षक है। द्वितीय रूप में, जब एक साधारण और व्यावहारिक रूपों में पालना की चर्चा करते है, तो माता पालना कर रही है। माता मानो देखो, अनुशासन में लाने के लिए तत्पर रहती है और विचारती रहती है कि हे बाल्य! तुम महान और पवित्र बन जाओ। परन्तु देखो, वह रजोगुण में शासन रहता है, तमोगुण में उत्पति का मूल रहता है और सतोगुण में पालना रहती है। तो मुनिवरो! देखो, ये तीनों मनके एक ही सूत्र में पिरोये जाते है। वही सतोगुण है, वही रजोगुण है और वही तमोगुण माना गया है। परन्तु तीनों एक दूसरे के पूरक कहे गये है। जैसे माला में तीन मनके होते है, वे तीनों मनके अपने में ही मानो देखो, एक सूत्र में पिरोये हुए है। तो मुनिवरो! देखो, उस माता का नाम विष्णु है।

और बेटा! विष्णु नाम आत्मा का है जो इस शरीर का संचालन करने वाला है। मेरे पुत्रो! देखो, यह विष्णु है ''ब्रह्मणं ब्रह्मे व्रताः'' जब आत्मा इस शरीर से निकल जाता है, तो बेटा! देखो, मानव अपने में शून्य हो जाता है।

महर्षि रेंगणी का चिन्तन

तो आओ, बेटा! मैं तुम्हें एक ऋषि के आश्रम पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि मुनि अपने में विद्यमान हो करके बेटा! एक अनूठी चर्चा करते रहते थे हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऐसा माना गया है कि प्रत्येक मानव अपने में मानवीयता की चर्चा करता रहा है, तो मुनिवरो! देखो, आज मैं तुम्हें उद्दालक गोत्र में ले जाना चाहता हूँ। हमारे यहाँ उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए है उन ऋषियों में, नाना वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता हुए है, तो मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें भारद्वाज के वंशलज में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बेटा! देखो, गृह में पति–पत्नी विद्यमान हो करके, अपने में अनूठे–अनूठे विचार विनिमय करते रहते है और वह कैसे अनूठे विचार है, कैसी दिव्यता है उनमें?

ब्रह्मयाग

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, एक समय बेटा! देखो, रेंगणी भारद्वाज, अपने में मानो देखो, याग करते थे। हमारे यहाँ परम्परागतों से ऋषि–मुनियों ने अपने विचारों को भी याग के रूप में परिणत किया है। मानो देखो, सबसे प्रथम प्रातःकालीन ब्रह्मयाग होता रहता था। ब्रह्मयाग का अभिप्राय

यह है कि ब्रह्म का चिन्तन करना और ब्रह्म के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर मानो अपने में अनुसंधान और विचार विनिमय करते रहना और मुनिवरो! विचार यह कि वह प्रभु कैसा अनूठा है, कैसा विचित्र है। वह मानो देखो, प्रातःकाल में जब सूर्य उदय होता है, उदय होने से पूर्व भी, प्रतिभा का दर्शन होता है। उस प्रतिभा में मानो देखो, सूर्य की नाना प्रकार की जो किरणें हैं वे उर्जा ले करके, प्रकाश ले करके रात्रि को अपने गर्भ में धारण करके मानो देखो, प्रकाश का द्योतक बन करके आ जाती है। वह प्रकाश मानो देखो, प्रभु की महानता और प्रभु का विज्ञान है। तो मुनिवरो! देखो, नाना प्रकार के कई तारा मंडलों की माला बनी हुई रहती है, कहीं मानो देखो, सूर्यों की माला।

तो इस प्रकार अपने में विचार विनिमय करते रहते थे। देखो, यह ब्रह्मयाग कहलाता है। जब जहाँ ब्रह्मा का चिन्तन करना, मनन करना, ब्रह्मा की प्रतिभा को अपने में धारण करना अपने में मानो देखो, अपनेपन का दर्शन करना है।

देवयाग

मेरे पुत्रों! देखो, द्वितीय जो याग है वह देवयाग कहलाता है। देवयाग का अभिप्राय यह है कि हम देवताओं का दर्शन करें और ''देवां ब्रह्मं ब्रहे व्रत्यं यागां रुद्रो वाह'' ब्रह्मणं लोकाम्'' मेरे पुत्रों! देखो, वेद का मंत्र कहता है कि देवयाग उसे कहते है – जहाँ हम देवताओं की रक्षा कर सके, हम देवताओं के संरक्षण में अपने जीवन को व्यतीत कर रहे है। मेरे पुत्रो! देखो, प्रातःकालीन, सूर्य उदय हो रहा है मानो देखो, चन्द्रमा अपनी अमृतमयी कान्ति दे रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, अग्नि अपने में प्रकाश और देवताओं का मुख बन रही है और देवताओं के मुखारबिन्दु में यदि तुम्हें किसी वस्तु को देना है तो अग्नि के मुखारबिन्दु में प्रवेश करते चले जाओ। तो मेरे पुत्रो! देखो, वह अग्न्याधान ''अग्नं ब्रह्म लोकां अग्निः अमृतं ज्योतिः'' मेरे पुत्रो! वह अमृतमयी ज्योति कही जाती है। तो विचार आता है कि हम अग्नि के ऊपर विचार करते चले जाए। अग्न्याधान करते हुए, अग्नि की प्रतिभा को अपने में धारण करते हुए मेरे पुत्रो! हम देवयाग करते है। देवयाग में बेटा! अग्निहोत्र मानो अग्नि को प्रदीप्त करना, नाना प्रकार के साकल्य प्रदान करना। उस साकल्य को अपने में प्रतिपादित करते हुए और देखो, वह ''देवाः यागां ब्रह्मणं व्रते'' वह देवयाग कहलाया गया है।

पितृयाग

तो आओ मेरे पुत्रो! विचार क्या कह रहा है, वेद का वाक् क्या कह रहा है, मेरे पुत्रो! वे दोनों पति–पत्नी, उनकी पत्नी का नाम शकुन्तका, महर्षि भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न होने वाले रेंगणी भारद्वाज अपने में एक समय प्रातःकाल बोले कि देवी! हम देवयाग करते रहते है, ब्रह्मयाग करते रहते है तो आज हमें पितरयाग करना चाहिए। तो बेटा! देखो, पितरों के याग के लिए वह तत्पर हो गये, उन्होंने अपने पितरों को निमन्त्रित किया और सबको निमन्त्रित करके मुनिवरो! देखो, वह अपने में तत्पर हो गये। मेरे प्यारे! देखो, उनका एक बाल्य था, ब्रह्मचारी श्वेताश्वेतर भारद्वाज। उसको माता ने प्रातःकालीन भोज कराया और वह अपनी क्रीडा करता रहा। परन्तु जब ''ब्रह्मणे देवा'' देवयाग के पश्चात् जब पितर याग का समय आया तो जितने पितर थे उनके पिता, पडपिता, महापिता मानो देखो, आचार्य पितर इत्यादि सब जो है, वे मंत्रों के अनुसार उनके आश्रम में पधारे। देखो, गृह में उनका प्रवेश हुआ, तो ऋषि ने मानो उनकी चरण वन्दना करते हुए नाना प्रकार के भोजों से तृप्त किया और तृप्त करके उन्होंने कहा प्रभु! आप हमें कुछ उपदेश दीजिए। उन्होंने कहा –हे रेंगणी भारद्वाज! तुम्हारा जो गोत्र है, वह बड़ा विचित्र है। हम भी उसी गोत्र में है। आगे हमारा कर्त्तव्य है कि हमें अपने पूर्वजों को ऊँचा बनाना है और पूर्वजों के जो क्रियाकलाप है अथवा उनके जो मौलिक विचार है उन्हें अपने में धारण करते हुए हमें मानो उसमें प्रणिव्रत करना है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने स्वीकार किया और उन्होंने नाना प्रकार के उपदेश पान करते हुए नाना भोजों से तृप्त करते हुए उनका पितर याग समाप्त हो गया।

मिथ्यावाद का प्रभाव

बेटा! पितरयाग के पश्चात् जब रेंगणी भारद्वाज अपने आसन पर आ पहुँचे तो उनका बाल्य क्रीड़ा करता हुआ उनके द्वार पर आया, बालक से कहा – हे बाल्य! तुमने भोज किया अथवा नहीं, उन्होंने कहा – कि मुझे भोज नहीं कराया गया। उन्होंने कहा – हे देवी! तुमने बाल्य को भोज नहीं कराया है? देवी ने कहा प्रभु! मैंने भोज कराया है। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा – हे बालक! तुम मिथ्या उच्चारण कर रहे हो। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा – हे बालक! तुम्हें यह प्रतीत है कि दर्शनों की प्रतिभा, एक पंक्ति यह कहती है कि **जिस गृह में मिथ्यावादी पुरुष रहते है, वह गृह अशुद्ध हो जाता है।** मानो देखो, जिस माता के द्वार पर वृत्तिका स्तम्भ देखो, अशुद्ध बालक अपनी आभा में रत रहता है वह गृह अशुद्ध है। तो माता ने कहा – हे बाल्य! तुम्हें यह प्रतीत है कि जिस माता का पुत्र मिथ्यावादी बन जाता है, उस माता का गर्भाशय दूषित हो जाता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, बालक उन वाक्यों को अपने में ग्रहण करता हुआ मौन हो गया और ऋषि ने कहा हे ब्रह्मचारी! हमारा जो वंशलज है यह बड़ा विचित्र है, इसमें कोई मानव मिथ्यावादी नहीं हुआ। हमारा गोत्र भारद्वाज कहलाता है। और भारद्वाज गोत्र में बहुत से वंशलज हुए है परन्तु वह सब सत्यवादी रहे है। तुम यह वाक् अशुद्ध उच्चारण कर रहे हो। इसलिए देखो, हम अपने को अभागा स्वीकार कर रहे हैं या तुम अभागे हो। मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में यह उच्चारण करके मौन हो गये। माता ने भी बालक को धिक्कारा। परन्तु देखो, केवल चार वर्ष और तीन दिवस का ब्रह्मचारी था, जिस बालक को इस प्रकार की ताड़ना दी जा रही थी।

महर्षि तत्त्वमुनि का आश्रम

तो मेरे पुत्रो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है कि वह बाल्य जब आयु से उर्ध्वा में आये और उनका जब वेदारम्भ प्रारम्भ हुआ तो मुनिवरो! देखो, रेंगणी भारद्वाज ने ब्रह्मचारी को महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के आश्रम में प्रवेश किया और तत्त्वमुनि महाराज के आश्रम में जब प्रवेश हो गये तो मुनिवरो! देखो, उनका जो अध्ययन करने का व्रत बना था उसमें सबसे प्रथम उपनयन संस्कार हुआ और उपनयन के पश्चात् वेदारम्भ हुआ। तो वेद में भिन्न–भिन्न प्रकार की शिक्षाएँ हैं। मानो उसमें विज्ञान है, उसमें कला कृत्तिका है, कला कौशलता है और नाना प्रकार का मानो परमाणुवाद है। तो उन्होंने बेटा परमाणुवाद को अपने में निहित किया।

तो मुनिवरो! देखो, एक समय तत्त्वमुनि महाराज ने प्रातःकाल ब्रह्मचारी से कहा – हे ब्रह्मचारी! तुम्हारा जो गोत्र है वह भारद्वाज गोत्र कहलाता है। मैंने भी तुम्हारे कई वंशलजों को दृष्टिपात् किया है परन्तु उनमें कोई भी ऐसा नहीं हुआ। परन्तु तुम विज्ञान के मार्ग पर अपने को ग्रहण कर रहे हो। उन्होंने कहा – हे भगवन! मेरा जो अंतर्हृदय है मानो मेरे अंतःकरण में एक वाक् आ रहा है कि माता ने ये कहा –कि मिथ्यावाक् अशुद्ध कर देता है, गृह को नारकिक बना देता है, राष्ट्र को अपवित्र बना देता है। तो हे प्रभु! मैं इस प्रकार के मिथ्यावाद को विज्ञान के माध्यम से साकार रूप देना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि तत्त्वमुनि महाराज ने ब्रह्मचारी के वाक्यों को स्वीकार किया परन्तु देखो, उन्होंने कहा तुम्हारा जो वंशलज रहा है, वह भारद्वाज रहा है और तुम्हारे वंशलज में तुम्हारा जो जन्म है वह मानो देखो, ग्यारह हजार पाँच सौ इक्सठ् के लगभग भारद्वाज गोत्रों में ये वंशलज हुए है तुम्हारे इस वंशलज में आत्मवेत्ता हुए है, ब्रह्मवेत्ता हुए है, ब्रह्म की उड़ान उड़ने वाले हुए। मेरे प्यारे! देखो, ये प्रेरणा तुम्हें माता से प्राप्त हुई है या पिता से। उन्होंने कहा –मुझे माता–पिता दोनों से ही यह प्रेरणा प्राप्त हुई है।

मेरे पुत्रों! देखो, वेदारम्भ हो गया, परमाणुवाद में ब्रह्मचारी पारायण हो गया। हमारे यहाँ दद्दड़ गोत्रीय तत्त्वमुनि महाराज कि शिक्षा प्रणाली बड़ी विचित्र मानी है उसमें विज्ञानशाला जिसमें नाना प्रकार के यंत्र विद्यमान थे। ब्रह्मचारी स्वयं अध्ययन करते थे, यंत्रों में विद्यमान हो करके वह नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की यात्रा करते रहते।

विभिन्न मण्डलों की यात्रा

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के आश्रम में एक समय महर्षि व्रेतकेतु ऋषि के बाल्य ब्रह्मचारी श्वेताश्वेतर ने बेटा! एक यान का निर्माण किया था। जिस यान में बेटा विद्यमान हो करके वे महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के यहाँ से उड़ते और वह यान जब उड़ान उड़ने लगा तो पृथ्वी से उड़ाने उड़ी, आश्रम से उड़ाने उड़ी तो वह चन्द्रमा में चला गया और जब चन्द्रमा से उड़ाने उड़ी तो वह बुध में प्रवेश कर गया और जब बुध से उड़ान उड़ी

तो शुक्र में प्रवेश कर गए और जब शुक्र मंडल से उन्होंने उड़ाने उड़ी तो वह मंगल में प्रवेश कर गये और मंगल से जब उड़ान उड़ी तो मुनिवरो! देखो, वह मृचिका मंडल में चले गये और मृचिका मंडल से उड़ाने उड़ करके वह श्वेती मंडल में चले गये और श्वेती मंडल से जब उन्होंने उड़ाने उड़ी तो बेटा! अरून्धती मंडल में चले गये और अरून्धती मंडल से जब उड़ान उड़ी तो वह वशिष्ट मंडल में चले गये और वशिष्ट मंडल से उड़ान उड़ी तो वह विश्व वृचिका मंडल में प्रवेश कर गये और जब वृचिका मंडल से उड़ान उड़ी तो वे मानकेतु मंडल में चले गये और मानकेतु मंडल से उड़ान उड़ी तो वह कृतिवाचकेतु मंडल में चले गये और वाचकेतु मंडल से उड़ान उड़ी तो वह मुनिवरो! देखो, माधुरी मंडल में चले गये और माधुरी मंडल से उड़ान उड़ी तो वह श्वेतकेतु मंडल में मानो उसकी परिक्रमा करने लगे, उसमें भी प्रवेश कर गये। तो बेटा! मूल यह रहा कि जब वह यान ऋषि के आश्रम में आगमन करने लगा तो उससे पूर्व बेटा! बहत्तर लोकों का भ्रमण करता हुआ वह ऋषि के आश्रम में प्रवेश कर गया। तो विचार आता रहता है कि विज्ञान बेटा! विद्यालयों में ब्रह्मचारियों के मध्य में खिलवाड़ बन करके रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, दद्दड़ गोत्रीय महर्षि तत्त्वमुनि महाराज जिनकी देखो, दो सौ चौरासी वर्ष की आयु थी उनके यहाँ विज्ञान की भिन्न–भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ी जाती थी। तो मेरे प्यारे! देखो, विद्यालय में ब्रह्मचारी अपनी उड़ाने उड़ रहा है, उड़ान उड़ता हुआ मुनिवरो! देखो, विज्ञान के वाचमय में वह यान, ऋषि के आश्रम में प्रवेश कर गया। इसी प्रकार जैसे उसका गमन था वैसे उसका आगमन हुआ। तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है कि जब मुनिवरो! देखो, 'यज्ञां ब्रह्मा' जब वह समापन हो गया ''विद्यानां ब्रह्मे कृतम्'' देखो, कुछ समय के पश्चात् विद्या पूर्ण हो गई। जब विद्या में पूर्णता को प्राप्त हो गये, जितना मानो उसकी सीमा थी, विद्या के अध्ययन करने की वैसे सीमा तो कोई होती नहीं है, परन्तु जहाँ तक उसमें परीक्षा मानो जब भी परीक्षा होती तब ही मानो वे किसी ब्रह्मचारियों से प्रथम रहते किसी में मानो द्वितीय रहते।

दीक्षान्त उपदेश

इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, उनका बारह वर्षों का विद्या काल पूर्णता को प्राप्त हो गया। विद्यालय में अपनी ''सक्षम ब्रह्मे'' उत्तीर्ण करके, आचार्य के चरणों में विद्यमान हो गये। आचार्य ने कहा – हे ब्रह्मचारी! आज मानो देखो, तुम्हारा विद्या काल समाप्त हो गया है। अब मैं तुम्हें विद्यालय से अवकाश देने के लिए तत्पर हूँ। आज तुम्हारा दीक्षांत उपदेश होगा।

तो मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी अपने–अपने आसन पर विद्यमान हो गये, वहाँ मानो देखो, कुछ माताएँ निमंत्रण के अनुसार और उस समय जो राजा थे सोमवृतिका, वे मेरे पुत्रो! देखो, महाराजा अश्वपति के वंशलज में थे। जब राजा ''सोमवृतिका ब्रहे'' मेरे पुत्रो! देखो, वह भी एक पंक्ति में विद्यमान है वहाँ, नाना ऋषिवर देखो, महर्षि वैशम्पायन, महर्षि प्रवाहण, शिलक और दालभ्य और मुनिवरो! देखो, स्वतः महर्षि तत्त्वमुनि महाराज सब पंक्तिबद्ध हो गये। और पंक्ति लगने के पश्चात् आचार्य ने अपने ब्रह्मचारी से अपना दीक्षांत उपदेश दिया।

उन्होंने कहा – हे ब्रह्मचारी! आज तुम इस विद्यालय को त्याग रहे हो, यह हमारा बड़ा सौभाग्य है। आज हम उसमें प्रतिभाषित है, हमारी यह इच्छा है, कि अब तुम इस विद्यालय को त्याग रहे हो, विद्यालय को त्यागते समय हृदय में तुम्हें यह स्मरण रहना चाहिए कि जिस विद्यालय के प्रांगण में मानो देखो, जिस स्थली पर तुमने विद्या का अध्ययन किया है, मानो देखो, यह विद्या तुम्हारी ''मानं ब्रहे'' परिपक्व तुम्हारे हृदय में है इसके प्रति तुम्हारे हृदय में श्रद्धा बनी रहे। और यह भूमि तुम्हारे अंतर्हृदय में मानो देखो, इसका वास हो जाए। जिससे यह विद्यालय पनपता रहे और विद्यालय में समय–समय पर देखो, अपने क्रियाकलापों की प्रतिभा का दर्शन होता रहे।

ब्रह्मचारी का अभिप्राय

तो मेरे प्यारे! देखो, आचार्य ने यह उपदेश दिया। आचार्य की पत्नी ने कहा ''सम्भवा ब्रह्मणं ब्रहे'' हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, मैनें भी इस विद्यालय में अध्ययन किया है और अध्ययन के पश्चात् मैंने अपने मार्ग को चुनौती प्रदान की है। आज मेरा एक ही दीक्षान्त उपदेश है कि मानो देखो, संसार के लिए तुम्हारा यह कर्त्तव्य है कि तुम ब्रह्मचारी हो। ब्रह्मचारी उसे कहते है जो ब्रह्म और चरी को अपने में धारण कर लेता है। देखो, ब्रह्म कहते है परमपिता परमात्मा को और चरी कहते है इस प्रकृति को। मानो प्रकृति, ब्रह्म दोनों को अंग और उपांगों से जानने का नाम ही हमारे यहाँ ब्रह्मचरिष्यामि कहा गया है। वह ब्रह्मचारी है। और ब्रह्मचारी का कर्त्तव्य है कि ब्रह्म को अपने में धारण करता हुआ मानो संसार में जितने भी जिज्ञासु है मानो देखो, मातृवत् है उनको माता की दृष्टि से पान करना तुम्हारा यह कर्तव्य है, तुम्हारी यह प्रतिभा है। तो मेरे पुत्रो! देखो, आचार्य के प्रांगण में ब्रह्मचारी ने माता के चरणों को स्पर्श करके कहा – धन्य है, मातेश्वरी! मानो मेरा यही कर्त्तव्य रहेगा।

महर्षि वैशम्पायन का उद्‌बोधन

उसके पश्चात् वह इतना वाक् उच्चारण करके मौन हो गये इतने में बेटा महर्षि वैशम्पायन बोले – हे ब्रह्मचारी! अब तुम विद्यालय को त्याग रहे हो। मेरा तो एक ही मन्तव्य रहता है, कि जिस विद्या का तुमने अध्ययन किया है, मैंने श्रवण किया है कि तुमने परमाणु विद्या का अध्ययन किया है। इस परमाणु विद्या पर तुम्हारा अधिपत्य होना चाहिए और परमाणु विद्या को ले करके तुम्हारी लोक लोकान्तरों में उड़ान होनी चाहिए। इस प्रकार की मानो तुम्हारी विज्ञानशाला हो, यज्ञशाला हो और उस शाला में विद्यमान हो करके तुम्हारा विज्ञानमयी पूर्ण क्रियाकलाप होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि वैशम्पायन यह उच्चारण करके मौन हो गये और मौन हो जाने के पश्चात् उन्होंने कहा ''ब्रह्म वर्णों ब्रह्म वाच प्रह्वाः वज्रो ब्रह्मणं लोकाम्'' हे ब्रह्मचारी! अपने में अपनेपन का बेटा! जैसे सूर्य अपनी आभा का प्रकाश देता रहता है इसी प्रकार ब्रह्मचारी को अपनी आभा में प्रकाशित रहना चाहिए और उसी प्रकाश में प्रकाशवान् हो करके अपने में महानता का दर्शन होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी ने यह वाक् स्वीकार कर लिया और ऋषि भी अपना संक्षिप्त उपदेश दे करके अपने आसन पर विद्यमान हो गये।

तपस्या में महानता

इतने में बेटा! महर्षि व्रेतकेतु महाराज उपस्थित हुए और व्रेतकेतु ने कहा –हे ब्रह्मचारी! तुम इस विद्यालय को त्याग रहे हो, विद्यालय को त्यागते समय तुम्हें यह विचार करना चाहिए कि तुम्हें तप करना है बिना तपस्या के संसार में कोई भी मानव अपने में सपफलता को प्राप्त नहीं होता है जैसे माता ब्रह्मचर्यत्व में पनपती रहती है और मानो वह तपस्या करती है तो उसके पश्चात् वह ममतामयी को प्राप्त होती है जैसे देखो, आचार्य अपने में तपोमयी बनता हुआ ब्रह्मचारियों को तपस्वी बनाता है, जैसे राजा तपने के पश्चात् अपने राष्ट्र को तपस्वी बना देता है जैसे मानो तुमने इस विद्या का अध्ययन किया है तुम्हें भी तप करना है जैसे परमपिता परमात्मा ने सृष्टि की जब रचना की तो उन्होंने भी तप किया और तप के पश्चात् उसकी उग्र क्रिया बनी और उग्र रूप बन करके ही इस संसार की रचना हो गई। इसी प्रकार जब तक कोई मानव तपस्वी नहीं बनता है तब तक मुनिवरो! देखो, उसका जीवन महान नहीं बना करता है। हे ब्रह्मचारी! तुम तपस्वी हो, महान हो, परन्तु तुम्हें अपने में महान बनने के लिए सदैव तत्पर रहना है।

तो मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी ने यह स्वीकार कर लिया कि प्रभु! मैं तपस्वी भी बनूँगा। मेरे प्यारे! देखो, वह ''तपश्चं ब्रह्म'' इतने में महर्षि प्रवाहण जी ने अपने दो शब्द उच्चारण किए। महर्षि प्रवाहण बोले –कि देखो, जब हम माता की लोरियों का पान करते थे जब प्रबल हुए तो माता हमें शिक्षा देती रहती थी और यह कहती थी कि तुम ब्रह्मवेत्ता बनो और विज्ञानवेत्ता बनो। तो विज्ञानवेत्ता और ब्रह्मवेत्ता दोनों बनने का हमने संकल्प किया। मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता जो बन जाता है वह विज्ञानवेत्ता स्वतः बन जाता है। परन्तु देखो, उसे कहीं जाने की आवश्यकता नहीं होती। वह जो आत्मवेत्ता होता है जब वह ब्रह्मवेत्ता हो जाता है तो आत्मवेत्ता बन करके वह विज्ञान मार्ग से हो करके जाता है। देखो, उसे पाँच ज्ञानेन्द्रियों में जो संसार समाहित रहता है, जो विज्ञान समाहित रहता है, उस विज्ञान को अपने में धारण करता हुआ, वह विज्ञानवेत्ता बन जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऐसा वाक् उच्चारण करके महर्षि प्रवाहण ने कहा – तुम मन और प्राण दोनों को अपने में एकाग्र करने का प्रयास करके अणु और परमाणु को जानने वाले **विज्ञानवेत्ता बनो**

मेरे प्यारे! देखो, यह उपदेश जब उन्होंने दिया तो ब्रह्मचारी ने ऋषियों के चरणों को बारी–बारी स्पर्श करके कहा – धन्य है, प्रभु! अब मुझे आज्ञा दीजिए मानो मैं भयंकर वनों में जा रहा हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, आचार्यों की आज्ञा पा करके और अपने में ''व्रत्यं ब्राह्मणः वाच प्रहे''।

आचार्य के तीन उपदेश

मेरे पुत्रो! देखो, वहाँ से वेदों का उद्घोष करते हुए ब्रह्मचारी ने विद्यालय को त्याग दिया और ब्रह्मवर्चोसि मानो उन्होंने विचारा कि मानो ब्रह्मचारी कौन है? आचार्य ने मुझे तीन प्रकार के उपदेश दिये है। ब्रह्मचारी कौन है, ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? और ब्राह्मण कौन है? मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि अपने में विचार रहा है और ब्रह्मचारी आगे को भ्रमण करता हुआ भयंकर वनों में पहुँचा। कजली वनों में जा करके यह चिन्तन करने लगा कि मुझे आचार्यजनों ने तीन उपदेश दिये है ब्रह्मचारी कौन है? ब्राह्मण कौन है? और देखो, ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? मेरे पुत्रो! देखो, विचारते–विचारते यह आया, कि ब्राह्मण तो वह है जो एक–एक कण में, अपने प्रभु का दर्शन करता है वह ब्राह्मण कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी कौन है? जो प्रत्येक श्वास को ब्रह्म सूत्र में पिरो देता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? जो विज्ञानवेत्ता है और विज्ञान के मार्ग से हो करके आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है। आत्मा के आश्रित हो जाता है, आत्मा को ही सर्व संसार में दृष्टिपात् करता है वह ब्रह्म की चरी को चरने वाला है।

मेरे पुत्रो! देखो, ब्रह्मचारी ने यह विचार विनिमय करके, अपने चिन्तन में लग गये, मनन करने लगे। तो बेटा! उनके द्वार महर्षि पनपेतु अप्रेत ब्रह्मचारी आ गये। दोनों का चिन्तन प्रारम्भ होने लगा। तो मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। केवल परिचय देने के लिए आया हूँ, और वह परिचय क्या है मेरे पुत्रो! देखो, इस संसार में अपने में मानव मानवीयता का दर्शन कर लेता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, उद्दालक गोत्र में इस प्रकार के विचारवेत्ता ऋषि और विचार विनिमय करने वाले विद्यालयों में ब्रह्मचारी, आचार्य और विज्ञान की उड़ाने उड़ने वाले आध्यात्मिकवाद में मानो उनकी प्रतिष्ठा रही है। तो विचार क्या मुनिवरो! आज मैं यह विचार दे रहा था कि परमपिता परमात्मा मानो जड़वत् और चैतन्यवत् दोनों में विद्यमान रहता है। परमपिता परमात्मा ही विष्णु बन करके हमारा पालन कर रहा है। माता मानो देखो, ममता को प्राप्त होती रहती है। वही रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण में सदैव एक ब्रह्म का दर्शन, अनुशासन का हमें दर्शन होता रहता है। तो मेरे पुत्रो! आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनुपमता, उसका ज्ञान और विज्ञान अपने में धारण करके बेटा! इस संसार सागर से पार हो जाए।

आओ, मेरे प्यारे! में विशेष चर्चा न देता हुआ शेष चर्चा तो मैं उद्दालक की कल ही प्रगट करूँगा। श्वेताश्वेतर भारद्वाज का विज्ञान कितना नितान्तता में रहा है और भौतिकवाद अपने में कितना नृत करता रहा है। तो विचार क्या मुनिवरो! हम परमपिता परमात्मा की महती और अनुपमता को जानते हुए इस संसार रूपी सागर से पार हो जाए। ऐसा बेटा! देखो, ऋषि, मुनि जिस भी काल में विद्यमान होते रहे है, उसी काल में परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का चित्रण करते रहे है, अथवा इसके ऊपर अनुष्ठान करते रहे है। हम उस परमपिता परमात्मा को जाने, कि वे किसलिए यह प्रयत्न करते है। बेटा! वह कहते है कि हमारे जीवन में अन्धकार न आ जाए। हम प्रकाश में रहे, हमारी मृत्यु न आ जाए। हम सदैव मानो देखो, मृत्यु को विजय करने वाले बने, मृत्यु की चर्चा तो बेटा! कल प्रगट करूँगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान को जानते हुए मुनिवरो! इस संसार से पार हो जाए ये हमारे वाक्यों का अभिप्राय है। समय मिलेगा शेष चर्चाएँ इसके आगे की कल प्रगट करेंगे। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन पाठन, आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है कि हम अपने में मानो देखो, प्रभु के विज्ञान और महती के ऊपर चिन्तन और मनन करते रहे जिससे मनन शैली पवित्र बन करके इस संसार सागर से पार हो जाए अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां दधिा ब्रह्म वायाः। ओ३म् गतौ शन्न रथं आप्यां लोकम्। अपा रथं मा नः।। ओ३म् यशः रयि नामरेवं आभ्यां रथं मानः। वायुः रतं अग्नं ब्रह्सौ।। ओ३म् पृथिवी रथश्चां गायन्त्वा, मनाः वाचन्नमः।। **दिनांक–27–01–1988–शिकोहपुर, मेरठ**

६ ब्रह्म की गाथा–दिनांक–02–03–1988

जीते रहो,

देखो, मुनिवरो, आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा। आज हमने पूर्व से, जिन वेद मंत्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद–वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेदमंत्र उस परमपिता की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है, उसी प्रकार प्रत्येक वेद मंत्रः उस परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन कर रहा है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरुप है और याग उनका आयतन है अथवा उनका गृह है, उनका सदन है। वे उसी में ओत–प्रोत रहने वाले है।

तरंगों का समन्वय

इसीलिए हमारा प्रत्येक वेद मंत्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन कर रहा है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सर्वज्ञ हैं। कोई स्थली ऐसा नहीं है, जहाँ वे परमात्मा न हो। समुद्रों की कोई भी तरंग ऐसी नहीं है, पर्वतों की कोई गुपफा ऐसी नहीं है जहाँ मानो वे परमपिता परमात्मा न हो। इसीलिए मानव उस परमपिता परमात्मा से ओझल नहीं हो सकता। वे सर्वज्ञ है। इसीलिए मानव के हृदय में नाना प्रकार की तरंगों का उद्बुद्ध होना और उन तरंगों से समन्वय होता हुआ, मानव इस ब्रह्माण्ड को अपने में मापने लगता है और परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके अनन्तमयी आभा को अपने में धारण करने लगता है।

वसुन्धरा

तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेद मंत्रः क्या कह रहा है। वेद का मंत्र कहता है, 'वसुन्धरां ब्रह्मणं ब्रह्मे व्रतम्' मानो वे परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रुप में रत रहने वाले है। हमारे यहाँ वसुन्धरा के नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द माने गये है। हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न–भिन्न प्रकार की विवेचनाएँ होती रही है और उन विवेचनाओं में मानवीय गंभीरता, दर्शन और उसकी आभा में मानव सदैव रत रहा है। जैसे आज के हमारे वैदिक पठन–पाठन में माता वसुन्धरा का वर्णन आ रहा है। वसुन्धरा कहते है, जिसके गर्भस्थल में हम सब वशीभूत रहते है। हमने इसके पूर्वकाल में विष्णु की विवेचना की और विष्णु की विवेचना अन्य रुपों में भी जा सकती है। परन्तु आज का हमारा वेद मंत्र एक शब्द को ले करके, जो वेद मंत्र और उसकी प्रतिभा में मानव सदा निहित रहा है। हमारे यहाँ वसुन्धरा का बड़ा वर्णन आता रहता है।

तो मेरे प्यारे! वसुन्धरा कहते है जिसके आंगन में, जिसके गर्भ में जो हमें बसाने वाली है, उसका नाम वसुन्धरा कहलाता है। तो मेरे प्यारे! हमारे यहाँ वसुन्धरा नाम माता का है। जिस माता के गर्भस्थल में हम सब वशीभूत रहते है। उस माता का नाम वसुन्धरा कहलाता है। जो मानो ''वसु ब्रह्मणं ब्रह्मे वसुन्धराः'' हे माता! तू वसुन्धरा है तेरे ही गर्भस्थल में हम सदैव निहित रहते है। तू अपने में बसाने वाली है। तो मुनिवरो! देखो, उस माता का नाम वसुन्धरा है जो माता अपने में हमें धारण करने लगती है और वह धारयामि कहलाती है।

मानो देखो, जिस समय माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है। बिन्दु में शिशु है और जब वह शिशु माता के गर्भस्थल में प्रवेश करता है तो मानो देखो, माता के गर्भस्थल में शिशु के जाते ही उसकी रक्षा के लिए सर्वत्र देवत्तव जागरुक हो जाते हैं। सर्वत्र देवता जागरुक हो जाते है। मानो जैसे माता के गर्भस्थल में शिशु का प्रवेश हुआ उस समय बेटा! देखो, ''ब्रह्मणं अमृताम्'' वे चन्द्रमा अमृत देने लगता है, सूर्य प्रकाश देने लगता है और मुनिवरो! देखो, ये पृथ्वी गुरुतव देना प्रारम्भ करती है और आपोमयी ज्योति देना प्रारम्भ कर देती है।

आचमन का अभिप्राय

मेरे प्यारे! देखो, इसीलिए यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, तीन प्रकार का आचमन करता है। आचमन का अभिप्राय ये है कि जब माता के गर्भस्थल में यह शिशु विद्यमान होता है तो मानो देखो, जल, आपो ही मुनिवरो! देखो, इसका आसन बना रहता है आपो ही इसका ओढ़न बना रहता है और आपो ही इसके पाँशें बने रहते है। तब मुनिवरो! देखो, उस आपो में घिरा मानो यह माता के गर्भस्थल में विद्यमान रहता है। तो यजमान भी इसी प्रकार ये कहता है प्रभु से, 'यज्ञ वक्रतम्' कि मैं मानो जैसे माता के गर्भस्थल में हम प्रायः वशीभूत रहते है और तीन प्रकार का आचमन करते इसीलिए मैं ज्ञानरुपी अमृत से, ज्ञानरुपी शीतलता से मानो मैं ढका हुआ अपने में अपनेपन को दृष्टिपात् करता रहूँ मानो देखो, इस प्रकार अनुपम में कल्पना करता हुआ श्री, यश को प्राप्त करता है। तो मुनिवरो! देखो, विचार कहता है, वेद का मंत्र कहता है, कि माता के गर्भस्थल में मुनिवरो! यह देखो, आपोमयी कहलाता है। ''आपां ब्रह्मे'' आपो ही इसका ओढ़न, आसन और पाँशें बने हुए है। उसी में ये जीवन सत्ता को प्राप्त करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, वह देवत्तम् आपो है।

उसके पश्चात् देखो, अग्नि अपने में प्रकाश देती हुई मानव को उष्णता देती है। अग्नि का गुण है उष्णता और जब उष्णता देने लगती है तो ये अपने में उष्णता को प्राप्त करके अपने जीवन को तेजोमयी बनाता है। मेरे प्यारे! देखो, वायु प्राण देना प्रारम्भ कर देती है। वायु ही मुनिवरो! देखो, गति देने वाली है। प्राण प्रदान करने वाली है। तो मुनिवरो! देखो, अंतरिक्ष उसे अवकाश करता है, अवकाशम।

तीन प्रकार का परमाणुवाद

हमारे यहाँ विज्ञानवेत्ता बेटा! तीन प्रकार के परमाणु के ऊपर अन्वेषण करते रहे है। तीन प्रकार का परमाणुवाद है जैसे मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ गुरुतव, तरलतव और तेजोमयी और वायु इन परमाणुओं को गति देती है और गतिवान् जहाँ से हो रहा उसको अवकाश कहते है, अंतरिक्ष कहते है। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि कहता है, वेद का मंत्र कहता है कि ''आपो हिरण्यं रथं ब्रह्मे'' मेरे प्यारे! देखो, आपोमयी ज्योति प्रदान करने वाला है। वह ज्योतिवान् कहलाता है।

समन्वय

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या कि माता के गर्भस्थल में देवत्तव अपने में जागरुक हो रहा है। परन्तु यदि माता से यह प्रश्न किया जाए कि हे माता! तेरे गर्भस्थल में अमृत कौन दे रहा है? तेजोमयी कौन बना रहा है? अवकाश कौन दे रहा है? तो मेरी भोली माता को यह प्रतीत ही नहीं हो रहा है कि कौन अमृत दे रहा है? मेरे पुत्रो! देखो चन्द्रमा का जो समन्वय है वह समुद्रों से होता है। समुद्रों से ही ये सोम लेता है। समुद्रों से, जलों से तेजोमयी लेकर के उसको अमृतमयी बनाकर के बेटा! माता की रसना के निचले विभाग में चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है। उसी नाड़ी का समन्वय मेरे पुत्रो! पुरातत् नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत् नाड़ी का सम्बन्ध माता की पंचम लोरियों से गमन करता हुआ वहाँ से पंच नाड़ियाँ बनती है। माता की नाभि से उन नाड़ियों का समन्वय है और बालक की नाभि का और माता की नाभि का समन्वय एक तारतम्य होता है।

वसुन्धरा का प्रथम स्वरुप

मेरे प्यारे! जब मैं प्रभु के इस विज्ञान के ऊपर विचार–विनिमय प्रारम्भ करता हूँ कि वह प्रभु कितना विज्ञानमय अनूठा है। कितना विचारक कृतम् मानो ये विज्ञान अपने में कितना महान है और पवित्रता की वेदी पर रत हो रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान अपने में सार्थक है। विज्ञान जो प्रभु का दिया हुआ अनुपम वरदान है। उसकी तुलना अनुपम और विचित्रतव मानी गयी है। तो आओ, मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, तुम्हें मैं व्याख्यान नहीं देने आया हूँ। केवल परिचय देने के लिए आया हूँ कि प्रभु के विज्ञान का ये कितना अनुपम ये परिचय माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, वह सूर्य प्रकाश देने वाला है। माता के गर्भस्थल में नाना प्रकार की उर्ज्वा के द्वारा मानव को प्रकाशमान बनाता है परिपक्व बनाने वाला है।

विभिन्न लोकों से नाड़ियों का सम्बन्ध

तो मेरे प्यारे! देखो, माता को वसुन्धरा कहते है क्योंकि वह हमें अपने में वशीभूत कर रही है, अपने में धारण कर रही है, अपने में बसा रही है। तो इसीलिए माता का नाम वसुन्धरा कहा गया है। हे वसुन्धरा! तू कल्याण करने वाली, ममत्व को धारण करने वाली है। तो मेरे प्यारे! देखो, वसुन्धरा नाम माता को कहा गया है। मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में हम वशीभूत हो रहे है। जब निर्माणवेत्ता इस मानव शरीर का निर्माण करता है तो माता के गर्भस्थल में बेटा! 72 करोड़ 72 लाख 10 हजार 2 सौ 2 नाड़ियों का निर्माण हो जाता है। वाह रे, मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। किसी नाड़ी का सम्बन्ध अंतरिक्ष से रहता है किसी का मानो देखो, पृथ्वी के तलों से रहता है किसी का समन्वय चन्द्रमा से रहता है तो कोई नाड़ी ऐसी है जिससे देखो, तीन प्रकार के मस्तिष्कों का निर्माण होता है। एक मस्तिष्क, द्वितीय लघुमस्तिष्क और रेणुवृत्तिका मस्तिष्क।

नाना लोक–लोकान्तरों की माला

मेरे प्यारे! देखो, जब उनमें गति होने लगती है तो ये जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात् आ रहा है। मेरे पुत्रो! ये उसे दृष्टिपात होने लगता है। जब मानव समाधिस्थ हो करके, योग साधना के द्वारा मेरे पुत्रो! देखो, इस संसार को ब्रह्मरन्ध में दृष्टिपात् करने लगता है। तो ये ब्रह्माण्ड मानो एक खिलवाड़ दृष्टिपात् आने लगता है। नाना प्रकार के लोक–लोकान्तरों की माला, नाना मालाओं को अपने में धारण करने लगता है। बेटा! मैं मालाओं के सम्बन्ध में तो विशेषता तुम्हें देना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये है कि प्रभु का कितना अनूठा विज्ञानमयी ये जगत् है, ये मानवीयतव है।

विचित्र निर्माण शाला

मेरे पुत्रो! जब मानव का निर्माण होने लगता है निर्माण करने वाला, विश्वकर्मा निर्माण करता है तो निर्माणशाला में कितनी विचित्र एक निर्माणशाला है। मेरे प्यारे! देखो, इसमें कहीं दो प्रकार के हृदयों का निर्माण किया गया है। देखो, प्रथम हृदय मस्तिष्क में माना गया है और द्वितीय हृदय मेरे प्यारे! देखो, गृह विष्णु के देखो ऊर्ध्वाभाग में इसे भी हृदय कहते है। इस प्रकार हमारे यहाँ दो प्रकार के हृदयों का निर्माण किया गया है। तो विचार आता रहता है। हृदयधैं ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रह्मे गम्यं बृही वृताः।

बुद्धियाँ

मेरे प्यारे! देखो, निर्माण करने वाला निर्माण करता है। तीन प्रकार की बुद्धियों का निर्माण मेरे प्यारे प्रभु! ने किया है। बुद्धि, मेघा, ऋतम् और प्रज्ञा कहलाती है। मेरे पुत्रो! देखो, वह निर्माण सब माता के गर्भस्थल में होता है। देखो, उसी में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार ये चतुष अन्तःकरण कहलाता है। मेरे पुत्रो! देखो, ऐसा विचित्र ये मानवीयतव है। इसके ऊपर जब विचार–विनिमय में प्रारम्भ करता है। तो मानव अपने में अपनेपन का दर्शन करने लगता है।

वसुन्धरा का द्वितीय स्वरुप

तो आओ, मेरे प्यारे! उस माता का नाम वसुन्धरा है। जिस माता के गर्भस्थल में हमारा निर्माण होता है और माता अपने में धारण करने लगती है, अपने में बसा लेती है। बसाने का नाम ही वसुन्धरा कहलाता है। ''वसु ब्रह्मे वसुन्धराः अभ्यं ब्रह्माः लोकाम्'' मेरे प्यारे! देखो, द्वितीय रुप में वसुन्धरा कहते है पृथ्वी को। जब माता के गर्भस्थल से ये मानव पृथक् हो जाता है तो इस संसार में आता है। तो बेटा! वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है। ये पृथ्वी के गर्भस्थल में विद्यमान हो जाता है। मेरे पुत्रो! देखो, प्रायः ये जो पृथ्वी है ये वसुन्धरा कहलाती है। इसी के गर्भस्थल में बेटा! ये संसार वशीभूत हो रहा है। कहीं खाद्यान्न के द्वारा, कहीं खनिज के द्वारा मेरे पुत्रो! नाना प्रकार के खनिज पदार्थों के जन्म देने वाली मानो ये वसुन्धरा कहलाती है। इसी के गर्भस्थल में बेटा! ये पान करता रहता है। अपने जीवन को उदबुद्ध करता रहता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ये माता वसुन्धरा नाना प्रकार के खाद्यान्न पदार्थों को प्रदान करने वाली है। द्वितीय जो खनिज है वह मानो देखो, खनिज पदार्थों में देखो, कहीं परमाणुओं का प्रवाह गमन कर–कर है कहीं स्वर्ण के परमाणुओं का आदान–प्रदान हो रहा है कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है, रत्नों का निर्माण हो रहा है और भी नाना प्रकार के बेटा! खनिज विद्यमान है इसके गर्भस्थल में। जिस भी काल में वैज्ञानिको ने बेटा! इसके गर्भ में प्रवेश किया है तो इसके गर्भ में नाना प्रकार के देखो खनिज तप रहे हैं। कहीं मानो सूर्य की किरणें आकर के नाना प्रकार के अवृत्तों में उदय होकर के जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है। वही जल मेरे प्यारे! देखो, शोधन के रुप में वाहनों को क्रियात्मक बनाता रहता है। कोई धातु ऐसी है जो अंतरिक्ष में यान को गमन कराती है तो कोई देखो, इस प्रकार का खनिज है देखो, जलाशय है, अपने में बहने वाली वस्तु का नाम बेटा! जल माना गया है। आपोमयी माना गया है। जिस आपो में घिरा हुआ ये मानवत्व रहता है।

बेटा! तो विचार आता रहता है कि इसके गर्भ में क्या वस्तु नहीं है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है कि वसुन्धरा के सम्बन्ध में नाना प्रकार का प्रसंग आता रहता है। महर्षि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला भी प्रायः स्मरण आने लगती है। मैं महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! देखो, ''ब्रह्मणे ब्रह्मः'' वसुन्धरा के सम्बन्ध में जब ब्रह्मचारी सुकेता ने ये कहा कि महाराज! यह वसुन्धरा क्या है? क्योंकि वेद के मंत्रों में एक वसुन्धरा सूक्त कहलाता है। तो प्रभु! इसके सम्बन्ध में जानना चाहता हूँ? तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ब्रह्मचारी सुकेता से कहा–कि वसुन्धरा उसे कहते है जिसके गर्भस्थल में यह नाना प्रकार का खनिज पदार्थ तपायमान है। निर्माण करने वाली है। उस माता का नाम वसुन्धरा है। क्योंकि उसी के गर्भ में सब वशीभूत है। हम प्राणी भी उसी में वशीभूत रहते है। तो मुनिवरो! देखो, जो बसाती है। अपने में धारण कर लेती है। उसका नाम वसुन्धरा कहलाया जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना प्रगट की तो वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के गर्भस्थल में प्रवेश होकर नाना प्रकार के खाद्य और खनिजों को जानने का प्रयास किया है। मैं विचारता रहता हूँ कि एक ही पौधा है खाद्यान्न का, एक ही पौधा है जिसको अन्नाद कहते है। एक ही पौधा है बेटा! दो प्रकार का अन्न है, एक अन्न पशुपान कर रहा है और द्वितीय अन्न को मानव पान कर रहा है। मेरे प्यारे! जब मानव उसको पान कर रहा है तो ओज और तेज की उत्पति कर रहा है। पशुपान करता है तो पय दे रहा है, दुग्ध दे रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानवेत्ता है। एक ही पौधे पर दो प्रकार का अन्न है। दो प्रकार की प्रतिभा है। मानो देखो, ये तेरा कैसा अनूठा जगत् है जब हम तेरे जगत् पर अनुसंधान करने लगते है, विचार करने लगते है। तो प्रभु! हमें मार्ग भी प्राप्त नहीं हो पाता है।

वसुन्धरा का तृतीय स्वरुप

मेरे प्यारे! देखो, सृष्टि के पिता ने सृष्टि का प्रारम्भ किया। मानो, नाना प्रकार की आभाओं में मानव रत रहा है। आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल वसुन्धरा नाम, उस मेरे प्यारे प्रभु का नाम भी वसुन्धरा है। जब मानव माता के गर्भ से पृथक् हो जाता है तो पृथ्वी के गर्भ में। बेटा! देखो, जब पृथ्वी के गर्भ से भी जब पृथक् हो जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, ये माता जम्बणं ब्रह्मे अव्रताम् वे चैतन्य, जो प्रभु है, वह जो माता वसुन्धरा है, जो कल्याण करने वाली सर्वत्रता में ओत–प्रोत है। बेटा! ये उसके गर्भ में प्रवेश हो जाता है। अरे, उसके गर्भ में, चेतना को दृष्टिपात् करने लगता है। ये संसार का जितना भौतिक विज्ञान है। मानो देखो, ये इससे उपराम हो करके आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है। जैसे मानो ये विचारता है ''मृत्युंजयं ब्रह्माः'' वेद का वाक्य आ रहा है कि मानो प्रत्येक मानव मृत्यु से पार होना चाहता है।

मेरे प्यारे! देखो, मृत्यु के जितने भी नाना प्रकार के अनुष्ठान है, क्रियाकलाप है। चाहे वे यौगिकवाद के क्रियाकलाप हो, चाहे वे आध्यात्मिकवाद में ले जाने वाले हो। मेरे पुत्रो! देखो, ये सर्वत्र मृत्यु से विजय होने के लिए मानो प्रयास करता रहता है।

मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि काकभुषुण्ड जी ने अपने जीवन में मृत्यु से विजय होने के लिए बारह बार देखो, बारह–बारह अनुष्ठान किये। प्रत्येक मानव बेटा! मृत्यु से घिरा हुआ है और ये विचारता है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक मानव की एक ही आकांक्षा बनी हुई है, एक ही विचार बना हुआ है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। वह मृत्युंजय बनना चाहता है। मृत्यु से विजय होना चाहता है।

शरीर एवं आत्मा

मेरी प्यारी माता व्याकुल हो रही है और ये कहती है कि मेरा पुत्र नहीं रहा है। वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। परन्तु जब एक दार्शनिक उसके समीप पहुँचता है। दार्शनिक कहता है–हे माता! तू क्यों व्याकुल हो रही है? उसने कहा–कि मेरा पुत्र नहीं रहा, मैं पुत्र के वियोग में व्याकुल हो रही हूँ। मानो देखो, प्रत्येक मानव अपने में व्याकुल है कि मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए। वह दार्शनिक कहता है कि–हे माता! ये शरीर तेरा पुत्र है परन्तु ये पुत्र का जो शरीर है ये तेरा पुत्र है या आत्मा तेरा पुत्र है? तो माता बेटा! मौन हो जाती है। यदि माता कहती है ये शरीर पुत्र है तो शरीर तो ज्यों का त्यों यहाँ निहित रहता है। परन्तु यदि यह कहती है कि मेरे पुत्र के शरीर का आत्मा ही मेरा पुत्र है, तो माता आत्मा को जानती नहीं है। आत्मा कितने आकार वाला है, कितना विशाल है, कितना ज्ञानवान् है। प्रयत्न से युक्त होने वाला, ये माता नहीं जानती। तो माता मौन हो जाती है। तो इससे सिद्ध क्या हुआ कि मृत्यु अपने में कोई वस्तु नहीं होती। केवल विच्छेद होना है, परमाणुओं का अपने में पृथक–पृथक होना है।

मेरे प्यारे! आत्मा अपने संस्कारों को लेकर के अपने चित्त के मंडल में जाता है। तो विचार क्या मुनिवरो! देखो, विचार यह आता रहता है कि ''ब्रह्मणे वृतं देवाः'' मेरे प्यारे! देखो, जितने भी क्रियाकलाप कर रहा है संसार में, वे केवल मृत्युंजयी बनने के लिए है इसीलिए मानव जब मृत्युंजयी बन जाता है तो प्रभु की गोद में चला जाता है। उस समय माता वसुन्धरा कहलाती। उसके गर्भ में निर्द्वन्द हो करके मानो विचरण करता हुआ कहता है कि मैं माता वसुन्धरा की गोद में विद्यमान हूँ।

ब्रह्माण्ड का मापन

तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता है कि प्रत्येक वेद मंत्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है और गाथा गाता हुआ ये कहता है कि ''विज्ञानां ब्रह्मणे लोकाम्''। मेरे प्यारे! विशाल ब्रह्माण्ड को मापने लगता है। विज्ञानवेत्ता इस विज्ञान की आभा में मानो देखो, विज्ञान से मापने लगता है। जब मापता रहता है तो बेटा! देखो, विचार आता है मैं अभी–अभी उच्चारण कर रहा था कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। जिस प्रकार मानो देखो, माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है इसी प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। बेटा! ये ब्रह्माण्ड अपने में कितना अनूठा है। विचारने से प्रतीत होता है। जब विज्ञान के वार्घैमय में प्रवेश करते है।

तो बेटा! मुझे बहुत पुरातनकाल हुआ जब वेदों का अध्ययन करने के पश्चात् उसमें से देखो विज्ञानकाण्ड उत्पन्न हो जाता है। विज्ञान की आभाओं में मानव सदैव रत रहा है। आज मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। परन्तु विज्ञान अपने में बड़ा अनूठा रहा है। परम्परागतों से बेटा विज्ञान अपने में गति करता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, मापने वालों ने ऋषि मुनियों ने समाधिस्थ हो करके और मानो इस ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया है। एक–दूसरे परमाणु को परमाणु में प्रवेश करते हुए मानो ब्रह्माण्ड को मापना प्रारम्भ किया।

परमाणुओं का समन्वय

मुझे स्मरण आता रहा है, भारद्वाज मुनि महाराज के विद्यालय में बेटा! जब देखो, ब्रह्मचारी एक दूसरे परमाणु का मिलान करके, उद्दालक शिकामकेतु मुनि महाराज के यहाँ एक–एक परमाणु को लेकर के उसका समन्वय किया। उन्हीं परमाणुओं से शब्द शब्द विज्ञान, अग्नि की धाराओं पर उन्होंने क्रियाकलापों में जानने का प्रयास किया और उसको अपने क्रियाकलापों में लाते हुए अपने में धारयामि बनाते अपनी आभा में नियुक्त किया। तो मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नहीं केवल यह कि मापने वाला मापता रहता है और बड़ी विचित्र उड़ान उड़ता रहता है।

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें संक्षिप्त मानो एक माला के सम्बन्ध में विवेचना करना चाहता हूँ। बहुत पुरातनकाल हुए बेटा! जब ये विचार हुआ कि ये संसार को मापा जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, परमाणु से मापना प्रारम्भ किया। एक परमाणु का विभाजन किया, 'रीति' नाम का परमाणु था। जब उसका

विभाजन किया तो मुनिवरो! देखो, विभाजन करते हुए जब वह विभक्त हुआ तो मानो देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्रण उसमें दृष्टिपात् हुआ है। एक–एक परमाणु में ये जगत् निहित रहता है। मेरे प्यारे! एक–एक तरंग में ये मानव का चित्र गमन करता हुआ बेटा! द्यौ लोक को प्राप्त होता रहता है। आज मैं बेटा! विज्ञान में केवल तुम्हें इतना ही, कि आज का वेद मंत्र यह कह रहा था कि ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है।

बेटा! ये पृथ्वी क्या है? यह पृथ्वी गुरुतव धारण किए रहती है। अपने में इसका स्वरुप वास्तव में गुरुतव है। जैसे मुनिवरो! देखो, ये ''प्रमाणं ब्रह्मे'' देखो, आपो तरलतव कहलाता है। अग्नि तेजोमयी कहलाती है। इसी प्रकार ये पृथ्वी गुरुतव वाली कहलाती है। इसमें गुरुतव परमाणु रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, गुरुतव रहने के कारण ही इसको ''जव्रतं ब्रह्मा'' देखो, ये पृथ्वी मानी गई है।

तीस लाख पृथ्वियों की माला

परन्तु देखो, मुझे ऐसा स्मरण है। महर्षि उद्दालक और कृतिका मुनि के यहाँ इसका अनुसंधान हुआ। मेरे प्यारे! राजा रावण की विज्ञानशाला में भी इसके ऊपर अन्वेषण होता रहा है। परन्तु देखो महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धी और मुनिवरो! देखो, यज्ञदत्तः ब्रह्मचारी व्रेतकेतु आदि ब्रह्मचारियों ने इसके ऊपर बड़ा अन्वेषण किया और विचार–विनिमय करते हुए मेरे प्यारे! एक वेदमंत्र को लिया। उसके ऊपर विचारने लगे। जब विचारने लगे तो बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में 13 लाख पृथ्वियाँ जानी। परन्तु जब यही विज्ञान, उद्दालक गोत्र में पहुँचा तो उद्दालक गोत्र के ऋषि शिकामकेतु उद्दालक ने बेटा! देखो, 30 लाख पृथ्वियों को जानने का प्रयास किया। मानो 30 लाख पृथ्वियाँ जानी। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन आदि ऋषियों के मस्तिष्कों में इस विज्ञान की उड़ाने उड़ी जाने लगी। तो मेरे पुत्रो! देखो, इस प्रकार की विचित्र उड़ाने उड़ी जाने लगी मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने, इस पृथ्वी की एक माला बनाई तो 30 लाख पृथ्वियों की बेटा! एक माला बनी। अब माला को कोई न कोई तो धारण करेगा। परन्तु यदि धारण नहीं करेगा तो पृथ्वी के विभक्त होने का मूल कारण नहीं बना करता है।

माला के सूत्र

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों ने समाधिस्थ होकर के उस माला के देखो, सूत्रों को दृष्टिपात् किया है। उसमें प्राणतव मानो एक सूत्र धारण किया गया है। मुनिवरो! देखो, वही सूत्र बनकर के उसमें ये नाना पृथ्वियाँ पिरोई गयी तो ये एक माला बन गई। इस माला को धारण करने वाला बेटा! सूर्य बना।

माला धारक सूर्य

बेटा! सूर्य को वैदिक साहित्य में विष्णु और अदिति कहते है। जहाँ इसको अदिति कहते है, वहाँ इसको भास्कर भी कहते है। परन्तु देखो, वैदिक साहित्य में बड़े पर्यायचावी शब्द है। परन्तु विचार आता है कि वे 30 लाख पृथ्वियों को धारण करने वाला उसकी माला मानो देखो उसको धारण करने वाला सूर्य बना। बेटा! सूर्य इतना विशालमण्डल है कि उसमें 30 लाख पृथ्वियाँ समाहित हो जाती है।

माला धारक बृहस्पति

तो विचार आता है मुनिवरो! देखो, ऋषि मुनियों ने समाधिस्थ होकर के एक–एक परमाणु का विभाजन करके, सूर्यों की गणना की तो बेटा! एक सहस्त्र सूर्यों की माला बनी। जिस माला को धारण करने वाला बृहस्पति बना।

मेरे प्यारे! देखो, बृहस्पति कितना अनूठा मण्डल है। जिस मण्डल में एक सहस्त्र सूर्य समाहित हो जाए। मेरे पुत्रो! देखो, प्रभु का ये कैसा अनूठा जगत् है, कैसा विचित्र है। बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है मैंने पुरातन कालों में इष्ट वेद मंत्रों के आधार, पर ऋषि मुनियों ने बड़ा अन्वेषण और विचार किया है। उद्दालक गोत्र में शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ बेटा! देखो, पति पत्नी दोनों वैज्ञानिक थे। मुनिवरो! देखो, वे बृहस्पति और अवृत्तियों की यात्रा में सपफलता को प्राप्त हुए। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आया ऋषि कहते है। यहीं तक ऋषि मौन नहीं रहा है।

माला धारक आरुणि

ऋषियों ने बेटा! आगे अनुसंधान किया। तो मुनिवरो! देखो, एक सहस्त्र बृहस्पतियों की माला बनी। उस माला को आरुणि मण्डल ने अपने में धारण कर लिया। आरुणि मण्डल एक पिपाली अर्त्वक मानो मण्डल कहलाता है। एक सहस्त्र आरुणि मण्डलों की माला बनी। तो देखो, उसको धारण करने वाला यह ध्रुव कहलाता है। यह ध्रुवमण्डल इतना विशाल मण्डल है, जिसमें एक सहस्त्र आरुणि समाहित हो जाते है।

मण्डलों की ओत–प्रोतता

मेरे प्यारे! एक सहस्त्र आरुणि देखो, ध्रुव में समाहित हो एक सहस्त्र ध्रुव मेरे पुत्रों! देखो, मूल नक्षत्र में समाहित हो जाते है। एक सहस्त्र मूल नक्षत्र, स्वाति नक्षत्र में ओत–प्रोत हो जाते है और एक सहस्त्र स्वाति नक्षत्र मानो एक अंचलमण्डल में ओत–प्रोत हो गए, एक सहस्त्र अंचलमण्डल पुष्बुराति मण्डल में ओत–प्रोत हो गए और एक सहस्त्र पुष्बुराति मण्डल मानो देखो, कृतिका मण्डल में और कृतिका मण्डलों से एक सहस्त्र मण्डल बेटा! देखो, व्राति सोमव्रणाः मण्डल में ओत–प्रोत हो गए बेटा! एक सहस्त्र सोमव्रणाः मण्डलों की माला बनी, जिसको बेटा! ये गन्धर्व अपने में धारण कर लेता है। मेरे पुत्रो! देखो, इतने मण्डलों का एक मानो देखो कृतम अन्तिम जो मन का है वह गन्धर्व कहलाता है।

सौरमण्डल

विचार आता है बेटा! वेद का मंत्र कहता है, आचार्य कहता है कि मेरे प्यारे! इतने मण्डलों का एक सौरमण्डल बनता है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि मुनियों ने और वैज्ञानिकों ने इस ब्रह्माण्ड को मापने का अनुसंधान किया। तो बेटा! देखो, इतने मण्डलों का सौरमण्डल बना। 1 अरब 96 करोड़ 29 लाख 49 हजार 5 सौ 61 ;1,96,29,49,561 इस प्रकार के सौरमण्डल की एक आकाशगंगा बन गई। मेरे प्यारे! देखो, आकाशगंगा कैसी विचित्र है। ये अनन्त आकाशगंगाएँ है।

अवन्तिका

बेटा! एक समय शिकामकेतु उद्दालक ने अपनी पत्नी शकुन्तका से कहा–हे दिव्या, हे दिव्य! आओ, ये वेद मंत्र के ऊपर अनुसंधान करे। वेद मंत्र कहता है ''आकाशं ब्रह्मे वाचन्नं ह्मामं ब्रह्मे गंगुं ग्रहाः सुस्ताः व्रणं बृहीः व्रतं देवो सहस्त्राणि गच्छतं ब्रह्मा वाचप्रहेः लोकाम्''। मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्दालक अपनी पत्नी शकुन्तका से कहते है देवी! ये वेद मंत्र क्या कहता है? शकुन्तका बोली–प्रभु! मुझे तो ये वेद मानो बड़ा विचित्र दृष्टिपात् आ रहा है। आओ, उसके ऊपर अनुसंधान करें। जब बेटा! उन्होंने अनुसंधान प्रारम्भ किया तो विचारते हुए मेरे पुत्रो! देखो, समाधिस्थ हो गए, निर्विकल्प समाधि में, चेतनावत् समाधि में प्रवेश करके उन्हें ये दृष्टिपात हुआ। मेरे पुत्रो! देखो, उद्दालक ने ये अनुसंधान अपने में विचक्रदा अपना एक विचार दिया–कि मुझे ऐसा दृष्टिपात् होता है कि देखो लगभग 1 अरब, 95 करोड़, 29 लाख, 95 हजार, 9 सौ 81 के लगभग मानो देखो, इस प्रकार व्रतम् आकाशगंगा की एक अवन्तिका बन गई। इतनी आकाशगंगा की एक अवन्तिका बनी है। ये बड़ी विचित्र अवन्तिका है। इसने ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया।

निहारिका

तो मुनिवरो! देखो, एक अवन्तिका को नहीं मापा गया। ऋषि मुनियों ने बेटा! अवन्तिका को मापते–मापते उन्होंने लगभग पौने दो अरब के लगभग मुनिवरो! अवन्तिकाओं को माप कर बेटा! एक निहारिका बन गई।

मेरे प्यारे! प्रभु का विज्ञान बड़ा अनूठा है। विचारने से प्रतीत होगा कि जब हम अपने में समाधिस्थ हो करके मन और प्राण के एक सूत्र बनाकर के इसको दृष्टिपात् करेंगे तो मेरे प्यारे! ये कैसा विचित्र जगत् है। जिसके ऊपर परम्परागतों से ऋषि मुनि बेटा! इस संसार को मापते आए है। परन्तु मापने के

पश्चात् भी यह एक विचार का रहस्य बना हुआ है। मानो देखो, अनुपम रहस्य बना हुआ है। आज मैं बेटा! तुम्हें विज्ञान के युग में ले जाना नहीं चाहता हूँ। मैं आज तुम्हें एक सूक्ष्म–सा परिचय कराने के लिए आया हूँ और वे परिचय क्या है?

मोक्ष का मार्ग

मेरे प्यारे! देखो, जब हम माता वसुन्धरा पृथ्वी के गर्भ से पृथक् होते है तो प्रभु के अनूठे विज्ञान में प्रवेश कर जाते है प्रभु के गर्भ में प्रवेश कर जाते है तो वह अपने में धारण कर लेता है। मेरे पुत्रो! देखो, प्रभु की सृष्टि को निहारते रहते है। अंत में बेटा! देखो, मौन होकर के प्रभु के गर्भस्थल में हुए समाहित होते, दृष्टिपात होते है। ''अप्रतं ब्रह्मा:'' मेरे प्यारे! हम उसी में समाधिस्थ हो जाते है। उसी में समाहित हो जाते है, जैसे मेरे पुत्रो! देखो, नेत्रों की ज्योति हृदय में समाहित रहती है और देखो, श्रोतों का विषय शब्द इसमें समाहित हो जाता है। रसना का रसवादन और शब्द सब हृदय में समाहित हो जाता है। इसी प्रकार मेरे पुत्रो! देखो, घ्राण का गंध, सुगंध है वह हृदय में समाहित रहता है। हृदय से हृदय का मिलान ये जो अनुपम जगत है ये परमात्मा का हृदय है इसमें सर्वत्र समाहित हो रहा है। इसी प्रकार हमारा हृदय परमात्मा के हृदय से जब समन्वय होता है, जब मिलन होता है। तो मेरे पुत्रो! देखो, प्रभु के हृदय में हृदय का समावेश हो जाता है। उसको बेटा! ऋषिजन देखो, मोक्ष का एक मार्ग उच्चारण करने लगते है।

अज्ञान में मृत्यु

मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट नहीं करने आया हूँ। बेटा! मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ। केवल तुम्हें परिचय कराने के लिए आया हूँ और वह परिचय क्या है? कि प्रभु का कैसा अनुपम जगत् है? बेटा! एक–दूसरे में माला वाला ये जगत् हमें दृष्टिपात् आ रहा है। एक–दूसरे की माला, एक–दूसरे में पिरोई जाती है। इसी प्रकार मानो देखो, बाह्य जगत् में ऐसी मालाओं को धारण करता हुआ पृथ्वी के ऊपर विज्ञानवेत्ता बन जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब प्रभु के विज्ञान में या प्रभु के राष्ट्र में ये मानो प्रवेश हो जाता है, तो बेटा! देखो, प्रभु के राष्ट्र में जाने के पश्चात् न तो प्रभु के राष्ट्र में रात्रि होती है, न आलस्य होता है और न प्रमाद होता है। जहाँ आलस्य, प्रमाद और रात्रि नहीं होती। बेटा! वहाँ मृत्यु भी नहीं हुआ करती क्योंकि वहाँ सदैव प्रकाश रहता है। प्रकाश में मृत्यु नहीं है, अन्धकार में मृत्यु है। ज्ञान में मृत्यु नहीं, अज्ञान में मृत्यु मानी गई है।

मानव का ज्ञान

तो विचार क्या? मुनिवरो! देखो, अज्ञान को त्यागना, प्रकाश में आना, आत्मियता में चिन्तन करना प्रभु के राष्ट्र को विचारना मानो देखो, ये मानव का ज्ञान है, विवेक है। इसी से विवेक की उपलब्धि होती है। वही मेरे प्यारे! ज्ञान युक्त जो विवेक है वह मृत्यु से मानव को पार कर देता है। इसीलिए हमारा वेद मंत्र कहता है, प्रत्येक वेद मंत्रः उस परमपिता परमपिता की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार मेरे प्यारे! देखो, ये माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है। माता के पुत्र नहीं होगा तो ममत्व को प्राप्त नहीं हुआ करती है। मेरे प्यारे! उसको पुत्र ही ममत्व की जानकारी कराता है। ये बाल्य भी किसी का पुत्र है किसी माता का पुत्र है। तो ममत्व को धारण करने वाली माता कहलाती है। मेरे प्यारे! ''ममतां ब्रह्माः लोकां वाचाः'' तो माता का निर्णय देने वाला पुत्र है इसी प्रकार वह माता वसुन्धरा कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। मानो देखो, ब्रह्माण्ड को जब भी विज्ञानवेत्ता मापना प्रारम्भ करते है। चाहे वह पृथ्वी का वैज्ञानिक हो चाहे, वह मंगल मण्डल का वैज्ञानिक हो, चाहे बुद्ध का हो, चाहे शुक्र का प्राणी हो। कोई भी जब भी विज्ञान मापना प्रारम्भ करता है तो गुरुतव परमाणु से, पृथ्वी के परमाणुओं से मानो देखो, निर्माण करना, जानकारी उसका मिलान करना प्रारम्भ करता है। तब पृथ्वी के विज्ञान से विज्ञान का प्रारम्भ होता है तो उसी से ये परमपिता परमात्मा की गाथा का एक सूत्र बन जाता है। मानो सूतक बनकर के वही ''ब्रणवृति देवाः'' तो मेरे पुत्रो! देखो, ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है।

आओ, मेरे प्यारे! जैसे ये ब्रह्माण्ड और माता का पुत्र गाथा गा रहा है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद मंत्र बेटा! ब्रह्म की गाथा गा रहा है। परमपिता परमात्मा की गाथा गाई जा रही है। गाथा का अभिप्राय यह कि उसके गुणों का वर्णन, उसकी महानता की उज्ज्वलता में बेटा! मानव सदैव तत्पर रहता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार यह क्या कह रहा है। आज का विचार कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, माता वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश होते हुए मुनिवरो! देखो, अपने को महान बनाते रहे, अपने जीवन को सार्थक बनाते हुए परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड को मापते हुए जहाँ ये संसार को मापता रहता है ये मानव वहाँ परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड को माप करके अपने इस पिण्ड में दृष्टिपात् करता रहे और पिण्ड को व्यापक बनाकर के देखो, व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश करके बेटा! अपने जीवन को महान बनाता है।

त्रि–परमाणु

मेरे प्यारे! देखो, विचार–विनिमय में क्या वेद का वाक् कहता है कि बेटा गुरुतव, तरलतव और तेजोमयी ये तीन परमाणु है। मानो देखो, इनको गति देने वाली वायु है और जहाँ गमन करता है, उसका नाम अंतरिक्ष कहलाया गया है। पाँच प्रकार की गतियों में देखो, ये विज्ञान अपने में रमण करता है और देखो प्रसारण, ध्रुवा, ऊर्ध्वा, गति और आकुंचन पंच में देखो, ये विज्ञान अपने में सार्थक बना करता है। भौतिक विज्ञान अपने में, वृत्तियों में रत होता रहा है।

त्रि–वाद

मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार हमारा जीवन भी अपने में पंचीकरण कहलाने वाला है। त्रिवत् कहलाने वाला है। 'त्रिवर्धा त्रिवर्णः त्रिव्रतं ब्रह्मेः' जैसे तीन मात्रा ओम् की है। तीन प्रकार की विद्या है, ज्ञान, कर्म और उपासना रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण तीन गुण है। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी भूः भुवः स्वः ये तीन लोक कहलाये गए है। ये त्रि–वाद में बेटा! तीन प्रकार के पदार्थ है। आत्मा परमात्मा और प्रकृति ये मानो देखो, त्रिवत् ये जगत् कहलाता है। इसके ऊपर चिन्तन करना हमारा कर्त्तव्य है।

ये है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाए और यह संसार जो नाना प्रकार के मान अपमान वाला है। इस संसार को त्याग करके उपरान्तता को प्राप्त होते हुए परमात्मा के गर्भ में प्रवेश कर जाए क्योंकि वे हमारी अन्तिम वसुन्धरा है। उसी के गर्भ में जाने से हमारा कल्याण होगा। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करुँगा अब वेदों का पठन–पाठन। **दिनांक–02–03–1988–ग्रां. लहौडरत्रा, बागपत।**

७ यज्ञशाला का द्योगामी चित्र–दिनांक–03–03–1988

जीते रहो,

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मंत्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा। आज हमने पूर्व से जिन वेद मंत्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। जो परमपिता परमात्मा महिमावादी है और अनन्तमयी माने गये है। जिसका ज्ञान और विज्ञान अनन्तमयी माना गया है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए है। परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित है। वे सीमा में आने वाले नहीं है। इसीलिए वे परमपिता परमात्मा हमारे पुरोहित है, हमारे पितर है। हम उस 'अमूल्यं ब्रह्मणम्' मानो परमपिता परमात्मा को अपना उपास्यदेव स्वीकार करते हुए, हम उस परमपिता परमात्मा की महती में सदैव निहित रहे।

यागों की विभिन्नता

महर्षि विश्वमित्र का धर्नुयाग

आज का हमारा वेद मंत्र परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता का वर्णन कर रहा था। आज का हमारा वेद मंत्र कुछ प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है और वे प्रेरणा में उद्गीत गा रहा है। ''यज्ञनं ब्रह्मः व्रहेः'' यागां ब्रह्मणं वे यागां रुद्रं वास्सुतम्। तो मेरे प्यारे! हम याग के सम्बन्ध में प्रायः अपना विचार व्यक्त करे। हमारे यहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार के यज्ञों का चयन होता रहा है जैसे हमारे यहाँ अग्निष्टोम् यागों का वर्णन है, वाजपेयी यागों का वर्णन है, अश्वमेघ याग है और कन्या याग है और मुनिवरो! देखो, हमारे यहाँ श्वति और वृति यागों का वर्णन भी आता रहा है। परन्तु जहाँ श्रोत्रिय यागों का वर्णन है वहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार के रुपों में, ये ब्रह्माण्ड एक यज्ञशाला के रुप में दृष्टिपात् आ रहा है। परन्तु जहाँ यज्ञ के सम्बन्ध में इतना उद्गीत गाया जा रहा है। वहाँ बेटा! हमारे ऋषि मुनियों ने वृष्टि यागों के सम्बन्ध में और पुत्रेष्टि याग के सम्बन्ध में भी अपनी विवेचनाएँ प्रगट की है। परन्तु आज का हमारा वेद मंत्र भिन्न–भिन्न प्रकार के यागों का चयन तो नहीं कर पाएगा। परन्तु आज का विचार केवल ये है कि आज हम परमपिता परमात्मा की महती और उसका जो अनन्तमयी मानो स्रोत बह रहा है। जिसके आश्रित होकर के मानव, अपने में क्रियाकलाप कर रहा है। उन क्रियाकलापों में, जिन क्रियाओं में प्रायः मानो अपने में अग्नि स्वरुप स्वीकार करते, अपनेपन को ही अपने में प्रायः दृष्टिपात् करता रहा है।

महर्षि वैशम्पायन का मंत्र–चिन्तन

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें एक ऐसे ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! ऋषि मुनि अपने में अनुसंधान करते रहते है, अन्वेषण करते रहे है। एक–एक वेद मंत्र के ऊपर विचार–विनिमय होता रहता है। मेरे प्यारे! एक समय महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज, महाराज अश्वपति के वृष्टि याग में से अपने आसन को उन्होंने गमन किया। जब वे प्राणं ब्रह्मेः आश्रम में प्रवेश हो गए। तो मेरे प्यारे! देखो, सायंकाल का समय था। सायंकाल के समय कुछ वेद मंत्रों का उद्गीत गाने लगे और वेद मंत्र यह कह रहा था ''रथं यज्ञं ब्रह्माः यज्ञनं रथं बृही कृतम् लोकाम्''। मेरे प्यारे! वेद का मंत्र यह कह रहा था कि यज्ञशाला में जो यजमान विद्यमान होता है। उसका रथ बन करके द्यौ लोक में जाता है। 'द्यौ लोकां गगनं ब्रे'' व्रणाः'। मेरे प्यारे! देखो वेद का ऋषि कहता है, वेद का मंत्र यह उद्गीत गा रहा है कि यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक में जाता है।

मेरे प्यारे! ऋषि अपने में चिन्तन करने लगे कि मैं द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात् करना चाहता हूँ। मैं अपने यजमान के रथ को द्यौ लोक में जाता हुआ दृष्टिपात् करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, इसी चिन्तन में निद्रा की गोद में चले गए। मध्यरात्रि को निद्रा से जागरुक हुएऋ परन्तु उसी चिन्तन में लग गए। वही न्यौदा में मंत्र उद्गीत रुपों में गाने लगे और उनका जो भावार्थ था उनके समीप आने लगा। मेरे प्यारे! रात्रि समाप्त हो गई, दिवस काल आ गया और दिवस में ये मनन और चिन्तन कर रहे थे कि मैं रथ को कैसे दृष्टिपात् करुँ! वह रथ मानो मैं उसका कैसे दिग्दर्शन कर सकता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, निकटतम् आसन, महर्षि विभाडण्क मुनि का था। विभाडण्क मुनि ने विचारा कि आज ऋषि का प्रारम्भ नहीं हुआ है। आज जागरुक नहीं हुए हैं। मानो देखो वे उनके आश्रम में पहुँच गये और उन्होंने दृष्टिपात् किया कि ऋषि अपने में चिन्तन में लगे हुए है। महर्षि विभाडण्क बोले–कि महाराज! किस चिन्तन में लगे हुए हो? उन्होंने कहा कि महाराज! ये वेद मंत्र और मैं वेद मंत्र के उस रुप को साक्षात्कार दृष्टिपात् करना चाहता हूँ कि यजमान का रथ बन करके द्यौ लोक में कैसे जाता है? मैं द्यौ लोक वाले रथ को दृष्टिपात् करना चाहता हूँ।

ऋषि मुनियों का समूह

मेरे प्यारे! विचार–विनिमय में क्या महर्षि विभाडण्क भी चिन्तन करने लगे। वेद मंत्र का भावार्थ उनके समीप है। मनन करते रहे। परन्तु वे निबटारा नहीं कर सके। कही से बेटा! भ्रमण करते हुए महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेनकेतु और मुनिवरो! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज, महर्षि व्रेती मुनि महाराज, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी यज्ञदत्तः ब्रह्मचारी रोहिणीकेतु बेटा! उनमें कुछ नाना ब्रह्मवेत्ता भी थे, कुछ ब्रह्मनिष्टः मानो कुछ ब्रह्मवर्चोसि थे। वे भ्रमण करते हुए बेटा! ऋषि के आसन पर जब आ पहुँचे। वह एक ऋषि मुनियों का समूह था।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज ने उनको आसन दियाऋ वे विराजमान हो गए। महर्षि दालभ्य बोले कि महाराज! आप किस चिन्तन में लगे हुए हो? ऐसा प्रतीत होता है कि बड़ी गंभीर मुद्रा में तुम मुद्रित हो रहे हो। आप हमें निर्णय कराइये कौन–सी मुद्रा में मुद्रित हो रहे हो? उन्होंने कहा–कि महाराज! ये न्यौदा में मंत्र मुझे स्मरण आ रहा है और न्यौदा में मंत्र यह कहता है कि यज्ञशाला में यजमान का रथ बनकर के द्यौ लोक को जाता है। मेरे प्यारे! महर्षि दालभ्य बोले कि यह तो बड़ा सहज है। मानो देखो, जैसे हम अग्नि को प्रदीप्त करते है और अग्नि की धाराओं पर हमारा शब्द, शब्द के साथ में चित्र मानो वह द्यौ लोक को प्राप्त होता रहता है।

श्वेती मुनि का आश्रम

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा तो वैशम्पायन बोले कि मैं साक्षात्कार दृष्टिपात् करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, अपने में चिन्तन करने लगे। एक–दूसरे की प्रतिभा में अपनी प्रतिभा उद्गीत रुप में, गायन रुप में गाते रहे। परन्तु देखो, अपने में कोई निबटारा नहीं कर सके। जब निबटारा नहीं कर सके, सायंकाल का समय होने आया तो महर्षि श्वेतकेतु बोले कि–महाराज! मेरे विचार में ये है कि देखो, अयोध्या में गमन करते है। उनके द्वारा एक याग का आयोजन हो और उसके पश्चात् हम इस निर्णय पर जा सकते है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों ने श्वेतकेतु मुनि की वार्ताओं को स्वीकार कर लिया और जब मान्य हो गई तो उन्होंने वहाँ से गमन किया। नाना ऋषिवर बेटा! सर्वत्र एक से एक ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ने वाला, मृत्युंजयी, ब्रह्मवेत्ता भ्रमण करते हुए बेटा! देखो कई रात्रि श्वेती मुनि के आश्रम में हो गई। श्वेती मुनि महाराज ने ऋषि मुनियों का आगमन दृष्टिपात् करते, उनके हर्ष की कोई सीमा नहीं रही। श्वेती मुनि ने कहा–भगवन्! विराजो। वे विराजमान हो गए। उन्होंने कुछ कन्दमूल इत्यादि उन्हें पान कराया, विश्राम कराया।

ऋषियों का अयोध्या की ओर गमन

प्रातः काल होते ही उन्होंने वहाँ से वाहानां ब्रह्मेः वहाँ से उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते बेटा! उनका अयोध्या में प्रवेश हुआ क्योंकि हमारे यहाँ प्रायः ऐसा दृष्टिपात् किया गया है कि भगवान् राम प्रातःकालीन देखो, अपनी यज्ञशाला में याग करते थे और यज्ञ के पश्चात् उनके कुछ उपदेश मंजरियाँ मानो उपदेश उनका प्रारम्भ होता रहता। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों का उनकी यज्ञशाला में पदार्पण हुआ तो भगवान् राम का उपदेश चल रहा था। उपदेश मंजरी चल रही थी। तो मेरे प्यारे! देखो, जो भिन्न–भिन्न आसन लगे हुए, यज्ञशाला में, ब्रह्मवेत्ताओं का आसन भिन्न है, ब्रह्मचारियों का भिन्न है, यज्ञवेत्ता का भिन्न है। तो बेटा! अपने–अपने आसन पर ऋषि मुनि विराजमान हो गए। परन्तु भगवान् राम का उपदेश चल रहा था। राम उच्चारण कर रहे थे मानो देखो, याग के पश्चात् एक उपसंहार होता है।

भगवान् राम द्वारा याग का उपसंहार

मेरे प्यारे! देखो, याग का उपसंहार करते हुए उच्चारण कर रहे थे कि हमें प्रायः याग के सम्बन्ध में, अपने जीवन को ऊँचा बनाना है और याग कर्म का मानो क्रियाकलाप मानो राष्ट्र की एक धरोहर मानी गई है। राजा का राष्ट्र तभी ऊँचा बनता है, जब प्रत्येक गृह में मानो साकल्य के सहित ज्ञान और विज्ञान में रत होकर के मानो देखो, याग के क्रियाकलाप होते है, याग होते है, तो सुगन्ध होती है। उसी सुगन्ध को लेकर के मानो देखो, गृह पवित्र बनते रहते है।

पूर्वजों के आधारित क्रियाकलाप

तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है। भगवान् राम जब उच्चारण कर रहे थे कि हे राष्ट्रवेत्ताओं! तुम्हें अपने समाज को, अयोध्या राष्ट्र को ऊँचा बनाना है क्योंकि हमारे यहाँ नाना वंशलज हुए है। जैसे हमारे कुल में ही अयोध्या में मानो देखो, रघुवंश देखो, ''अव्रणं ब्रह्मं रघुकुलं अब्रहे'' ऊँचा रहा है। पितरों ने मानो याग के सम्बन्ध में सर्वत्रता का याग किया है। जैसे महाराजा रघु ने सर्वस्व याग किया था। उस याग में जितना द्रव्य था कोश में, सबका याग किया था। महाराजा दिलीप ने भी जो हमारे पूर्वज थे उन्होंने अपना सर्वस्व याग किया और कामधेनु और धेनु की सेवा करते हुए राष्ट्र को उन्नत बनाने

के लिए सदा तत्पर रहे है। तो इसीलिए हे राष्ट्रवेत्ताओं! मेरी इच्छा यह है कि हमें अपने पूर्वजों के आधारित हो करके, अपने में क्रियाकलाप करना चाहिए। जो उनके जीवन में क्रियाकलाप रहे है, वे भी हमें क्रियाकलापों में लाने है। हमें भी स्वतः वैसा ही बनना है।

प्रत्येक गृह में याग

तो मुनिवरो! देखो, जब भगवान् राम का उपदेश चल रहा था, उपदेश मंजरी में यह प्रारम्भ कर रहे थे कि प्रत्येक गृह में, हे राष्ट्रवेत्ता! यह घोषणा होनी चाहिए कि प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए, प्रत्येक गृह में एक–दूसरे का ऋणी, राजा के राष्ट्र में नहीं रहना चाहिए। मानो देखो, यहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार के ऋण होते हैं जैसे माता–पिता के ऋण वाले देखो, पुत्र होते है। वह पुत्र याग इत्यादि के द्वारा देखो मातृ व पितृ सेवा करके अपने गृह को ऊँचा बनाते हैं। तो मानो वह विचारों की सुगन्धि विचारों में रत हो करके मानो देखो अपने को, ऊँचा बनाती है।

मेरे प्यारे! देखो, यह उपदेश मंजरी प्रारम्भ हो रही थी विचार चल रहा था कि हमारे यहाँ प्रत्येक गृह में, राष्ट्र में याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, भगवान् राम के राष्ट्र में उस समय प्रत्येक गृह में याग होता, प्रत्येक गृह में सुगन्धि आना प्रारम्भ हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, विचारों की सुगन्धि देखो, वृत्तियों की सुगन्धि, साकल्य की सुगन्धि आना बहुत अनिवार्य हैं। जब प्रत्येक गृह में इस प्रकार के विचार और साकल्य की सुगन्धि प्रारम्भ हो जाती है तो वे गृह और राष्ट्र ऊँचे बना करते हैं। राष्ट्रगृह को ऊँचा बनाना है तो मानो वेदोक्त और दर्शनों की भाषा में अपने विचार उद्‌गीत रुप में गाने चाहिए। जिससे मुनिवरों! देखो, राष्ट्र महानता की वेदी पर सदैव रत हो जाए।

ऋण से उऋण की ओर

तो मेरे प्यारे! देखो, राम का उपदेश चल रहा था और यह कहा कि–राष्ट्र में, प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। प्रत्येक माता–पिता की सेवा होनी चाहिए और देखो, एक–दूसरे का ऋणी नहीं रहना चाहिए। देव पूजा से देवताओं के ऋण से अवऋण हो जाते है। ऐसा बेटा! उन्होंने अपने विचार देते हुए विचारों को विराम दिया और विराम देने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों को दृष्टिपात् किया। तो भगवान् राम मेरे पुत्रों! वह ऋषि मुनियों के समीप पहुँचे। चारों विधाता बारी–बारी ऋषि मुनियों के चरणों को स्पर्श करते हुए उन्होंने कहा–कहो भगवान्! ये मेरा कैसा अहोभाग्य जागरुक हुआ है जो मानो आप जैसे ब्रह्मवेत्ताओं के दर्शन हुए है।

तो मुनिवरो! देखो, उसमें महर्षि वैशम्पायन बोले–कि महाराज! हम तुम्हारे दर्शनार्थ और अयोधया राष्ट्र को दृष्टिपात् करने के लिए आए हैं। राम ने कहा–नहीं, कुछ ओर भी क्रिया का दृष्टिपात् मुझे अनुभव हो रहा है। मेरे प्यारे! वैशम्पायन ऋषि बोले कि–प्रभु! मैं प्रातःकालीन मध्यरात्रि से देखो, यह चिन्तन करता रहा हूँ और वह चिन्तन यह है कि रथं ब्रह्माः रेव सुंधा रथं दिव्यं ब्रह्माः यागाः। हम इस भावना के लिए आए है कि आप देखो, अयोध्या में एक याग का आयोजन करो। उस याग को सम्पन्न किया जाए। राम बड़े प्रसन्न हुए। राम ने कहा–धन्य है, प्रभु! ये तो हमारा कर्त्तव्य है और हम ऋषि मुनियों की आज्ञा का पालन नहीं कर सकते तो इससे बड़ा हमारा दुर्भाग्य क्या हो सकता है। प्रभु याग अवश्य होगा।

यज्ञशाला का निर्माण

मेरे प्यारे! देखो, राम ने शिल्पकारों को आज्ञा दी कि एक यज्ञशाला का निर्माण होना चाहिए। ब्रह्माः ब्राह्मणों को आज्ञा दी कि तुम ब्रह्मेः मानो तुम विवेकी पुरुष हो देखो, तुम साकल्य एकत्रित करो। देखो, हमारे यहाँ याग होने जा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों को अपने–अपने कक्ष में विश्राम कराया और बेटा! राम ने याग का आयोजन प्रारम्भ कर दिया, साकल्य एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया।

तो बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है। उन्होंने सर्वस्व साकल्य एकत्रित करने के पश्चात् मुनिवरो! भगवान् राम और सभी ऋषिवर, विधाता सब मानो देखो, वशिष्ठ मुनि के साथ ब्रह्मवेत्ताओं के समीप पहुँचे और महर्षि वैशम्पायन और महर्षि विभाण्डक, ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी व्रेणकेतु इत्यादि मुनियों से नमस्कार करते हुए बोले–प्रभु! नमः, आपकी यज्ञशाला पूर्णता को प्राप्त हो गई है। साकल्य एकत्रित हो गया है। आओ, भगवन्! देखो, याग में परिणित हो जाए।

ऋषियों का यज्ञशाला की ओर गमन

तो मेरे प्यारे! देखो, नाना ऋषि बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने कक्ष से यज्ञशाला के आसन की ओर गमन किया। वह यज्ञशाला ऐसी निर्माणित हो रही थी जैसी ब्रह्मा की ब्रह्मशाला हो। ब्रह्मणं ब्रहेः जहाँ वृत्तियों में रत रहने वाले हो। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा–प्रभु! अब याग का प्रारम्भ हो। मेरे प्यारे! राम ने भिन्न–भिन्न ऋषि मुनियों को निमंत्रण दिए थे। जैसे महर्षि भारद्वाज, महर्षि बाल्मीकि, महर्षि श्वेता और मुनिवरो! देखो, महर्षि भारद्वाज, कृति मुनि, पणपेतु मुनि और महर्षि विश्वामित्र इत्यादि सब मुनिवरों को निमंत्रण दिया।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब याग का प्रारम्भ हुआ तो जब अग्निहोत्र होने लगा तो वही मंत्र उन्हें स्मरण आया और वेद मंत्र ये कह रहा था 'चित्रोभवः सम्भवः यजमानं शमं ब्रह्मे द्यौ लोकाम्' वेद मंत्र यह कह रहा था–कि **यज्ञशाला में विराजमान हो करके जब स्वाहाः उच्चारण करते है तो देखो, यजमान का रथ बनकर के, यज्ञशाला का रथ बनकर के द्यौ लोक में जा रहा है।** तो मेरे प्यारे! देखो, राम ने कहा–प्रभु! हे ब्रह्मणं ब्रह्मेः! महर्षि वैशम्पायन तो ब्रह्मत्व उद्‌गाता उद्‌गीत गाने लगे और अध्वर्यु अपने में संलग्न हो गए। महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज पुरोहित बने। तो मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा–प्रभु! अग्निहोत्र मैंने किया है। अग्निहोत्र में मन्त्र ये कहता है कि यजमान का रथ बनकर के द्यौ लोक को जाता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा–प्रभु! मैं तो जब मुझे ''अशन्तं ब्रह्मेः'' शान्ति और वैज्ञानिकता मुझे प्राप्त हो सकती है जब मैं इस चित्र को दृष्टिपात् कर लूँ। उस रथ को मैं द्यौ लोक में जाता हुआ दृष्टिपात् करना चाहता हूँ।

अब बेटा! देखो, ऋषि मुनि अपने दर्शनों से घटित कर रहे है। दर्शनों की मीमांसा कर रहे है और उस वाक् को घटित कर रहे है। परन्तु अपने में कोई निबटारा नहीं हुआ। राम ने कहा कि–नहीं, इसको मैं जानता हूँ। मैंने बहुत अध्ययन किया है। परन्तु मैं साक्षात्कार दृष्टिपात् करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, यह विचार ही चल रहा था, दर्शनों से तो घटा रहे थे परन्तु क्रिया से नहीं घट रहा था।

महर्षि भारद्वाज का यज्ञशाला में आगमन

इतने में महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी सुकेता पणपेतु और ब्रह्मचारिणी शबरी को ले करके देखो, यज्ञशाला में आ पहुँचे। यज्ञशाला में आते ही राम ने उनका स्वागत किया और महर्षि भारद्वाज मुनि बोले कि – तुम्हारा याग सम्पन्न क्यों नहीं हो रहा है, इसके मूल में क्या है? उन्होंने कहा – प्रभु! वेद मंत्र न्यौदा का यह कहना है कि यजमान का रथ बनकर के द्यौ लोक को जाता है। मैं उस रथ को दृष्टिपात् करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ''रामं ब्रहे'' महर्षि भारद्वाज–बोले कि हे राम! तुम ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान तो नहीं कर रहे। उन्होंने कहा – कि प्रभु! मेरे में इतनी सत्ता कहाँ है जो मैं ब्रह्मवेत्ताओं का अपमान कर सकूँ। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने रजं ब्रह्मे ये वाक् कहा तो ''सत्यं ब्रह्मे''। मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है। बेटा! ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे हम देखो आज, यज्ञशाला में विद्यमान हो। यज्ञशाला में अपने उद्‌गीत गा रहे हो। मेरे पुत्रो! ऐसा कृतों में आ रहा है ''सम्भूति ब्रह्मणं ब्रहे वाचन्नमः'' नाना मंत्र उन्होंने उद्‌गीत रुप में गाने प्रारम्भ किए ''यज्ञं ब्रह्मः'' मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि ने कहा–कि हे ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी व्रेतकेतु जाओ, देखो अपनी यज्ञशाला, विज्ञानशाला में से देखो यंत्र को लाया जाए। वे उस वाहन में विद्यमान हो करके उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए, कजली वनों में पहुँचे और कजली वनों से उन वाहनों को लेकर स्वतः यज्ञशाला की ओर देखो, वे अयोध्या में प्रवेश हो गए।

यन्त्र द्वारा द्यौ–गामी रथ दर्शन

मेरे पुत्रो! महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा–कि हे राम! तुम याग का प्रारम्भ करो, अग्निहोत्र प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो, अग्निहोत्र प्रारम्भ किया और उन्होंने यंत्रों को स्थिर कर दिया और उन यन्त्रों में यह विशेषता थी कि जैसे मानो स्वाहा उच्चारण करता है, उस स्वाहा के साथ में बेटा! देखो, उसका जो स्वाहा उच्चारण कर रहा है। उसका चित्र, उसका शब्द मानो द्यौ लोक में प्रवेश कर रहा है और उन यंत्रों में दृष्टिपात् आ रहा है। जो दर्शनों से गुथा हुआ

ज्ञान और विज्ञान से गुथा हुआ शब्द है। वे द्यौ लोक में मानो देखो जाता हुआ दृष्टिपात् आ रहा था। यंत्रों में जब इस प्रकार दृष्टिपात् किया गया तो बेटा! राम बड़े प्रसन्न हुए। भारद्वाज मुनि बोले कि हे राम! तुम्हें ये दृष्टिपात् आ रहा है। उन्होंने कहा–प्रियतम, मानो देखो, उनके हर्ष की कोई सीमा न रही। वे हर्षित हो गए और जब हर्ष की कोई सीमा न रही तो बेटा! शांत मुद्रित हो गए।

प्रत्येक आभा में याज्ञिक

आओ, मेरे प्यारे! मैं कहाँ चला गया हूँ विचार यह दे रहा हूँ कि मुनिवरो! देखो, विज्ञान और मानवीयतव कितना विचित्र रहा है इस संसार में। और कितना विचित्रतव रहता रहेगा। परन्तु विचार केवल ये कि मुनिवरो! जब वे दृष्टिपात करने लगे, दृष्टिपात करते हुए उनका ह्रदय सांत्वना को प्राप्त हो गया। उन्होंने राम से कहा – हे राम! ये दृष्टिपात् करो। मानो देखो, यंत्रों में चित्र जाता हुआ दृष्टिपात् हो रहा है। मानो मेरे विद्यालय में ऐसे–ऐसे यंत्र विद्यमान है जिसमें देखो, एक रक्त के बिन्दु के प्रवेश करने से और जिस मानव के रक्त का बिन्दु है उस मानव का चित्र यंत्रों में दृष्टिपात् आता रहता है। ऐसी–ऐसी चित्रशालाएँ विज्ञानशालाएँ है। जिनको दृष्टिपात् करके आश्चर्यतव होता है। आज तुम्हारा शब्द जा रहा है। अंतरिक्ष में तुम्हारा चित्र और ''शब्दं ब्रह्मे'' वे गमन कर रहा है और वे द्यौ लोक को प्राप्त हो रहा है और वही मानवत्व को प्राप्त होने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वे बड़े प्रसन्न हुए उन्होंने कहा–धन्य है भगवन्! तो विचार आता रहता है कि मुनिवरो! देखो, प्रत्येक आभा में हम याज्ञिक बनें। हम अपने में महानता का दर्शन करते रहे। वे दर्शन ही हमें मानवीय मौलिक तथ्यों तक ले जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, याग चलता रहा। वे चित्रों का दर्शन करते रहे। याग प्रारम्भ रहा बेटा! उनका क्रियाकलाप, उनकी प्रतिभा सदैव मानो देखो, उसमें निहित रही। उसमें ओत–प्रोत रही है। तो विचार आता रहता है। बेटा! देखो, दृष्टिपात् किया गया स्मरण आ रहा है बेटा! वह याग मुनिवरो लगभग छः माह तक इसी प्रकार प्रारम्भ रहा और भारद्वाज यह उद्‌गीत गाते रहे कि विज्ञान अपने में अनूठा है, विज्ञान अपने में सार्थक है, विज्ञान अपनी कलाओं में सम्पूर्ण रहता है।

तो मानो बेटा! देखो छः माह तक वह याग प्रारम्भ रहा और छः माह के पश्चात् मुनिवरो! देखो, याग जब सम्पन्न हुआ तो बेटा! देखो, महर्षि वैशम्पायन के हर्ष की कोई सीमा न रही क्योंकि वह साक्षात्कार चाहते थे और यंत्रों में वह साक्षात्कार दृष्टिपात् आ रहा था। तो मेरे प्यारे! विचार–विनिमय क्या विचार ये क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा के अनूठे ज्ञान और विज्ञान को क्रिया में लाने के लिए सदैव तत्पर रहे।

तो मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है। वह याग छः माह तक प्रारम्भ रहा। छः माह के पश्चात् राम ने देखो, बेटा मुद्राएँ देकर के, दक्षिणा समर्पित करते हुए अपने जीवन में कुछ संकल्प धारण करते हुए उन्होंने वहाँ से बेटा! ऋषि मुनियों का गमन कराया। तो मेरे प्यारे! वे अपने आश्रम में जा पहुँचे। परन्तु भारद्वाज मुनि ने राम से कहा–तुम शबरी को जानते हो? उन्होंने कहा–प्रभु! हाँ, जानता हूँ। उन्होंने कहा – यह वहीं शबरी है हे राम! जब तुम्हारा रावण से संग्राम हुआ था और मैंने सर्वस्व कोश मानो देखो, इस ब्रह्मचारिणी शबरी के द्वारा पणपेतु मुनि महाराज की कन्या के द्वारा तुम्हें प्रदान कराया था।

ब्रह्मचारिणी शबरी

मेरे प्यारे! जब राम और रावण का संग्राम हुआ था तो वह देखो, शबरी ही ऐसी 'विज्ञानम्' है देखो, जिन्होंने भारद्वाज मुनि के आश्रम में उनकी आज्ञा के अनुसार बेटा! राष्ट्र के अस्त्रों–शस्त्रों का कोष तुम्हें प्रदान किया था। तो मेरे प्यारे! देखो, राम बड़े प्रसन्न हुए, और कहा कि मेरा यह मेरा अहोभाग्य है।

मानवीयता का आधार

तो मुनिवरो! देखो, याग प्रारम्भ रहा यागां भवितां ब्रह्मे लोकां वाचन्नमं ब्रह्मः कृतं लोकाम्। मेरे प्यारे! देखो, उनका याग छः माह के पश्चात् पूर्णता को प्राप्त हुआ। उन्होंने मुद्राएँ देकर के और उनसे कुछ प्राप्त करके, अपनी त्रुटियों को त्याग करके मेरे प्यारे! देखो, उनका अपने–अपने आश्रम में गमन हुआ।

तो विचार–विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, राजा और प्रजा में प्रायः याग होने चाहिए। ये याग ऐसा क्रियाकलाप है जो सृष्टि के प्रारम्भ से, वर्तमान के काल तक बेटा! वह नवीन ही बना रहा है। उसमें मानो मानवीयता और सार्थकता विद्यमान है। तो मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान अपने में अनूठा बन करके तुम्हारे समीप है और एक आभा में निहित रहने वाला है।

तो मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मुनिवरो! देखो, यजमान अपने में, याग को विशुद्ध रुप से, क्रिया में लाना और क्रिया में लाने के पश्चात् अपने को महान बनाना। ये बेटा! आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है कि ''यागां ब्रह्मणे लोकाम्'' बेटा! याग अपने में बड़ा अनूठा एक क्रियाकलाप है जो सृष्टि के प्रारम्भ से और नाना प्रकार के यागों में तत्पर रहा है। अश्वमेघ याग राजा करता है। वाजपेयी याग राष्ट्र और प्रजा दोनों करते है। मेरे प्यारे! देखो, अग्निष्टोम याग भी इसी प्रकार का है। तो नाना प्रकार के यागों के चयनों की विवेचना तो किसी ओर काल में प्रगट करेंगे।

आज का हमारा ये वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाए। ये है बेटा आज का वाक्, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये है कि परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरुप है मानो याग उसका आयतन, उसका गृह और उसका सदन माना गया है। वह हमारा पुरोहित है। पराविद्या को प्रदान करने वाला है। उस परमपिता परमात्मा की महती में सदैव रत रहे और यागां रम्ब्रहेः जो मानो यागी होता है, वह जागरुक रहता है। अरे, वही तो प्राणी महान बनता है।

ये है बेटा! आज का वाक्, समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करुँगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि ''यागां ब्रह्मणम्'' मानो देखो, वह याग सम्पन्न हो गया और वे याग अग्नि की धाराओं पर, स्वाहा उच्चारण करते हुए बेटा! द्यौ लोक को गमन कर रहा था। यज्ञशाला का जितना आकार है। जितने आकार पर मानो होता, उद्‌गाता, अध्वर्यु गण विद्यमान है मानो देखो, सभी उसी एक रथ के रथी है। जो रथ यज्ञशाला का बनकर के द्यौ लोक में प्रवेश करता है। यह सार्वभौम देखो, विज्ञान सतमयी माना गया है। जिसके ऊपर ऋषि मुनि परम्परागतों से अनुसंधान करते रहे है, अन्वेषण करते रहे है। ये है आज का हमारा वाक्, अब समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करुँगा अब वेदों का पठन–पाठन। **ओ३म् मनः आभ्यं देवं रथाः वायुगतं मानः ओ३म् देवं बृवरुणा रथं मानं त्वाः ओ३म् यशु गायन्त्वा मां यज्ञनं मनुः वायाः। अच्छा भगवन्, शान्ति।**

दिनांक–03–03–1988 ग्रां – लहौयरुत्रा, बागपत